Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

जन ज्ञान

(हिन्दी मासिक)

दिल्ली और मेरठ के
दंगों के बारे में
विशेष लेख
पृष्ठ ४८ पर देखें

(१६ जुलाई १९८७ से १५ अगस्त १९८७ तक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादक की ओर से पत्र

प्रिय बन्धु, सप्रेम नमस्ते।

हमने अब तक जो कुछ किया है, उसकी जानकारी जनज्ञान के माध्यम से आपको मिलती रही है। विदेशी षड्यन्त्रकारी और उनके भारतीय एजेन्ट नहीं चाहते कि हमारा यह अभियान सफलता के मार्ग पर आगे बढ़े। उनका पूरा जोर हमारे मार्ग में रुकावटें खड़ी करने की ओर लगा है। इसके कारण ही आज हमें चालीस से अधिक मुकद्दमे भुगतने पड़ रहे हैं। विरोधियों का असली उद्देश्य है हमारे अभियान को—हमारे मिशन को—सदा के लिए बन्द कर देना। हम इन रुकावटों पर विजय पाने के लिए कृतसंकल्प हैं और इसके लिए हम यथाशक्ति सब कुछ कर रहे हैं। प्रश्न यह है कि इस विकट स्थिति में आपका क्या कर्तव्य है? क्या आप हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहेंगे।

अपनी आवाज को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जन-ज्ञान की प्रसार-संख्या बढ़ाना आवश्यक है। यदि जनज्ञान का प्रत्येक साधनसम्पन्न पाठक संकल्प कर ले कि वह प्रतिमास जनज्ञान की दस प्रतियां अपने मित्रों, परिचितों, सम्बन्धियों, पुस्तकालयों आदि तक पहुंचायेगा, तो जनज्ञान द्वारा आपकी अपनी आवाज लाखों लोगों तक पहुंच सकती है।

हम जनज्ञान को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। जनज्ञान आपके ही लिए प्रकाशित होता है। एक तो आप इसे अपने विचार प्रकट करने के लिए अपना मंच समझें और दूसरे हमें लिखते रहा करें कि आप इसमें किन-किन विषयों पर पाठ्य सामग्री प्रकाशित होती देखना चाहेंगे। हमारी हार्दिक इच्छा है कि जनज्ञान पूरे परिवार के लिए उपयोगी पत्रिका बने। आध्यात्मिक और धार्मिक विषयों पर तो रचनायें प्रकाशित हों ही, उन अन्य विषयों पर भी सामग्री प्रकाशित हो, जिनमें पूरे परिवार की रुचि हो।

आप जनज्ञान के प्रसार और धर्म प्रचार की गति तेज करने के लिए यथासम्भव और यथाशक्ति जो कुछ भी कर सकते हों, उसे आज ही कर डालें तो हमारा अभियान सफल होने में सहायता मिलेगी।

सहयोग की आशा में आपकी बहन

राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए संघर्ष करो ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—राकेशरानी
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली—११००३६
फोन नं. : ७४५३२५
कार्यालय—२२८६, आर्यसमाज रोड, नई दिल्ली-११०००५
फोन—५७२४७४१

वार्षिक मूल्य : ३५ रुपये
विदेश में : विमान से ४८ पौंड, ६० डालर
समुद्री डाक से ७ पौंड, १२ डालर
आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.
यह अंक : साढ़े तीन रुपये
श्रावण संवत् २०४४
जुलाई १९८७, वर्ष २०, अंक ३

वेदवाणी

ईश्वर क्या है ?

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्यो-रात्मानं धीरमजरं युवानम् ।।

अथर्व० १०,८,४४

ईश्वर (अकामः) कामना-रहित, (धीरः) सर्वज्ञ, (अमृतः) अमृतस्वरूप (स्वयंभूः) अर्थात् आनन्द-स्वरूप है। (कुतः चन) कहीं से भी (ऊनः) त्रुटि वाला (न) नहीं है । (तम् एव) उसी ही (आत्मानम्) सर्व-व्यापक (धीरम्) बुद्धिमान (अजरम्) क्षयरहित (युवानम्) सदा युवा, परमेश्वर को (विद्वान) जानने वाला पुरुष (मृत्योः न बिभाय) मृत्यु से भयभीत नहीं होता ।

"रसो वै सः रसं ह्येव लब्ध्वानन्दी भवति ।

(तै० उप० ब्रह्मवल्ली ७' ६,)

वह रसरूप है उसे पाकर मनुष्य परम आनन्द से सम्पन्न हो जाता है ।

परम प्रभु को पाए बिना मनुष्य न तो जन्म-मरण के चक्र से छूटता है और न ही मोक्ष को पा सकता है । □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय 3

महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी 8

सामयिक विचार—सत्यपाल शास्त्री 10

आप ही के पत्र 13

विचार प्रवाह: पंडिता राकेशरानी की लेखनी से 17

21वीं सदी और वर्तमान भारत—डा. प्रशान्त वेदालंकार 3

संस्कृत को देशनिकाला—प्रो. धर्मवीर 28

अहिंसा और भारत—सुरेन्द्र कुमार मिश्र 33

कर्त्तव्यनिष्ठ वीरांगना वीरमती (ऐतिहासिक कहानी)
—डा. रतनलाल रतनेश 38

अपनी पाचन क्रिया ठीक रखिये—एक डाक्टर की लेखनी से 44

गीता का कर्मयोग — रामनारायण महतो 47

विद्रोह को सांप्रदायिक दंगे कहना विनाशकारी होगा 49
(दिल्ली और मेरठ के दंगे) —शिवकुमार गोयल

सब भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जायें—डा. इन्द्रसेन जेतली 55

महाभारत ऐतिहासिक ग्रन्थ है—योगेन्द्र 58

उग्रवाद के आतंकों से खालिस्तान नहीं बन सकता (कविता) 61
—डा. जगदीश नारायणसिंह 'निर्भीक'

नोबेल रा अद्भुत दान (बालजगत्)—सुकुमार राय 62

अंग्रेजी की जगह हिन्दी को प्रतिष्ठापित किया जाये—नवीन खन्ना 65

श्री किशनचन्द्र सेठ का प्रधानमन्त्री के नाम खुला पत्र 68

साम्प्रदायिक दंगे और बुखारी का विषवमन—अशोक गौड़ 74

पाकिस्तान अमरीका का हरावल दस्ता बन चुका है
—जमनादास अख़्तर 76

क्या-क्या गुल खिलाये रायल्टी ने—दुर्गाशंकर त्रिवेदी 80

दूरदर्शन की अदूरदर्शिता—यशपाल जैन 83

यज्ञ का व्यापक स्वरूप—रामस्वरूप देली सिद्धान्तशास्त्री 87

लोकमान्य तिलक: एक कालजयी राष्ट्र पुरुष 90
—डा. मृत्युंजय उपाध्याय

सांप्रदायिकता: कारण और निवारण—सूर्यकान्त बाली 95

(आवश्यक नहीं कि रचनाओं में अभिव्यक्त सब विचारों से सम्पादक सहमत ही हो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

वयं राष्ट्रे जागृयाम

सर्वत्र भारत राष्ट्र को सुदृढ़ और शक्तिशाली बनाने की चर्चा है। परन्तु विघटनकारी तत्वों की गतिविधियों के फलस्वरूप जो परिस्थितियां पैदा होती जा रही हैं, उनके कारण प्रत्येक राष्ट्रभक्त का चिन्तित होना भी स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न स्वतः महत्वपूर्ण है कि इस देवधरा में ऐसा कौन-सा बीज बोया जाये, जिससे संकीर्णता, क्षेत्रीयता और साम्प्रदायिकता के उन कंटीले झाड़ों का उन्मूलन होकर एक सघन वृक्ष उगे, जिसकी सुशीतल छाया में विभिन्न आपदाओं के ताप-संताप से दग्ध-सा होता जा रहा यह राष्ट्र स्वयं को स्वस्थ होता अनुभव कर सके।

शान्ति, समृद्धि और शक्ति प्रदाता उस वटवृक्ष के विकसित होने के लिए कौन-सा जल और कौन-सी खाद अपेक्षित है, यह प्रश्न भी उठना स्वाभाविक है।

इन प्रश्नों के उत्तर के लिए अनिवार्य आवश्यकता है कि ऐसी मेढ़ लगाई जाए, जिससे छह ऋतुओं के शीत-ताप के प्राकृतिक प्रकोप और झंझावातों को झेलकर भी राष्ट्र वृक्ष का भलीभांति विकास होता रहे। इस प्रश्न का उत्तर एक ही है कि दुर्बल और विवशता से ग्रस्त जन सुदृढ़ और सबल भारत का निर्माण नहीं कर सकेंगे। अतः इस हेतु सबल नागरिकों का विकास अपेक्षित है। प्रेरणा का जागरण तभी संभव है जब व्यक्ति के समक्ष कोई उदात्त लक्ष्य और आदर्श हो। इस लक्ष्य और आदर्श को प्रस्तुत करने हेतु जीवन को यज्ञमय बनाना होगा। हमारे वैदिक ऋषि-मनीषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व अपने जीवन से यज्ञमय जीवन के लक्ष्य को साकार किया था। उनका यह उद्घोष आज भी हमारे लिए स्पष्ट दिशा निर्देश दे रहा है "इदं न मम"—यह मेरा नहीं। मेरा नहीं अर्थात् सब कुछ तेरा ही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यही भावना आदर्श व्यक्ति के निर्माण का लक्ष्य साकार कर सकती है।

सभी जानते हैं कि शव-शृंगार से शरीर स्पन्दित नहीं हो पाता। शरीर स्पन्दन हेतु तो प्राण तत्व आवश्यक है और प्राण शक्ति के संचरण हेतु साधना अपेक्षित है। राष्ट्ररूपी शरीर को स्वस्थ और शक्तिमान् बनाने हेतु जीवन्त नागरिकों की जीवन शक्ति ही सबल आधार बन सकती है। और इस जीवन शक्ति के संचार के लिए राष्ट्र के प्रति अविचल अटूट निष्ठा और भक्ति एवं समर्पण भावना अपेक्षित है। भारत के मजबूत तन के सृजन हेतु जन-जन के मन को जोड़ना होगा। और मन को जोड़ने के साधन रोटी-कपड़ा-मकान नहीं हो सकते। ये तीनों जीवन को चलाने के लिए आवश्यक हो सकते हैं, परन्तु केवल इन्हीं में तो जीवन नहीं है। अन्न को प्राणमय तो अवश्य बताया गया है, परन्तु यदि प्राण ही दुर्बल हों तो अन्न भी उसे शक्ति प्रदान नहीं कर पाता। ऐसे क्षण भी आते हैं, जब व्यक्ति को अन्न का त्याग भी करना पड़ जाता है। यह भी सच है कि भौतिक उपलब्धियां और सम्पन्नता राष्ट्र को वैभव सम्पन्न बनाने हेतु आवश्यक हैं, परन्तु यदि राष्ट्र ही दुर्बल हो जाता है तो भौतिक सम्पन्नता (स्वर्ण भंडार भी) विनाश को ही निमन्त्रण देती है। मिस्र, यूनान, रोम आदि ही नहीं अपितु इस महान् आर्य भूमि की अतीत के अनेक घटनाएं इस तथ्य की साक्षी हैं। जब हम आज की स्थिति पर विचार करते हैं तो हमें यह सत्य भी नजर आता है कि भारत में बुद्धिमान, धैर्यवान, विचारवान और ज्ञानवान् व्यक्तियों की आज भी कमी नहीं। परन्तु देश का समग्र चित्र तो अलग-सा ही है अतः हमें सोचना होगा कि ऐसा क्यों हो रहा है ?

क्या यह सत्य है कि "भारत जाग रहा है ?" यह जागृति का शंखनाद है या आर्तनाद है। क्योंकि दोनों में बहुत अन्तर है।

कई बार तो मन में यह विचार भी आता है कि देश जितना जाग रहा है उससे कहीं अधिक टूट रहा है या कह सकते हैं कि उसे तोड़ा जा रहा है। कहीं क्षेत्रीय अभिमान तोड़ता-सा प्रतीत होता है, तो कहीं जातीय विद्वेष और भाषाई उन्माद, कहीं धनी-निर्धन के बीच की खाई राष्ट्र जीवन में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विष घोलती लगती है। कहीं अनेक लोग अपनी नादानी से इस पाप के भागी बन रहे हैं, तो विदेशी शक्तियां भी अपनी चालाकी से राष्ट्र जीवन को तोड़ने में संलग्न हैं। समाज सवर्ण असवर्ण, छूत-अछूत के बीच टूटता-सा लगता है, राजनीति शासन को समाज से तोड़ती हुई लगती है, तो बुद्धि-जीवियों और श्रमजीवियों में पारस्परिक टकराव नजर आता है। ज्ञान और कर्म के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं। समाज और पारस्परिक सम्बन्धों में भी टूटन दृष्टिगोचर हो रही।

इस स्थिति का हम निष्पक्ष भाव से विश्लेषण करें तो एक ही उत्तर मिलता है। भौतिक समृद्धि की प्रगति की होड़ में हम एक-दूसरे को पछाड़ने में लगे हैं, परन्तु इस देश के वासी यह भूल रहे हैं कि हमारा अतीत क्या था, हम क्या हो गए हैं और हमारा भविष्य क्या है? हमें देश में इस आत्मचिन्तन की प्रवृत्ति को जगाना होगा। यही भारत को सबल और महान् बनाने की कुंजी है। हमें इस तथ्य को हृदयंगम करना होगा कि रोजी-रोटी, धन, वैभव, समृद्धि, सत्ता तो राष्ट्र की रक्षा के साधन हैं, साध्य नहीं। हमें अपना वह स्वर्णिम अतीत स्मरण करना होगा, जो इस बात की साक्षी प्रस्तुत करता है कि धन और राज्य तो इस देश के अनेक कर्णधार कई बार भिक्षा में प्रदान कर दिया करते थे। हमें सोचना होगा कि जो वस्तु यह महान् राष्ट्र कभी भिक्षा में दे दिया करता था, क्या वह चिर शक्ति प्रदायिनी हो सकती है? वस्तुतः जिस स्रोत से प्राप्त ऊर्जा इस भारत राष्ट्र को वास्तविक अर्थों में सुदृढ़ और सबल बना सकती है, वह न राजनीति में है और न ही सरकार में। वह शक्ति तो सामाजिक चेतना में निहित है, भारत राष्ट्र के प्रति अनन्य निष्ठा और राष्ट्रहित की साधना में है। वह ऊर्जा उस सम्पूर्ण समर्पण की भावना में निहित है, जो समाज, देश और राष्ट्र को परमात्मा की भांति पूजने में सुख और सन्तोष की अनुभूति कराती है।

हमें अपने पूर्वजों की यशोगाथाओं को स्मरण करना होगा। अपने पूर्वजों के पराक्रम और अपनी परम्पराओं को पहचानना होगा। सुदृढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की संरचना हेतु चाहिए गम्भीर साधना, पावन निष्कलंक चरित्र, स्वराष्ट्र के प्रति असंदिग्ध भक्ति भावना। इसी आधार पर प्राप्त भौतिक वैभव और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ भारत राष्ट्र की रक्षा में वास्तविक अर्थों में सहयोगी हो सकेंगी। वेद का पावन संदेश हमें हृदयंगम करना होगा—"वयं राष्ट्रे जागृयाम"। इसी मूलमन्त्र को स्मरण रख सीमाओं पर सन्नाद्ध देश के कण-कण की रक्षार्थ तैनात सजग प्रहरी सतत जागृति की भावनाओं से ओत-प्रोत रहेंगे और उन्हें सन्नद्ध करने वाले होंगे शासक और इन शासकों को भी प्रमाद से बचाने के लिए प्रतिक्षण सजग रहेगा भारत के जन-गण। तभी वास्तविक अर्थों में यह महान् राष्ट्र सबल, सुदृढ और समृद्ध बनेगा। हम जनज्ञान के माध्यम से इसी दायित्व को निभा रहे हैं। आप भी हमारे इस महान् यज्ञ में अपने सहयोग की समिधा प्रदान करें, यही अनुरोध है।

साम्प्रदायिक दंगे : सत्य को परखिये

सात वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद नगर में सांप्रदायिक उपद्रवों की ज्वाला भड़की थी। मुरादाबाद के समीप मेरठ में भी पुलिस और पी. ए. सी. के विरुद्ध आरोपों के अम्बार लगे हैं।

इन आरोपों के घटाटोप में वह रिपोर्ट और भी अधिक महत्वपूर्ण बन गई है, जो मुरादाबाद के सांप्रदायिक दंगों की जांच करने वाले सक्सेना आयोग ने प्रस्तुत की है।

न्यायमूर्ति श्री सक्सेना ने मुरादाबाद से हुए सांप्रदायिक उपद्रवों के लिए कतिपय राजनैतिक नेताओं को दोषी ठहराया है और यह निष्कर्ष भी प्रस्तुत किया है कि मुस्लिम लीग के चंद नेताओं ने ईद की नमाज के बाद ईद-गाह में भगदड़ की थी, जिसके फलस्वरूप नगर में सांप्रदायिक हिंसा के दृश्य दिखाई दिए। पुलिस ने गोलियां चलाई। आयोग ने पुलिस और पी. ए. सी. को निर्दोष व्यक्तियों पर ज्यादातिया करने के आरोप से मुक्त घोषित कर दिया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाचारपत्रों में प्रकाशित विवरण के अनुसार न्यायमूर्ति श्री सक्सेना ने अपनी रिपोर्ट में कोई दो सौ व्यक्तियों के नाम देते हुए उनके विरुद्ध कार्रवाई करने की सिफारिश की है।

इस रिपोर्ट की एक महत्वपूर्ण पहलू पी.ए.सी. के आचरण से संबद्ध है। मुरादाबाद और अलीगढ़ के दगों के समय भी पी.ए.सी. के विरुद्ध कतिपय तत्वों ने उन्मादग्रस्त होकर जुल्म ढालने का आरोप लगाया था, जैसा अब मेरठ के दंगों में उसकी भूमिका को लेकर भी कुछ नेताओं ने लगाया है। इस आरोप में सत्य का अंश कितना है यह कह देना तो कठिन है। परन्तु मलियाना ग्राम में जिन एक सौ ग्यारह लोगों के लापता होने का शोर चतुर्दिक कुछ तत्वों ने उभारा था, उनमें से 85 के सुरक्षित वापस लौट आने से इस मिथ्या प्रचार का भी भंडा चौराहे पर फूट गया है कि वहां पी.ए;सी. ने सैकड़ों लोगों को गोलियों से भून दिया था।

इस बारे में तो दो मत नहीं कि ज्यादतियां करने वाले जवानों एवं अधिकारियों को दंडित किया जाना चाहिए। परन्दु जोखिम भरी स्थिति में दंगों की अग्नि का शमन करने वाले बल का मनोबल गिराया गया। यह भी एक विचित्र बात है कि ज्यादतियों का दोष इन बलों के माथे मढ़ने में पहल वही तत्व करते हैं, जो स्वयं उपद्रवों की आग को भड़काने में दोषी होते हैं। पी.ए.सी. के समग्र स्वरूप ओर चरित्र की भर्त्सना कर उसे भंग ही कर देने की मांग करने वाले तत्वों का पक्ष मुरादाबाद एवं अलीगढ़ के दंगों की जांच के प्रयास में सर्वथा अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है।

न्यायमूर्ति सक्सेना की रिपोर्ट के परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न भी स्वतः ही उभरता है कि दंगाइयों और दंगे की परिस्थितियां पैदा करने वाले तत्वों के विरुद्ध कार्रवाई करने में विलम्ब क्यों हुआ है? हम चाहते हैं कि राष्ट्र को विघटन के कगार पर लाने के लिए घिनौना खेल खेलने वालों के नापाक इरादों को खाक में मिलाने के लिए कठोरतम कार्रवाई की जाए। जांच आयोगों की रिपोर्ट पर अमल कर अपराधियों को दंडित किये बिना उनके हौसले पस्त नहीं होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

साम्प्रदायिकता समाप्त करो

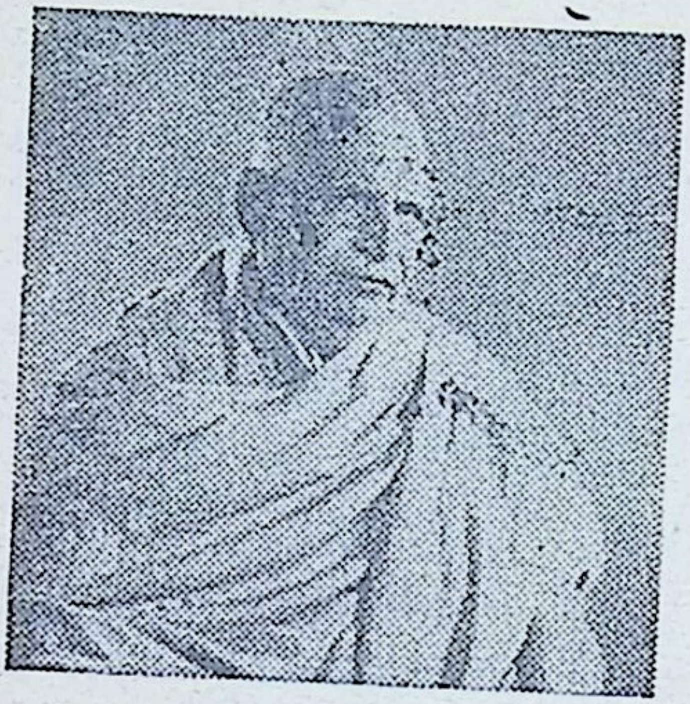

भारत सरकार के आदेशानुसार सांप्रदायिकता फैलाना दंडनीय अपराध है। किन्तु विचित्र विडम्बना यह है कि इस अपराध के लिए दोषी उन्हें घोषित किया जाता है, जो वस्तुतः दोषी नहीं होते। समस्या पर विचार के लिए आवश्यक है कि प्रथम यह निश्चय किया जाये कि सांप्रदायिकता क्या है ?

मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव करना, किसी को भी छोटा-बड़ा, नीच-ऊंच मानना, पृथक् विचार होने से परस्पर घृणा-द्वेष फैलाना, जाति भेद उत्पन्न करना, और एक मनुष्य जाति को वर्गों में विभक्त करने का प्रयत्न करना सांप्रदायिकता है।

गहन दृष्टि से चिंतन करें तो एक परमात्मा की उपासना के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा करना, उन्हें अवतार-पैगम्बर मानकर अलगाव की स्थिति लाना अपने को पवित्र और अन्यों को अपवित्र मानना संप्रदायबाद के आधार हैं।

न्याय की कसौटी पर कसें तो आज जिन वर्गों का विरोध करना सांप्रदायिकता माना जाता है, वस्तुतः वे वर्ग ही सांप्रदायिकता का विष फ़ैलाते है। जो अपनी बात न माने उन्हें मार डालने की आज्ञा देने वाले मत स्वयं में विषघट हैं।

शासन व विचारकों का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि निष्पक्ष और गंभीर दृष्टि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से विचार कर संप्रदायवाद को समाप्त करने का दिशा निर्देश प्रदान करें। किसी वर्गविशेष को सन्तुष्ट करने की दृष्टि से नहीं, अपितु सांप्रदायिकता समाप्त करने की दृष्टि से सम्पूर्ण सन्दर्भ पर सांगोपांग विचार की आवश्यकता है।

हम सभी सस्ती लोकप्रियता अर्जित करने के स्थान पर यदि सांप्रदायिकता के समूल उन्मूलन के लिए कार्य करें तो यह देश, धर्म और मानवता के लिए सही अर्थों में कल्याणकारी होगा।

सांप्रदायिकता मिटनी चाहिए, उसका प्रसार दण्डनीय अपराध होना चाहिए, यह हमारा मत है। किन्तु इस प्रश्न का उत्तर किसके पास है कि जो वर्ग अपने मत-ग्रन्थों में भरे जहर को फैलाना ही अपना लक्ष्य मानते हैं, जो अपने विचार जबरदस्ती दूसरों पर थोपना चाहते हैं, अपने विचार स्वीकार न करने पर मार डालने की विचारधारा में विश्वास रखते हैं, उन मत-वादों का क्या होगा ? उन्हें समाप्त करने का किसमें साहस है ?

सिर पर कफन बांध सांप्रदायिकता को समाप्त करने के लिए जिस सर्वतोमुखी क्रांति की आवश्यकता है, उसके लिए जीवन का बलिदान कौन करेगा ? हमारा मन तो चाहता है एक जाति, एक विचार, एक परिवार बने यह संसार।

राज्य बदलते रहेंगे, पार्टियां बनती-बिगड़ती रहेंगी, किन्तु सांप्रदायिकता का विषघट जब तक नहीं फूटेगा, तब तक मनुष्य उलझा रहेगा, बिगड़ा रहेगा, जलता रहेगा।

सोचिए और निर्णय कीजिये। नई कल्पना से नई साधना का काम करने की तैयारी हम कर रहे हैं। किन्तु मनुष्य का साहस टूट रहा है, कोई इस पवित्र यज्ञ में आहुति देने को तत्पर नहीं।

हम एकाकी यज्ञ आरभ किये बैठे हैं—इस विश्वास पर कि कभी न कभी इस जहर को मिटाने का संकल्प लेकर बलिदानी वीर निकलेंगे और हमारी आशा पूरी होगी।

(ज्येष्ठ संवत् 2034 के जनज्ञान से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

—सत्यपाल शास्त्री

हरियाणा के चुनाव परिणाम

हरियाणा के मतदाताओं ने राजीव गान्धी, उनकी सरकार और उनकी राजनीति को बहुमत से अस्वीकृत कर दिया है। राज्य विधानसभा की ८७ सीटों का चुनाव हुआ, जिनमें से कांग्रेस को केवल पांच सीटों पर सफलता मिली। कुल मिलाकर सत्रह मन्त्री चुनाव में खड़े हुए थे, जिनमें से १६ पराजित हो गये। इनमें मुख्यमन्त्री चौ. बंसीलाल भी शामिल हैं। जनता पार्टी और लोकदल (अजीत सिंह) को एक भी सीट नहीं मिली।

सन् १९८२ के चुनाव में भी चौधरी देवीलाल के साथी विजयी रहे थे लेकिन चौधरी भजनलाल की चालाकियों के फलस्वरूप वे सत्ता से वंचित रहे। चौधरी देवीलाल पिछले दो वर्ष से लगातार हरियाणा के हितों के लिए संघर्ष कर रहे थे। फलस्वरूप एक ओर जनता के मन में उनके लिए सहानुभूति की भावना पैदा हुई और दूसरी ओर वे जनता से एकाकार हो गये। फलस्वरूप लोकदल (ब) और भारतीय जनता पार्टी के गठबन्धन को निर्णायक बहुमत मिला।

शुरू में तो हरियाणा संघर्ष समिति स्थानीय मामलों पर जोर देती रही और इस बात पर जोर देती रही कि पानी और क्षेत्र के बारे में पंजाब समझौते में हरियाणा के साथ न्याय किया जाये, लेकिन चुनाव अभियान के दौरान केन्द्र में सत्तारूढ़ राजीव सरकार की अयोग्यता और भ्रष्टाचार पर भी प्रबल प्रहार किये गये। इस बार चौधरी बंसीलाल की अधिक चर्चा नहीं हुई, यद्यपि उन्होंने आपातकालीन दौर में ज्यादतियों के लिए कुख्याति प्राप्त की थी। इस बार तो मतदाताओं ने यही सोचकर उन्हें ठुकराया कि वे केन्द्र के प्रतिनिधि हैं।

हरियाणा दिल्ली के समीप है, हिन्दी भाषी क्षेत्र में है, प्रासंगिक विषय राजीव गान्धी और उनकी सरकार थी और क्योंकि पंजाब, असम, मिजोरम,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पश्चिम बंगाल और केरल के बाद हरियाणा छठा राज्य है, जहां कांग्रेस को एक के बाद एक करके असफलता का मुंह देखना पड़ता है, इस चुनाव परिणाम का राष्ट्रीय राजनीति पर असर पड़ेगा। राजीव गान्धी ने केरल और पश्चिम बंगाल में धुंआंधार दौरे किये और हरियाणा में केवल दो दिन चुनाव प्रचार किया, लेकिन सफलता कहीं भी न मिली। पंजाब में राजीव गांधी ने पंजाब समझौते की तारीफ के पुल बांधे और हरियाणा में उसका गुनगुना समर्थन किया, लेकिन दोनों जगह उन्हें हार का सामना पड़ा। इसका मतलब यह हुआ कि जनता को राजीव गांधी की बातों पर विश्वास नहीं रहा। जनता राजीव गांधी की जगह किसी अन्य को प्रधान मंत्री के पद पर आसीन देखना चाहती है।

जनता का यह विचार बन गया है कि राजीव गांधी को आम लोगों की गरिमा और सम्मान की परवाह नहीं। जनता को उनकी नैतिक निष्ठाओं पर भी सन्देह है। जनता के विचार में राजीव की कोई धार्मिक निष्ठा नहीं। उन्हें भारत की समृद्ध संस्कृति से कोई लगाव नहीं।

हरियाणा का यह चुनाव राजीव गांधी के शासन पर जनमत संग्रह था। इसमें वे हार गये हैं। उन्हें शासन करने का राजनैतिक अधिकार अवश्य है, लेकिन नैतिक अधिकार नहीं।

एक बात और। हरियाणा एक अर्थ में हिन्दू पंजाब है। सिखबहुल पंजाब में पिछले छह वर्ष से जो कुछ हो रहा है, एक न एक दिन हरियाणा पर उसकी छाया पड़नी ही थी। हरियाणा ने पंजाब की बुलेट (गोली) का जवाब बैलट (मतदान) से दिया है।

दिल्ली पर आतंकवाद की छाया और पुलिस

हरियाणा के चुनाव के बाद राजधानी में जिस प्रसंग की सबसे अधिक चर्चा है, वह है १३ जून की रात्रि की घटना, जिसमें १४ व्यक्ति मारे गये और लगभग २० घायल हुए। वैसे तो दिल्लीवासी पुलिस की अकर्मण्यता के अभ्यस्त हो चुके हैं, लेकिन इस घटना से उनमें दहशत व्याप्त हो गई है। आतंकवादियों ने आध घंटे के अन्दर चार स्थानों पर गोलियां चलाईं,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन पुलिस ने इस दौरान एक बार भी इनका सामना न किया। पुलिस को चौकन्ना कर दिया गया था, फिर भी आतंकवादी अन्धेरी गलियों में नहीं, अपितु बिजली से प्रकाशित सड़कों पर निर्दोष लोगों को गोलियों से भूनते रहे। यह कहना पर्याप्त नहीं कि दिल्ली पुलिस असफल रही; ऐसा लगा कि पुलिस तसेवीर में थी ही नहीं।

यह सब तब हो रहा है, जब दिल्ली पुलिस दावा करती है कि उसने अपनी गतिविधियों का विस्तार किया है, अधिकतर संख्या में मारुति जिप्सी जीपें खरीदी हैं, उसके पास आधुनिकतम उपकरण हैं और वह अनेक बार आपरेशन ब्लैकरोज का अभ्यास कर चुकी है। सच तो यह है कि लोगों को इस आपरेशन ब्लैकरोज के कारण अनावश्यक तौर पर असुविधा का सामना करना पड़ता है, क्योंकि इस अभ्यास के दौरान सारे शहर में पुलिस चौकियां उभर आती हैं और पूरी चैकिंग के बाद ही गाड़ियों को आगे जाने दिया जाता है।

लेकिन जब आतंकवादी हमला करते हैं, तब तक पुलिस कन्ट्रोल रूम बेसुध पड़ा मिलता है। घटना वाली रात के पौने ग्यारह से सवा ग्यारह बजे रात तक पुलिस कंट्रोल रूम को न जाने कितने लोगों ने टेलीफोन किया, लेकिन पुलिस जहां-तहां गोलियां बरसाने वालों को न पकड़ सकी। पुलिस अधिकारी स्वयं मानते हैं कि दिल्ली के कुल १६५ पुलिस कंट्रोल रूमों में से २५ दक्षिणी दिल्ली में हैं, फिर भी आवश्यकता पड़ने पर ये कुछ न कर पाये।

जब संकट काल में पुलिस का यह हाल है, तब सामान्य स्थितियों में क्या होता होगा, इसकी कल्पना सरलता से की जा सकती है।

ये पंक्तियाँ लिखी जा चुकी थीं, जब (२५ जून को) यह समाचार मिला कि उत्तरी और दक्षिणी दिल्ली में मोटर साइकिल और स्कूटर सवारों ने दो कारों पर गोलियाँ चलाईं। मतलब यह कि अब राजधानी भी आतंकवादियों की चपेट में है।

स्पष्ट हो गया है कि आतंकवाद की समाप्ति के लिए कड़े पग उठाना अनिवार्य है। समझौतावादी मनोवृत्ति से काम नहीं चलेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

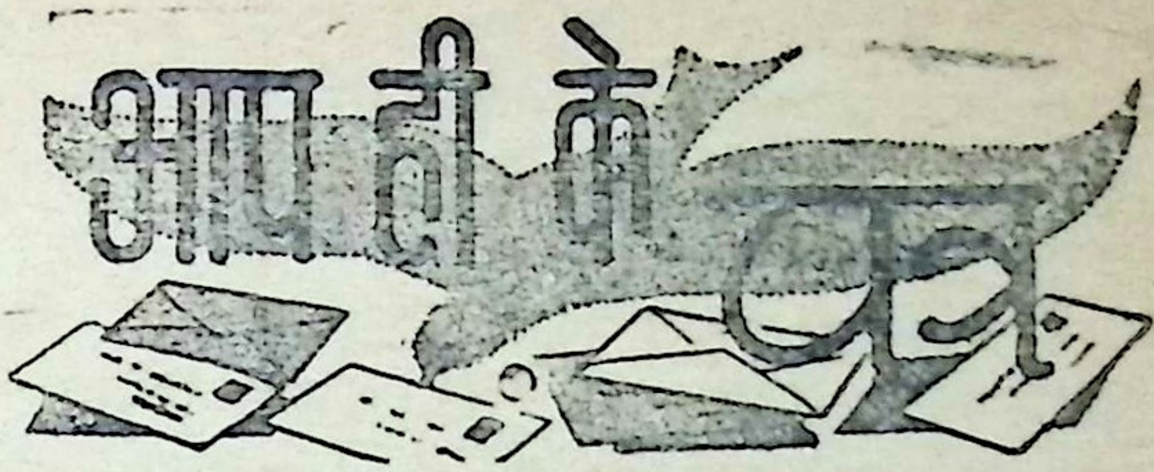

क्या सरकार सो रही है ?

महोदय,

सरकार की ओर से रक्षा का प्रबन्ध न होने से सहस्रों हिन्दू परिवार पंजाब के अपने घरों को छोड़कर दिल्ली और उत्तर प्रदेश में चले आए। अब मेरठ और दिल्ली में हिन्दुओं की सैकड़ों दुकानें फूंक दी गई हैं, जिनमें करोड़ों रुपये की सम्पत्ति लूटी तथा जलायी गई है। सरकार की ओर से इन आततायियों को समुचित दण्ड नहीं दिया जा रहा। हिन्दुओं के जानमाल की रक्षक सरकार उनकी रक्षा नहीं कर रही। आततायी अवैध शस्त्र लिये रहते हैं। हमें सरकार ने सर्वथा अशस्त्र कर दिया है, यह कहकर कि तुम्हारी जानमाल की रक्षा करेंगे। किन्तु सरकार ऐसा करने में असमर्थ रही है। हम पूछते हैं कि कश्मीर में हिन्दुओं के जो पचास मंदिर तोड़े गये, मन्दिरों की मूर्तियां खण्डित की गईं, उन पर मलमूत्र त्याग किया गया; ऐसे कितने मन्दिरों का जीर्णोद्धार किया गया है ? वहां की सरकार आततायियों को दण्ड देने और हिन्दुओं की रक्षा करने में असमर्थ सिद्ध हुई है।

पाकिस्तान अमेरिका से भयंकर आग्नेयास्त्र ले रहा है, केवल हिन्दुस्तान पर चढ़ाई के लिए। हजारों शिक्षित गुप्तचर हिन्दुस्तान में गृहयुद्ध कराने को भेजे गए हैं। इसे सरकार भी स्वीकार करती है। हमारे यहां का गुप्तचर विभाग उन गुप्तचरों का पता लगाकर उन्हें कठोर दण्ड दिलाने में असमर्थ रहा। इसे साम्प्रदायिक दंगा कहना सर्वथा भूल है। पाकिस्तान से आए तथा यहां के निवासी गुप्तचर वर्षों से इसकी तैयारी कर रहे हैं। स्थान-स्थान पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवैध अस्त्र-शस्त्र बनाकर वितरित किए जा रहे हैं। हमारी सरकार बेखबर है। उत्तर प्रदेश में पाकिस्तान समर्थक दंगा कराने की योजना बना रहे हैं। यहां के महत्वपूर्ण पदों पर मुसलमान नियुक्त हैं। उत्तर प्रदेश सरकार को गांव-गांव में पाकिस्तान समर्थकों की सख्ती के साथ तलाशी लेनी चाहिए। हिन्दुओं की नष्ट हुई सम्पत्ति की क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। चीन और अमेरिका पाकिस्तान का पूर्ण समर्थन करते हुए उसे अस्त्र-शस्त्र दे रहे हैं। यदि हमारी सरकार इसी प्रकार सोती रही तो यह देश सुरक्षित नहीं। इस लिए हमारे देश की विश्व विजयी सेना को सतर्क रहना चाहिए और पाकिस्तान को पहले की ही तरह सबक सिखाने को उद्यत रहना चाहिए।

संकीर्त्तन भवन, बसन्त गाँव, नई दिल्ली — प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

आपका प्रयास स्तुत्य और अनुकरणीय है

परमादरणीया बहन जी, सादर प्रणाम।

आप पर बार-बार मुकद्दमे दायर किये जाने के समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। मैं आप के साहस और धैर्य की प्रशंसा करता हूं। आप का जीवन हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के लिए समर्पित है। आपका प्रयास स्तुत्य और अनुकरणीय है। आप इस समय दुर्गावती और महारानी लक्ष्मीबाई की तरह अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं। एक न एक दिन सरकार को आप के समक्ष अवश्य नतमस्तक होना पड़ेगा। आप पर दायर सब मुकद्दमे वापस लेने पड़ेंगे। यह मेर दृढ़ विश्वास है। अब हिन्दू समाज जागृत हो रहा है।

मैं आप के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

सराहन बुशैहर (हिमाचल प्रदेश) — वासुदेव शर्मा

देश की जनता आप के साथ है

आदरणीय माता जी, सादर चरणस्पर्श।

हमने आप के संगठन द्वारा प्रकाशित साहित्य पढ़ा है। आज हमारे देश को इसी सन्देश की आवश्यकता है, जो इस साहित्य के माध्यम से दिया जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप देशवासियों को जगाने का काम रही हैं। इस पवित्र कार्य में परमात्मा आप के सहायक हैं। देश की जनता आप के साथ है।

खसहा (मुजफ्फरपुर) विश्वेश्वरनाथ अवस्थी आर्य

आप का प्रयास प्रशंसनीय है

आदरणीया बहन जी, प्रणाम।

जन-ज्ञान का मई अंक प्राप्त हुआ। भारत की एकता एवं अखण्डता की दिशा में आपका प्रयास प्रशसनीय है।

इस अंक में प्रकाशित "भारत देश महान्" कविता ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। कविताकार श्री रूपकिशोर गुप्त ने आदिकाल से वर्तमान काल तक की भारत की सम्पूर्ण गौरव-गरिमा का आर्कषक रूप में गुणगान किया है। इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। आशा है कि भविष्य में भी ऐसी कविताएं पढ़ने को मिलती रहेंगी।

मुरादाबाद राकेशकुमार शर्मा

अंग्रेजियत के विरुद्ध अभियान चलायें

आदरणीय सम्पादिका जी, सादर नमस्ते।

आपका जन-ज्ञान पढ़कर मैं स्वयं तो लाभान्वित हो ही रहा हूं, अन्यों को भी लाभान्वित कर रहा हूं। यदि इस पत्रिका को पढ़कर भी हिन्दुओं का हिन्दुत्व न जागा तो फिर कब जागेगा? मेरा आप से निवेदन है कि आप अंग्रेजियत के विरुद्ध अभियान चलायें। इस्लाम और ईसाइयत के अनुयायी हिन्दू समाज और हिन्दू संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। इस्लाम तलवार के जोर से फैला। ईसाइयों ने हमारे देश के इतिहास को विकृत रूप में प्रस्तुत किया। वे तो हमारे अस्तित्व को ही चुनौती दे रहे हैं और हमें बाहर से आया हुआ बता रहे हैं।

दानापुर (पटना) महाराणा प्रताप सिंह

(अंग्रेजियत के विरुद्ध हमारा अभियान चल रहा है। इस अंक में भी आप "अंग्रेज चले गये, अंग्रेजियत से कब छुटकारा मिलेगा?" शीर्षक से एक लेख पढ़ेंगे।—सम्पादक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा एम्बुलेंस की व्यवस्था

बम्बई। १३ जून को बम्बई के महापौर डा. रमेश प्रभु ने आर्यसमाज सान्ताक्रुज की नवीन रुग्णवाहिका का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर बम्बई के समस्त आर्यसमाजों के प्रधानों एवं विशिष्ट आर्य बन्धुओं द्वारा श्री रमेश प्रभु का बम्बई महानगर के महापौर बनने पर पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया गया। वेद मन्त्रों के साथ सभा की कार्रवाई प्रारम्भ हुई। महापौर के परिचय के साथ आर्यसमाज की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से जन साधारण का परिचय कराया गया।

इस अवसर पर वेदवेदांग पुरस्कार विजेता पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड की प्रशंसा में अभिनन्दनपत्र भी पढ़ा गया।

महामंत्री कैप्टिन आर्य ने कहा कि देश को चारों ओर से दुश्मनों ने घेरा हुआ है। ये साम्प्रदायिक दंगे देश का विभाजन करने का सुनियोजित षडयंत्र हैं। हमें देश की एकता बनाये रखने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।

प्रो० वेदव्यास पुनः प्रादेशिक सभा के प्रधान

नई दिल्ली। यहां आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग में हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में प्रो. वेदव्यास सर्वसम्मति से पुनः सभा के प्रधान चुने गये। अधिवेशन में पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और अन्य प्रदेशों से आये लगभग ३०० प्रतिनिधि उपस्थित थे। उस दिन आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार का प्रवचन हुआ।

अधिवेशन में संसद् सदस्य श्री रामचन्द्र विकल, भूतपूर्व संसद् सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाशवती आर्या आदि अनेक विशिष्ट अतिथि पधारे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचार प्रवाह : पंडिता राकेशरानी की लेखनी से

अंग्रेज चले गए ; अंग्रेजियत से छुटकारा कब मिलेगा ?

यह कैसी विडम्बना है कि अंग्रेजों को भारत से गए 40 साल बीत चुके हैं, देश पूर्णतः स्वतंत्र है, अपनी सरकार है, किन्तु अंग्रेजियत का शिकंजा दिन-प्रतिदिन पहले से अधिक कसता चला जा रहा है। हमारे सामाजिक जीवन में अंग्रेजियत इस कदर बढ़ती जा रही है कि हमारा मूल राष्ट्रीय चरित्र ही समाप्त होता जा रहा है और देश का चित्र कुछ ऐसा बनता जा रहा है मानो हमारा कोई स्वतंत्र अस्तित्व था ही नहीं। हमारी भाषा, सभ्यता, संस्कृति, जीवन-व्यवहार, चिंतन का ढंग, वेश-भूषा, खानपान और दिनचर्या सब-कुछ पश्चिम की नकल बनती जा रही है। अन्धानुकरण की इस प्रवृत्ति में एक गहरा संकट छिपा है, जो धीरे-धीरे हमारी बची-खुची राष्ट्रीय पहचान को भी समाप्त किये दे रहा है। विश्व के मंच पर किसी देश की पहचान उसके उद्योग, व्यापार और कल-कारखानों अथवा समृद्धि से नहीं होती, उसकी विशिष्ट संस्कृति और जीवन शैली से होती है। यही विशिष्टता उसके चिरजीवन का आधार भी है। यदि यही समाप्त हो जाये तो फिर वह कठपुतलियों का देश ही बच रहता है। वह अपने अतीत से कट जाता है तो उसकी प्रेरणा के स्रोत भी सूख जाते हैं। आज हमारी यह व्यक्तित्वहीनता प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई दे रही है।

भाषा की परावलम्बिता

किसी भी स्वतंत्र देश की अपनी भाषा उसकी अस्मिता की सबसे पहली पहचान होती है। यह विडम्बना ही है कि आजादी से पूर्व हमारे नेताओं ने जिस हिन्दी को सर्वसम्मति से राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था, राजनैतिक कानूनों से आज उसका सर्वाधिक विरोध हो रहा है और विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ रहा है। आम बोलचाल में व्यक्ति एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाक्य शुद्ध हिन्दी में नहीं बोल सकता। एक वाक्य में कर्त्ता हिन्दी में होगा तो कारक या क्रिया अंग्रेजी में। दैनिक जीवन के कार्य भी लोग अपनी मातृ-भाषा और राष्ट्रभाषा में नहीं करते। विवाह, जन्मोत्सव आदि के निमंत्रण-पत्र वे लोग भी अंग्रेजी में छपवाना जरूरी समझते हैं, जिन्हें अंग्रेजी आती ही नहीं। बैंक, डाकघर आदि में धन निकालने या जमा करने की पर्चियां हिन्दी में भी दी जा सकती हैं पर वे भी अंग्रेजी में ही भरना फैशन माना जाता है। इतना ही नहीं, कम से कम व्यक्ति को अपने हस्ताक्षर तो अपनी ही भाषा में करने चाहिए लेकिन अधिकतर लोग हस्ताक्षर भी अंग्रेजी में करने में ही गर्व का अनुभव करते हैं।

रिश्ते-नातों में

किसी समाज के रिश्ते-नातों के पीछे एक लम्बी सांस्कृतिक परम्परा निहित होती है, इसलिए उनका अनुवाद नहीं हो सकता। रिश्ते-नातों के सम्बोधनसूचक शब्दों का अनुवाद करने से उनकी मूल भावना ही बदल जाती है और जब भावना ही बदल जायेगी तो संस्कारों को वहन करने वाली संस्कृति कहाँ बचेगी? उदाहरण के लिए अम्मा, चाचा और ऐसे ही अनेक रिश्तों के लिए हमारी संस्कृति में हिन्दी के अनेक शब्द हैं, जिनके द्वारा उनका अवबोध स्पष्ट हो जाता है किन्तु अंग्रेजी में एक ही शब्द है अंकल। कारण पश्चिम में रिश्तों का वैसा व्यापक स्वरूप ही नहीं रहा, जैसा भारत में है। यहाँ तो रिश्तों के माध्यम से सारे समुदाय को जोड़ने की कोशिश की जाती हैं, जबकि अंग्रेजी शब्दों के सम्बोधन से न केवल हमारी सांस्कृतिक संयोजकता कम होती है बल्कि रिश्तों की महानता घटती है। माता और पिता शब्दों के कहते ही श्रद्धा और आस्था का एक ज्वार उमड़ पड़ता है। मम्मी-डैडी शब्द के पीछे वह भाव कहाँ? इनसे बिगड़ कर बने ममी और डैडी शब्द तो अवशेषों का ही परिचय देते हैं।

हमारी युवा पीढ़ी तो अंग्रेजियत की दलदल में इतनी धंस चुकी है कि उसे इन पावन रिश्तों के सम्बोधन में ग्लानि अनुभव होती है। यही कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है कि किसी युवा को अपनी बहन, माता या पिता का किसी से परिचय कराना हो तो वह यह मेरी सिस्टर, मदर या फादर हैं, कहकर ही उनका परिचय कराना पसंद करता है।

अंग्रेजियत ने हमारी स्थिति को कई जगह तो बहुत ही हास्यास्पद बना दिया है जैसे किसी का नाम गौरव कुमार या स्वतंत्र कुमार जैसा भावपरक हो और वह इन्हें जी.के. या एस. के कहें तो क्या इनकी सार्थकता नष्ट नहीं हो जाती ? कैसी विडम्बना है कि जिन नगरों, महल्लों का नाम महापुरुषों के स्मरण के लिए और उनके द्वारा नई पीढ़ी को प्रेरणा देने के लिए रामकृष्ण-पुरम् और तात्या टोपे नगर रखा जाता, है उन्हें आर.के. पुरम और टी.टी. नगर कहकर हम उन्हें गौरवहीन बना देते हैं। भला इससे इन महापुरुषों के नाम पर नामकरण की सार्थकता ही क्या रही ?

वेश में भी अंग्रेज़ियत

भाषा, सम्बोधन और नामों में ही नहीं, परिधान में भी आज अंग्रेजियत हमारे जीवन का अंग बन गई है। भव्य भारतीय वेश के स्थान पर पैन्ट, बुशर्ट, व नैकटाई पहनाना गर्व का विषय समझा जाता है। आश्चंय तो यह है कि यज्ञोपबीत पहनने को रूढ़िवाद कहने वाले वैज्ञानिक मस्तिष्क के लोग नैकटाई लगाते समय भूल जाते हैं कि नैकटाई का क्रास एक ईसाई धार्मिक चिह्न है जिसे अंग्रेजों ने फैशन के रूप में स्वीकार कर लिया है। अब किसी रूढ़िबिरोधी विज्ञान और तर्क के आधार पर सोचने वाले गैर-ईसाई का इस धार्मिक चिह्न से क्या मतलब ? किन्तु विडम्बना यह है कि अंग्रेजियत का अनुकरण करते समय हमारी सारी वैज्ञानिकता और तर्कपूर्ण चिन्तन समाप्त हो जाता है।

चिन्तन में भी दासता

आश्चर्य यह है कि हमारा तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग अपने विचारों, तर्कों और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भी विदेशी इतिहास, महापुरुष और विदेशी साहित्य का उदाहरण देने में अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता समझता है। वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी समृद्ध भारतीय विरासत से विहीन रहकर अपने इस अज्ञान पर गर्व करता है। यह चिन्तन का बौनापन है। ज्ञान-विज्ञान और तत्व दर्शन की जो विरासत हमारे पास है उस पर तो हमारे बुद्धिजीवियों को गर्व करना चाहिए था।

जीवन व्यवहार में भी नकल

जीवन व्यवहार और संस्कारों में किसी देश की महान् संस्कृति छिपी होती है और यही संस्कृति सूत्र उसकी श्रेष्ठता के उपादानों को जोड़े रखते हैं। जैसे हमारी विवाह पद्धति में समझौता नहीं बल्कि मुक्ति के लिए स्त्री-पुरुष की सहयात्रा है। जन्मदिवस अवसान की ओर बढ़ने का प्रतीक नहीं बल्कि प्रगति-पथ की यात्रा के सूचक हैं। किन्तु हम अपने घरों में विवाह और जन्मदिवस भी अब अंग्रेजी पद्धति से ही मनाते हैं, जिनके अर्थबोध ही भिन्न हैं। जन्म-दिवस पर जन्म वर्षों की संख्या में मोमबत्तियां बुझाने का अर्थ है इतने वर्ष बीत गए, जबकि हमारे यहां जन्मदिवस पर यज्ञ और आशीर्वाद अर्थ है कि हम अपना प्रत्येक क्षण कर्त्तव्यों के प्रति समर्पित करते हुए जियें। चिन्तन में कितना अन्तर है ? लेकिन हम हैं कि अन्धानुकरण करके भी स्वयं को प्रगतिशील कहने का दम भरते हैं।

किसी भी सभ्यता-संस्कृति की अच्छी बातों को ग्रहण करने के हम विरोधी नहीं हैं। किन्तु अपनी श्रेष्ठ संस्कृति और सभ्यता का परित्याग करते हुए हर क्षेत्र में पश्चिम की तर्कविहीन और अवैज्ञानिक नकल करने के विनाशकारी परिणामों से चिंतित अवश्य हैं।

यदि एक सशक्त आन्दोलन द्वारा अंग्रेजियत के इस प्रवाह की गति को रोकने का प्रयास समय रहते न किया गया तो इसमें सन्देह नहीं कि हमारी संस्कृति इतिहास की विस्मृत कहानी रह जायेगी। फिर हम गर्व से नहीं कह सकेंगे कि "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।" हमारी हस्ती यानी अस्तित्व का रक्षा कवच हमारी संस्कृति ही रही है। अंग्रेजियत का प्रवाह इस कवच को अपने तेजाबी प्रभाव से धीरे-धीरे क्षार कर देगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुरक्षा बलों की निन्दा एक गहरा षड्यन्त्र है

हाल के साम्प्रदायिक दंगों में यह तथ्य जग-जाहिर हो चुका है कि मेरठ और दिल्ली के ये दंगे सुनियोजित षडयन्त्रों के परिणाम थे। सभी समाचारपत्रों ने खुले रूप से लिखा है कि मस्जिदों से बाकायदा लाउडस्पीकरों पर घोषणा करके सड़कों पर आकर फैसला करने का आह्वान किया गया। यह भी स्वीकार किया गया और लिखा गया कि भारी मात्रा में तेजाब से भरे ड्रम और शस्त्रास्त्र बरामद किये गये। समाचारपत्रों ने यह भी लिखा कि सामूहिक भीड़ ने जिस ढंग से हमले किये और विशाल शस्त्र भंडार जिस मात्रा में पकड़ा गया, वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह एक सुनियोजित विद्रोह की तैयारी थी। इस अवसर पर चुन-चुनकर बहुसंख्यक समाज के प्रतिष्ठानों और उद्योगों को आग लगाई गई और लोगों को जिन्दा आग में झोंक दिया गया।

पुलिस के सारे प्रयास इन हमलों को रोकने में विफल सिद्ध हुए क्योंकि दंगाइयों की दीर्घकालीन तैयारी और आक्रामकता के सम्मुख पुलिस असफल सिद्ध हो चुकी थी। बाद में जब पी.ए.सी. को बुलाया गया तो उस पर भी जनूनी हमले किये गए। इस सारी सच्चाई को स्वीकार करने के बाद यह कहा जा रहा है कि पी. ए. सी. ने बहुत जुल्म किया और निर्दोष लोगों की हत्याएं कीं। पी. ए. सी. के विरुद्ध तो इतना प्रचार किया जा रहा है लेकिन देश के विरुद्ध विद्रोह के मामले को उतना प्रचार नहीं दिया जा रहा।

यह मानने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती कि सरकारी मशीनरी के किसी अनुशासनहीन व्यवहार की जांच होनी चाहिए और तब उसका निर्णय किया जाना चाहिए, लेकिन जिस प्रकार पी. ए. सी. को पहले से ही अपराधी ठहराने का अभियान चलाया गया और देश के विरुद्ध विद्रोह की खबरों को पर्दे के पीछे दबाया गया, उससे कुछ भयावह षड्यंत्र उजागर होते हैं।

योजना कुछ इस तरह है कि कठमुल्लेपन से ग्रस्त कुछ राष्ट्रविरोधी तत्व व्यापक रणनीति के तहत देश को गृह युद्ध की ओर धकेलने की योजना बना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहे हैं। ये तत्व पहले अल्पसंख्यकों में असन्तोष भड़काते हैं, हथियार जमा करते हैं और फिर दंगे की आग भड़काते हैं । फिर साथ ही इसके बाद के परिणामों से भी अवगत रहते हैं कि विद्रोहियों का दमन करते समय जब कुछ विद्रोही और निर्दोष लोग मारे जायेंगे तो उसका क्या लाभ उठाना है। इनकी रणनीति यह रहती है कि दंगाई हमलावर जैसे ही मुकाबलों में मारे जायेंगे ये सुरक्षा बलों को बदनाम करने के लिए हर कीमत पर प्रचार की मुहिम चलायेंगे और दुनिया भर में उसका प्रचार कर अल्पसंख्यकों पर जुल्म होने की बात उठायेंगे। इस प्रकार अल्पसंख्यक बंधुओं के ये तथाकथित नेता उन्हें गुमराह कर उनकी लाशों पर राजनैतिक व्यापार करते हैं। फिर देश और दुनिया भर में सुरक्षा बलों के विरुद्ध प्रचार कर ये तत्व भारत सरकार पर दबाव डालेंगे कि दुनिया में अपनी धर्मनिरपेक्षता की छवि बरकरार रखना चाहते हो तो हमें इसकी कीमत दो और वह कीमत होती है फिर नये सिरे से पृथक्तावादी मांगों की एक लम्बी सूची, जैसे सुरक्षा बलों में भी अल्पसंख्यकों की पर्याप्त भरती आदि ताकि दूसरी बार सांप्रदायिक आग भड़काई जाए तो सुरक्षा बलों में सांप्रदायिक तनाव बढ़े और वह दंगाइयों से निपटने में असफल सिद्ध हो जाये। क्रमशः यही मांग सेना में सांप्रदायिक घुसपैठ तक ले जाकर गृहयुद्ध के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने की साजिश की जा रही है। दुर्भाग्य है कि सारा प्रचार तंत्र इस साजिश का शिकार हो जाता है।

दंगे न हों, और कोई निर्दोष न मारा जाये, इस बात से सब देशभक्त सहमत हैं—हम भी सहमत हैं, किन्तु राष्ट्रद्रोही तत्वों की राजनीति का शिकार होकर सुरक्षा बलों के विरुद्ध जहाद बोलने की नीति इन्हें पंगु बनाने की बहुत बड़ी साजिश है। जरूरत इस बात की है कि इस सारे षड्यंत्र की व्यापक जांच कराकर एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया जाए ताकि राष्ट्रद्रोही तत्वों की पूरी साजिश बेनकाब हो।

✶

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२१वीं सदी और वर्तमान भारत

—डा. प्रशान्त वेदालंकार

जब से श्री राजीव गांधी हमारे प्रधान मंत्री बने हैं, तब से 21वीं सदी की चर्चा बहुत जोर से है। श्री राजीव गांधी ने अपने वक्तव्यों से इस बात को प्रकट किया है कि वे देश को 21वीं सदी की ओर ले जाना चाहते हैं। 21वीं सदी की चर्चा करते समय हमारे देश को और हमें परिस्थितियों का दास मान लिया गया है—इस रूप में कि हम यूरोप के अन्ध प्रभाव से अपने को बचा नहीं पायेंगे। हम जैसा चाहें वैसा देश नहीं बना पायेंगे वरन् जैसा देश बनेगा उसके अनुसार हमें कार्य करने के लिए मजबूर होना होगा। 21वीं सदी की तैयारी के लिए श्री राजीव ने ऐसी शिक्षा नीति की चर्चा की, जिसमें विद्यार्थियों का प्रशिक्षण इस प्रकार से होगा, जो 21वीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इसी प्रसंग में उन्होंने कम्प्यूटर की विशेष रूप से चर्चा की और कहा कि भारत की तकनीक का विकास बहुत तेज गति से होना चाहिए। ऐसा होना चाहिए जो 21वीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

समस्याएं 16वीं सदी की

ऊपर से यही प्रतीत होता है कि कम्प्यूटर और नई तकनीक के विकास से देश को लाभ ही होगा। किन्तु इस विचार के पीछे यह तथ्य एक प्रकार से स्वीकार कर लिया गया है कि देश का विकास मनुष्य की अदम्य शक्ति से नहीं हो सकता। उसका विकास मशीनें ही करेंगी। यह विचार प्रस्तुत करते हुए राजीव जी यह भूल गए कि हमारा देश एक विकासशील देश है। हमारे देश की जनसंख्या बहुत अधिक है और यहां अधिकांश जनसंख्या बेकारी का दण्ड भोग रही है। 21वीं सदी की योजना बनाते समय "प्रत्येक हाथ को काम" की बात को भुलाकर "जिसके हाथों में काम है उनसे भी काम छीन लिया जाए" की नीति निर्धारित की गई है। नई तकनीक और कम्प्यूटर से व्यक्ति के हाथों के स्थान पर यंत्र ही काम करने लगता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सच है कि यूरोप, अमेरिका आदि विकसित देशों में कम्प्यूटर और मशीनों का बहुत अधिक उपयोग किया जाता है। पर यदि उन देशों की स्थिति का गम्भीरता से अध्ययन किया जाए तो पता चलेगा कि वे भी मशीन के दैत्य से परेशान हैं। यह सच है कि वहां के बेकार युवकों को बेकारी भत्ता दिया जाता है, पर वहां वे खाली समय जीवन की निरर्थकता व अकर्मण्यता के कारण परेशानी अनुभव कर रहे हैं। इन बिकसित देशों में भी बेकारी निरन्तर बढ़ रही है। अत: हमें विकसित देशों का अन्धानुकरण न करके उनका ठीक प्रकार से अध्ययन करना होगा। जो उचित है, उसी को ग्रहण करना होगा। वहां का अनुकरण करते हुए विशेष रूप से अपने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

यह प्रश्न बहुत ही सार्थक है कि क्या भारत को 21वीं सदी का स्वप्न देखना चाहिए ? जो व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र वर्त्तमान समस्याओं से आंखें मूंद केवल दूर की बात करता है, उसकी स्थिति शेखचिल्ली की तरह होती है। यदि हम और हमारा राष्ट्र दूर का सपना देखने के स्थान पर केवल वर्त्तमान समस्याओं से जूझें, तभी हमारे देश का कल्याण हो सकता है। यदि हमने वर्तमान की नींव को दृढ़ नहीं बनाया तो भविष्य की आशा का महल खड़ा नहीं हो पायेगा।

श्री राजीव गांधी ने 21वीं सदी का सपना लेते समय वर्तमान समस्याओं से आंखें मूंदने और यहां की जनता को भविष्य के भुलावे में रखने का प्रयत्न किया है। वस्तुत: आज हमारा देश 16वीं सदी की अनेक बीमारियों से जूझ रहा है। श्री राजीव गांधी को सर्वप्रथम इस देश की गरीबी, बेकारी और महंगाई जैसी कठिन आर्थिक समस्याओं का समाधान खोजना होगा। देश में आज भी सिर ढकने के लिए ढाई करोड़ मकानों की आवश्यकता है। आज भी लाखों गांवों में पीने का पानी नहीं। भ्रष्टाचार के जो नये उदाहरण हमारे सामने आ रहे हैं, उन्हें समाप्त करने के लिए कम्प्यूटर की नहीं देशभक्त व निष्ठावान् व्यक्तियों की आवश्यकता है। आज की सरकारी मशीनरी, जो अंग्रेजों के समय से चली आ रही है, उसके द्वारा कब तक किन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समस्याओं का कितना समाधान हो पायेगा, यह 21वीं सदी के सपने से पहले विचारणीय प्रश्न है।

21वीं सदी के लिए जिस तकनीक की चर्चा राजीव जी ने की है, उसकी जानकारी हमारे देश को नहीं। उस प्रकार के प्रशिक्षित मनुष्य भी हमारे देश में नहीं और इतना धन भी हमारे पास नहीं, जिससे हम शेखचिल्ली का स्वप्न ले सकें। अपनी आवश्यकता और शक्ति के अनुसार हमें सारी योजनायें बनानी होंगी। अभी तो यह स्थिति है कि हमारे देश में जितने साधन हैं हम उनका भी ठीक प्रकार से उपयोग नहीं कर पा रहे। हमारे देश में जितनी मानव शक्ति है, उसका उपयोग करने की भी हमारे पास कोई योजना नहीं।

नई तकनीक

यदि नई तकनीक का प्रयोग हमने उद्योग, आयुर्विज्ञान, संचार, यातायात, बैंक, लिपिकीय कार्य, कानून और व्यवस्था में किया तो अभावग्रस्त भारतवर्ष एक विषम चक्र में फंस जायेगा। सामान्य नियम यह होना चाहिए कि जिस तकनीक का विकास हम स्वयं कर सके उसी का उपयोग हम अपने देश में करें। उच्च तकनीक विदेशों से आयात करने के कारण हमारे देश का विकास नहीं हो रहा बरन् कुछ मुट्ठी भर लोग इसका अपने लिए उपयोग कर रहे हैं। यह सच है कि उच्च तकनीक का प्रयोग विदेशों में और कहीं-कहीं भारत में भी हो रहा है पर उससे बड़ा सत्य यह है कि इससे शेष समाज और राष्ट्र के आगे अनेक प्रकार की समस्याएं आन खड़ी हुई हैं।

इस प्रसंग में विकसित देशों व भारत की स्थिति में अन्तर की चर्चा अनिवार्य है। यूरोप में भूमिगत रेलवे व भूमिगत सड़कों की व्यवस्था गत सौ वर्षों से है। पर हमारे पास इतने साधन नहीं कि हम उनका विकास कर सकें। ऐसी स्थिति में हमें यूरोप के महानगरों की नकल न करके छोटे नगरों के विकास की योजना पर बल देना चाहिए। इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि हमारे देश में भूमि बहुत अधिक है। यदि हम नगर विकास की ठीक योजनायें बनायें तो वह योजना यूरोप आदि से बहुत भिन्न होनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए। पर दुःख इस बात का है कि हम यूरोप के अंधानुकरण पर अपने नगरों का विकास कर रहे हैं और एक नई विपत्ति में फंस रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि हम 21वीं सदी की तैयारी यूरोप की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर करने की बात कह रहे हैं। वास्तविकता यह है कि अभी हमारा देश तकनीक में यूरोप से बहुत पीछे है।

हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना होगा कि उच्च तकनीक के प्रयोग से आर्थिक प्रगति एकतरफा हो जाती है। वह कुछ ही लोगों के हाथों में सिमट कर रह जाती है। उससे व्यक्ति व समाज अपने को हीन अनुभव करने लगता है। उच्च तकनीक के प्रयोग से जिस सामाजिक प्रगति की चर्चा की जाती है, वह विलासिता के सिद्धांत पर आधारित है। वह मनुष्य का मनुष्य से संबंध नष्ट करती है और मनुष्य को एक ऐसा जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती है, जो अन्ततः उसके लिए विनाशकारी होता है। इस बात की चर्चा मैं ऊपर कर चुका हूं कि उससे बेकारी बढ़ती है और राष्ट्र दिवालियेपन की ओर अग्रसर होता है।

हमारी संस्कृति और सभ्यता हमें "सौम्यता" और सादा जीवन तथा उच्च विचार का संदेश देती है। 21वीं सदी के प्रसंग में जिस उच्च तकनीक के प्रयोग की बात कही जा रही है, वह मनुष्य को चकाचौंध उत्पन्न करने वाले वातावरण की ओर धकेलती है। उस संस्कृति में उच्च विचारों का कोई स्थान नहीं रहता। हम कैसे जियें और दूसरे कैसे नष्ट हों या हीन बनकर रहें, बस यही एक विचार रह जाता है।

उपर्युक्त कथन का अर्थ यह न समझा जाए कि हम तकनीक के सर्वथा विरुद्ध हैं। मानव की शक्ति के बाहर के सभी कार्य हमें तकनीक से ही हल करने होंगे। किन्तु तकनीक का उपयोग करने का प्रश्न मानव शक्ति के पूर्ण उपयोग करने के बाद ही उपस्थित होता है। वस्तुतः आवश्यकता मानव-शक्ति और उच्च तकनीक के समन्वय की है। किन्तु इस समय स्थिति विपरीत है। संसार के विकसित देशों में भी इसी बात की कमी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

21वीं सदी का स्वप्न कितना खोखला है यह जानकारी नई शिक्षा नीति के निर्माण से और भी प्रकट हो गई है। इस शिक्षा नीति में पढ़े हुए बालक तकनीक की दृष्टि से कुछ विकसित अवश्य होंगे, पर उनमें सांस्कृतिक रिक्तता और भी अधिक होगी। कुल मिलाकर उसका देश के निर्माण के लिए अच्छा प्रभाव नहीं होगा।

वर्तमान समस्याओं को सुलझाएं

नई तकनीक और 21वीं सदी के नाम पर पिछले 2-3 वर्षों में जो वातावरण बनाया गया है, उसमें हमारे सांस्कृतिक मूल्यों व स्वाभिमान को चोट लगी है। याद रखिये, जो अपनी संस्कृति का आधार छोड़कर उच्च कल्पनायें करते हैं, वे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र बहुत देर तक जीवित नहीं रह सकते। अतः हम अपने देश की उन्नति करना चाहते हैं तो पहले हमें वर्तमान विषम परिस्थितियों के समाधान की ओर अग्रसर होना होगा। केवल 21वीं सदी के स्वप्नों से उसका विकास असंभव है। ★

जनज्ञान (मासिक)

के

आजीवन सदस्य बनकर

हमें आगे बढ़ने में सहयोग दीजिये। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइये।

आज ही ५०१ रुपये भेजिये।

साथ में १०१ रुपये मूल्य की 'वैदिक सम्पत्ति' उपहार में लें।

☐ अपने और अपनी आने वाली पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य तथा संस्कार निर्माण के लिए पढ़ें-पढ़ायें

वैदिक साहित्य : हिन्दू-रक्षक साहित्य।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत को देशनिकाला

—प्रो. धर्मवीर (अजमेर)

सरकार ने नई शिक्षा नीति की घोषणा करके देश की जनता को बताने का प्रयत्न किया था कि सरकार इस देश की आत्मा को जगाना चाहती है, जिससे देश आत्मवान और समर्थ होकर इक्कीसवीं सदी में संसार में अपना विशेष स्थान बना सके। परन्तु जिस कुशलता से सरकार ने नई शिक्षा नीति का मंत्र पढ़कर आत्मा को ही निकाल बाहर कर दिया, उससे जागने की बात तो दूर, इस नीति के चलते उसके जीवित रहने में ही सन्देह है। वैसे तो चल रही शिक्षा पद्धति में ही इसके लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं था, परन्तु सरकार में बैठे सहानुभूति रखने वाले लोगों के कारण यह सुविधा देश के कुछ प्रदेशों में उपलब्ध थी, परन्तु देश एकता और अखण्डता का नारा लगाकर उसकी भी बलि दे दी गई हैं।

इन व्यवहारों को देखकर सन्देह होने लगता हैं कि यह देश आज तक स्वतंत्र भी हो पाया है ? आज इतने वर्षों के बाद भी इस देश के शासक वास्तविकता को नहीं समझ सके। इस देश की दो पीढ़ियों का समय स्कूल-कॉलेज के नाम पर बर्बाद कर दिया, क्योंकि विदेशी भाषा से इस देश की जनता को नहीं समझाया जा सकता। समझाने वालों को तो सरकार देश के साधनों का और समय का अपव्यय करके तथाकथित रूप से शिक्षित बना देती है परन्तु समझने वाले की भाषा तो दूसरी ही रहती है। इस देश की समझने की भाषा तो इस की जनता को जन्म से ही मिलती है परन्तु सरकार पूरे देश की जनता को दूसरा जन्म देकर घुट्टी में अंग्रेजी देने के लिए कटिबद्ध है।

हमारा मानसिक दासत्व अभी दूर नहीं हुआ और न ही निकट भविष्य में उसके समाप्त होने की संभावना है। हर परिस्थिति से कुछ को सुख और कुछ को दु:ख तो होता ही है। जैसे परतंत्र रहना भी कुछ के लिए सुख का कारण था। इसीलिए तो उस समय भी सभी तो स्वतन्त्रता के लिए नहीं लड़े

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थे। उस समय भी लोग रायबहादुर, सी आई. आदि उपाधियों के नाम से विदेशी सरकार की वफादारी को प्रमाणित करते ही थे। स्वतन्त्रता और सुविधा में ही सुख अनुभव होता है। यह सुख शरीर में इन्द्रियां अनुभव करा सकती हैं। स्वतन्त्रता के सुख को इन्द्रियों से नहीं भोगा जा सकता। आज भी सुविधाभोगी स्वतन्त्रता की नहीं सुविधाओं की रक्षा चाहते । जिनके पास सुविधाओं का जितना बड़ा समूह है वे अपन को स्वतन्त्रता से उतना ही अधिक दूर दिखने का प्रयत्न करते हैं। यही सुविधाभोगी वर्ग आज भी इस देश का शासक है। वह अपनी सुविधा में किसी प्रकार की कटौती नहीं करना चाहता। अंग्रेज शासकों का स्वार्थी होना तो उसका लक्ष्य था परन्तु इश देश के वर्तमान शासक देश की जनता को अधिकारों से वचित कर अपनी सुविथाओं को अपना लक्ष्य बना बैठें हैं। सुविधाओं का त्याग कर सकना तो किसी महात्मा के वश की बात है, अन्यथा वे छीनी ही जाती है और यही उनके सुधार का उपाय है। नई शिक्षा नीति में संस्कृत को निकाल फेंकना भी इन्हीं लोगों का इच्छित है और ये लोग प्रचार तंत्र द्वारा संस्कृत की अनुपयोगिता सिद्ध करने का पूरा प्रयत्न करते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् त्रिभाषा सूत्र के रूप में शिक्षा से संस्कृत को दूर कर दिया गया, परन्तु सरकार में बैठे संस्कृतप्रेमी महानुभावों के कारण अंग्रेजी-हिन्दी के साथ-साथ तृतीय भाषा के रूप में उत्तर भारत के प्रान्तों में संस्कृत का प्रचलन बना। किसी कारण से छात्र संस्कृत पढ़ते रहे और पढ़ने वालों के कारण पढ़ाने वालों का एक वर्ग समाज को संस्कृत अध्यापकों के रूप में भी प्राप्त होता रहा जो किसी सभा-समारोह में अपनी संस्कृत की पंक्तियों से भारतीयता को पुष्ट करने का गौरव अनुभव करता रहा है। जहां शिक्षा का संचालन एक ओर अंग्रेजी की चारदीवारी में अपने को सुरक्षित किए अधिकारी वर्ग द्वारा किया जाता है, वहां दूसरी ओर उन राजनीतिज्ञों का भी इसे मार्गदर्शन प्राप्न होता है, जिनका अस्तितव मतों की अधारशिला पर टिका है। ऐसे लोग केवल उसी कार्य में अभिरुचि रखते हैं, जिससे उनके अस्तित्व को बल मिलता है। उर्दू का अस्तित्व इन्हीं राजनेताओं के कारण फल-फूल रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज बिहार में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा किसने दिया ? बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री डां. जगन्नाथ मिश्र ने। एक बार एक जनसभा में दिये गये इनके वक्तव्य से इनकी भावनओं पर प्रकाश पड़ता है। इनका कथन था कि हम मुसलमानों का हित चाहते है, इसे हमने प्रमाणित किया है बिहार में उर्दू को राजभाषा का दर्जा देकर जो सबसे अधिक मुस्लिम आबादीवाले राज्य उत्तर प्रदेश में भी नहीं किया जा सका है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश में भी उर्दू के लिए आन्दोलन चला और आज भी जारी है। यह सौभाग्य था जो स्वर्गीय वासुदेवसिंह जैसे एक व्यक्ति ने अपने मन्त्रिपद को गवांकर भी इस षड्यंत्र को सफल नहीं होने दिया। संभव है कि एकता और अखण्डता की आड़ में फिर भी ऐसे प्रयत्न होते रहें।

आज संस्कृत का महत्व बताने की आश्यकता नहीं है। अधिकारी और राजनेता इसका महत्व अच्छी तरह से जानते हैं, जिससे वे भयभीत हैं तथा यदा-कदा जनता में भारतीय संस्कृति और संस्कृत की प्रशंसा कर भारतीय जनमानस का मन मोहते रहते हैं। इनकी संस्कृत से युक्त मधुर शब्दावली भारतीयता से संसक्त है। मानस में इनके प्रति और अपनेपन के स्थापित होने की आशा जगाये रखती है। आज जब इस देश का व्यक्ति संस्कृत के पठन पाठन को अपनी कृपा पर आधारित समझता क तो उसे दयनीय समझा जाना चाहिए। आज संकृत केवल मुट्ठीभर लोगों की जीविका के लिए जारी रखी जानी चाहिए, यह कोई आधार नहीं। संस्कृत को जीवित रखने के लिए प्रत्येक उस व्यक्ति को प्रयत्न करना पड़ेगा, जिसके मन में अपने देश से प्रेम है। जिसे अपने गौरवपूर्ण अतीत को देखने और उज्ज्वल व समुन्नत भविष्य को पाने के लालसा हो, उसे संस्कृत सीखनी ही होगी। संस्कृत जाने बिना मनुष्य ने क्या खोया है, इसे वह नहीं जान सकता, जिसके मन में मानवीय दृष्टिकोण, राष्ट्रीय भावना का बोध और आध्यात्मिक संस्कार का अभाव है। यह केवल भाषा नहीं, ऐश्वर्य का द्वारा है, जिसे प्राप्त करना प्रत्येक भारतीय के लिए सहज संभव है। उससे दूर करना उसे दरिद्रता की ओर ले जाना है तथा राष्ट्रीयता से विमुख करना है। आज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत न जानने वाला भारतीय भी भारत से बाहर के व्यक्ति को संस्कृत के नाम पर कुछ भी बोलकर उसका शोषण कर लेता है। कभी वेद के नाम पर, कभी योग के नाम पर, कभी यज्ञ के नाम पर। ज्ञान-विज्ञान और आत्मा-परमात्मा के नाम पर सदा ही मनुष्य को प्रभावित किया जाता रहा है और किया जाता रहेगा। वैदिक साहित्य का, संस्कृत साहित्य का कितना भी अनुभव कर डालें, दूसरे रूप में प्रस्तुत कर दें परन्तु मौलिकता का मूल्य कभी कम नहीं होगा। किसी भी भारतीय को यह अमूल्य सम्पत्ति संस्कृत के माध्यम से सहज उपलब्ध है। उसे उससे वंचित करना, उसे अपने मूल से पृथक् करना एक जघन्य अपराध है। इसे रोका जाना चाहिए।

आज किसी कार्य की सफलता के लिए दो ही उपाय हैं—एक तो निर्णायक व्यक्ति समझदार और ईमानदार हो, उचित निर्णय ले सके अथवा गलत निर्णय को रोक सके। कभी गलत निर्णय लेते समय शतशः और सहस्रशः व्यक्ति विद्यमान होने पर भी एक भी विरोध करने का साहस नहीं कर पाता अन्यथा एक भी व्यक्ति अनुचित निर्णय के विरुद्ध बोलने का साहस जुटा ले तो जनता की आवाज उसके साथ मिलकर उसे सबसे प्रभावशाली बना देती है, जिसे लांघना कैसे भी बलवान अन्यायकारी के लिए संभव नहीं है। दूसरा उपाय जन-जागरण का है, जिससे सरकार को बाध्य किया जा सके कि वह उचित निर्णय ले। कभी-कभी निर्णय इतनी चालाकी से लिया जाता है, जिसका परिणाम बहुत बाद में मालूम होता है। जैसे इस नई शिक्षा पद्धति के विचार में ही इस चालाकी से संस्कृत को उड़ा दिया गया। लोगों को अब उस ओर ध्यान आकर्षित करना पड़ रहा है। त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी व अंग्रेजी के साथ एक आधुनिक भारतीय भाषा शब्द में आधुनिक जोड़कर संस्कृत को हटा दिया गया है। शिक्षाशास्त्रियों का कहना है कि संस्कृत को पुरातन भाषा के रूप में जाना गया है अतः 'आधुनिक भारतीय भाषा' इस वाक्यांश में संस्कृत की गणना नहीं होती। इस बात की पुष्टि सम्बद्ध मन्त्रालय के मंत्री के इस कथन से भी होती है कि संस्कृत के कारण आधुनिक भाषाओं की पढ़ाई नहीं हो पाती, इस कारण ऐसा करना पड़ा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसका अभिप्राय हुआ ऐसा जानबूझ कर किया गया है। संस्कृतज्ञों का, संस्कृत प्रेमियों का और समग्र रूप से उन सभी लोगों का, जो संस्कृत से भारतीयता को जुड़ा देखते हैं, यह दायित्व है और एक चुनौती भी कि वे इस समस्या का समाधान करें। देखना है कि इस चुनौती को हम किस रूप में देखते हैं। समाधान जनजागरण से होता है या समझदारी से अथवा हम प्रस्ताव पास करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

जनज्ञान (मासिक) के नियम

1. 'जन-ज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जन-ज्ञान' के रैपर पर लिखे पते में अंकित रहती है।)
2. 'जन-ज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा बैरंग भेज दिया जाता है।
4. कागज, छपाई और डाक-शुल्क में अत्यधिक वृद्धि के कारण फरवरी सन 1987 से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य तीन रुपये पचास पैसे कर दिया गया है। वार्षिक मूल्य पैंतीस रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनी आर्डर फार्म और पोस्ट कार्ड संलग्न रहता है।
6. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनी आर्डर द्वारा तुरंत भेज दिया करें। मनी आर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. में 7 रु. 50 पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त लगता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्थान को।
7. 'जन-ज्ञान' की वी. पी. वापस आने पर संस्थान को 7.50 पैसे की हानि उठानी पड़ती है। अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य किया करें।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अहिंसा और भारत

—सुरेन्द्र कुमार मिश्र

विद्वान् लेखक ने हिंसा-अहिंसा का अच्छा विश्लेषण और विवेचन किया है। वे इस बात से दु:खी हैं कि हम बात तो अहिंसा की करते हैं, लेकिन हमारा आचरण हिंसात्मक है। एक पठनीय और मननीय लेख।

'अहिंसा परमो धर्म:'—इस देश का प्राचीन सन्देश है। किन्तु संसार का सबसे बड़ा युद्ध—महाभारत का युद्ध इसी देश के कुरुक्षेत्र के मैदान में लड़ा गया। ऐसा कहा जाता है कि इस भीषण लड़ाई में अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई थी और युद्धक्षेत्र की मिट्टी खून से नीचे कोस भर लाल हो गई थी। जिस देश ने अहिंसा के परम धर्म का दिव्य संदेश दुनिया को दिया, उसी देश में ऐसा संहारक युद्ध हुआ, यह भी एक विडंबना ही है।

महाभारत युग के लम्बे अंतराल के बाद आधुनिक युग में इस देश में गांधी जी सबसे जोरदार तरीके से अहिंसा की वकालत करने वाले व्यक्ति हुए जो भारतीय ऋषि परंपरा के अनुकूल थे। उनकी अहिंसा आत्मबल से युक्त और निर्भीक थी। किन्तु हाय री नियति! उन्हें भी हिंसा की गोली का शिकार होना पड़ा। उनकी अहिंसा के दिव्य संदेश का परिणाम उनके जीवन-काल में ही और आज भी इस देश में क्या हुआ? सन् 1946 का कलकत्ता का दंगा, फिर नोआखाली का दंगा, पंजाब का दंगा, दिल्ली का दंगा, कश्मीर का दंगा और आज तक दंगों का अनगिनत सिलसिला। यही तो उनकी अहिंसा की परिणति हुई इस देश में।

ऐसा कहा जाता है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम गांधी जी के नेतृत्व में अहिंसात्मक ढंग से लड़ा गया। किन्तु इस लम्बे स्वतन्त्रता युद्ध में काफी हिंसा हुई, यह बात भी सच है। एक बार तो स्वयं गांधी जी को भी परिस्थिति से बाध्य होकर हिंसा को प्रश्रय देना पड़ा था और देश की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आजादी प्राप्त करने का खयाल रख भारतीयों को प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों की ओर से लड़ने के लिए सहमति देनी पड़ी थी।

एक मत यह भी है कि भारत की आजादी गांधी जी की अहिंसा की छाया में नहीं मिली। यह तो भगतसिंह सरीखे प्रबल राष्ट्रवादियों के बम के धमाकों के आतंक से और सुभाषचन्द्र बोस के खून के बदले आजादी देने की गुहार से प्राप्त हुई है। भगतसिंह जैसों को फांसी देने वाले खूनी शासकों का इसी देश में टिकना मुश्किल हो गया था और आजाद हिन्द फौज जैसा संगठन उनके लिए चुनौती बन गया था। द्वितीय विश्व युद्ध की भारी हानि और उनकी आर्थिक चरमराहट ने उन्हें इस देश को छोड़ने के लिए विवश कर दिया था और भारत से भागना उनकी नियति बन गई थी।

महाभारत काल के बाद और आधुनिक युग के पूर्व 'अहिंसा परमो धर्मः' का दिव्य संदेश लेकर इस देश में दो और महान् विभूतियां बुद्ध और महावीर आये। किन्तु इनकी अहिंसा भी छलावा ही सिद्ध हुई और भविष्य के युद्ध की जननी बनी। मगध सम्राट् अजातशत्रु बुद्ध का परम भक्त था और बौद्ध मत ग्रहण करने के पश्चात् भी जिस नृशंस तरीके से उसने वैशाली पर चढ़ाई की, अपने आक्रमण के दौरान अपनी खूंख्वार हिंसक प्रवृत्ति को जिस तरीके से परितुष्ट किया, उसे देखकर 'बौद्ध अहिंसा' भी सहम उठी थी। बाद में भी बौद्ध और सनातन धर्मों के सनातन संघर्ष ने इन दोनों की अहिंसा को बेमानी कर दिया।

महावीर की अहिंसा भी इस देश में अर्थहीन हो गई। जैन या बौद्ध—कोई भी धर्म हो—किसी राज्य शक्ति पर आश्रित होकर ही फल-फूल सका और यह शक्ति हिंसा से ही सनी होती है। कोई भी सम्प्रदाय इस देश में अहिंसा से रस ग्रहण कर नहीं फैला, बरन् सभी हिंसा की महिमामयी शक्ति राज्य-शक्ति से ही पोषित हुए।

भारत की मिट्टी से पनपे एक और सम्प्रदाय—सिक्ख सम्प्रदाय में अहिंसा पूर्णतः महत्त्वहीन है। सिक्ख सम्प्रदाय हिंसा-अहिंसा के द्वन्द्व में कभी नहीं पड़ता और 'सिक्खी में लक्ष्य साधकर छोड़े गये हिंसा के तीर सार्थक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समझे जाते हैं। यहाँ भी अहिंसा अर्थहीन है।

असल में 'अहिंसा परमो धर्मः' का विशाल संदेश देकर भी हमारी आस्था हिंसा से टूटी नहीं और हमारा विश्वास अहिंसा से जुड़ा नहीं। बीच-बीच में अहिंसा का पैगाम देने वाले पैगम्बरों के व्यक्तित्व से अभिभूत होकर हमने अवश्य अपने को अहिंसा के आवरण से ढक लिया। इस क्रम में हमने स्वयं को भी छला और उन्हें भी अंधकार में रखा, जिसका नतीजा हमें युद्धजन्य पराजय और राजनैतिक गुलामी के रूप में मिला। तब हम अहिंसा की मरहम से पराजय के घाव को सहलाते रहे।

आपसी मार-काट में उलझकर विदेशियों का दास बन जाना ही जिस देश की नियति रही है और बात-बात में आपस में जूझना ही जिन भारतीयों की प्रवृत्ति रही है, वहाँ अहिंसा का सिद्धान्त ही व्यर्थ है। असल में बाहरी शक्तियों से पराजय की दशा में हमने अपने अंतरात्मा की तीखे बौछार से बचने के लिये अहिंसा का कवच गढ़ा। अहिंसा हमारी अकर्मण्य प्रवृत्ति और कायरता का आवरण बन गई। युद्ध की हार और राजनैतिक दासता—दोनों ही दशाओं में अहिंसा हमारी ढाढ़स की चीज बन गई और हमने अपने को अहिंसा का मसीहा समझकर हीनता में भी सन्तोष प्राप्त किया।

ऐसा कभी नहीं हुआ कि इस देश को हिंसा या युद्ध से पूर्णतः छुटकारा कुछ समय के लिये भी मिला हो। दुनिया के अन्य देशों की तरह हिंसा इस देश की भी आदिम विशेषता रही है। आज तो इस देश को हिंसा ने अपनी लपेट में ही ले लिया है। रक्तपात, लूटपाट और उपद्रव-उत्पात आज इस देश की दिनचर्या बन गये हैं। आज तो देश का साधारण नागरिक भी यह सोचने को विवश हो गया है कि इस देश का परम धर्म अहिंसा कब था?

आज अहिंसा का स्थान पूर्णतः रिक्त हो गया है। अहिंसा का मूल्य अब शेष हो चला है—कोरे आदर्श में। हिंसा शून्य के बड़े गड़े की ओर अहिंसा को ढकेल रही है। अहिंसा की हरियाली इस देश में अब झुलस चुकी है। जितनी तेजी से हिंसा इस देश पर हावी होती जा रही है, उससे तो नागरिकों का विश्वास ही अहिंसा और शान्ति-व्यवस्था पर से उठता जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्ता और सत्ता के तंत्र आज नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने में अक्षम हो गये हैं। उनकी उपयोगिता रह गई है तो केवल लोगों पर जुल्म ढाने के लिए और जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा गटक जाने के लिए। शासन की अक्षमता के कारण आज हिंसा बलवती होती जा रही है। वर्ग-भेद और वर्ग-संघर्ष बढ़ता जा रहा है। लोग कानून हाथ में लेने लगे हैं। मौजूदा न्याय-व्यवस्था इंसाफ का रास्ता खोलने में अक्षम हो गई है। क्यों? क्योंकि वह पैसे के कंधे पर चढ़ी हुई है और पूरी सत्ता पैसे के इशारे पर नाच रही है। इस अराजकतापूर्ण व्यवस्था में नेक और ईमानदार व्यक्ति भी हिंसा से आकर्षित होता जा रहा है और शोषण से मुक्ति का रास्ता इसे ही मानने लगा है। इस भीड़ में अहिंसा कहीं खो गई है।

भारत की अहिंसा और सहिष्णुता को सत्तालोभी राजनेता जहर दे रहे हैं। आज राजनैतिक अहिंसा हिंसा का रूप बन गई है। हिंसा का आचरण आज तलवार बन गया है, जो मौखिक अहिंसा के म्यान में रहता है। अब इस तलवार को तोड़ने की आवश्यकता है, नहीं तो भारत टूट जायेगा।

इस देश के तीन लुभावने सिद्धान्त हैं—लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद। किन्तु इन तीनों पर आज हिंसा हावी हो गई है। इस देश के लोकतंत्र में सत्ताशक्ति लोकमत के आशीर्वाद से नहीं प्राप्त होती, वरन् चुनाव के ठेकेदार बंदूकों की छाया में मतपेटी को वोटों से भर देते हैं। लोकमत की वहाँ कहाँ पहुंच? चुनाव क्या हुआ, लाशों की कतार लग जाती है। जब कानून-निर्माताओं के चयन में हिंसा की यह भूमिका है, तो इस देश में अहिंसा कैसे टिकी रह सकती है?

धर्मनिरपेक्षता का यहाँ खूब ढिंढोरा पीटा जाता है, किन्तु धार्मिक उन्माद से जितनी हिंसा यहाँ सुलगती है, शायद ही दुनिया में कहीं और सुलगती हो। इसी धार्मिक उन्माद ने तो इंदिरा गांधी और जनरल अरुण वैद्य जैसी राष्ट्रीय हस्तियों को हिंसा के मुख में झोंक दिया और अहिंसा चुपचाप बिलखती रही। आज आम जनजीवन इस धार्मिक हिंसा से पूर्णतया त्रस्त है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवाद इस देश का मूल लक्ष्य है। किन्तु इस समाजवाद की गर्दन पर भी हिंसा ने अपना खंजर रख दिया है। आम आदमी इस प्रच्छन्न हिंसा का शिकार हो रहा है। इस देश का समाजवाद पिपरिया, बरवल और बेलछी जैसी जगहों के खून से सींचा जा रहा है, जहाँ हिंसा ने अपने कारखाने खड़े कर लिये हैं।

हिंसा-अहिंसा के द्वन्द्व में पड़ी हुई इस देश की लिजलिजी नीति अहिंसा का बाना तो जरूर पहनती है, किन्तु विस्तार हिंसा का होता है। जन्म लेती हिंसा को अहिंसा के संशय में पड़कर हिंसात्मक तरीके से नहीं मारना— हिंसा का चंवर डुलाना है।

हिंसा को हिंसा के ही ढंग से मारना चाहिये। अन्यथा खून के ये पौधे लहलहा कर धरती को हिंसा का जंगल बना डालेंगे, जहाँ केवल हिंसक जानवर ही रह सकता है; अहिंसक कोमल मनुष्य नहीं।

अहिंसा शान्ति से रहने की प्रकृति का नाम है। किन्तु भारत की नियति ही उलट-पलट और अशान्ति की रही है। शायद इसी से ऊबकर इसने 'अहिंसा परमो धर्मः' का नारा गुंजाया होगा। वास्तविक अहिंसा लाने के लिए हमें हिंसा से जागरूकता के साथ लडना होगा, तभी अहिंसा प्रतिष्ठित हो सकेगी। □

राष्ट्रवादी शक्तियों का जागरण आवश्यक

मैंने इसी वर्ष से जनज्ञान मासिक जैसे दिव्य वैदिक प्रचारक एवं आदर्शवादी मासिक का अध्ययन प्रारम्भ किया है। वास्तव में हिन्दुत्व प्रेरणा, सात्विक एवं आदर्शवादी ज्ञान एवं सन्देश को मानव मात्र तक पहुँचाकर जनज्ञान अतीव महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

वास्तव में वर्तमान समय में भारत में स्वार्थान्ध एवं मतान्ध राजनीति का बोलबाला है। ऐसे समय में राष्ट्रवादी शक्तियों का जागरण अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य में जन-ज्ञान महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। एवं देश का कुछ राजनैतिक प्रतिनिधि यह कहने में भी संकोच नहीं करते कि "हिन्दुओं को राम जन्मभूमि किसी और जगह मान लेनी चाहिये।" राजनीतिबाजों को ऐसे गैर-जिम्मेदाराना वक्तव्य पर शर्म आनी चाहिये।

— **प्रमोद कुमार आर्य** तलवा माजरा जिला मुजफ्फरनगर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐतिहासिक कहानी

कर्त्तव्यनिष्ठ वीरांगना वीरमती

— डा० रतनलाल 'रतनेश'

चौदहवीं शताब्दी को कोई युद्धों की शताब्दी कहे तो कोई असंगत बात नहीं, क्योंकि उस समय सारे भारत छोटे-छोटे राज्य वैमनस्यवश या राज्य लिप्सा के कारण निरंतर युद्धों में लीन रहते थे।

उसी समय उत्तर में दिल्ली की सल्तनत पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिपत्य था। अलाउद्दीन एक अन्यायी शासक था। उसने अपने चाचा और ससुर जलाउद्दीन को मार कर राज्य पर अधिकार कर लिया था। मुस्लिम संस्कृति में माता-पिता, भाई और बहिन का कोई मूल्य नहीं होता। सल्तनत के सामने सब कुछ हेच है। सुलतान अलाउद्दीन ने कई लड़ाईयां लड़ीं, कहीं राज्य लिप्सा है तो कहीं रूप लिप्सा। उसने दक्षिण के अनेक राज्य तहस नहस करके अपनी इन्द्र धनुषी अभिलाषाओं के रंगीन महल बसाए थे। दक्षिण में देवगिरि नामक एक छोटा-सा राज्य था। वहाँ का राजा रामदेव बहुत वीर, साहसी और बहादुर था। राजपूतों में एक बहुत बड़ा गुण था। वे चारपाई पर मरने की अपेक्षा युद्ध भूमि में मरना स्वर्ग के समान समझते थे। सोलह-सत्रह वर्ष में ही राजपूतों का वीरगति के लिए आमन्त्रण आ जाता था। राजपूत किसी की पराधीनता में जीना कभी स्वीकार नहीं करते थे।

राजा रामदेव के पास एक मराठा सरदार था। वह स्वामिभक्त वीर और साहसी सरदार था। गत वर्ष ही अपने प्राणोत्सर्ग कर देश रक्षार्थ वीर गति को प्राप्त हुआ था। उसकी पांच-वर्षीय बालिका का नाम वीरमती था। वीरमती की मां बीमार रहती थी। पिता के देहान्त के एक वर्ष के पश्चात् माँ भी संसार को छोड़कर चल बसी थी। अब अनाथ वीरमती का लालन-पालन राजा रामदेव पर आ पड़ा। रामदेव ने सोचा कि जिसके पिता ने मेरे राज्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दी, उसकी रक्षा करना मेरा प्रथम कर्त्तव्य है। इसलिए राजा ने अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिये उस बालिका का पालन-पोषण अपने महलों में राजकुमारों के साथ ही किया। उसे राजकुमारी की तरह रखा। राजा-रानी ने उसके प्रति कोई लेश मात्र भेदभाव नहीं किया। जैसे-जैसे राजकुमारी बड़ी होती गई उसका रूप रंग निखरता गया। राजा को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगी।

राजा ने सोचा कि वीरमती का विवाह साधारण तरह से करना मेरे लिए कलंक की बात होगी। उस मृतक सरदार की आत्मा को कभी शान्ति नहीं मिलेगी। संसार मुझे विश्वासघाती बतायेगा। मैंने वीरमती को अपनी पुत्री के रूप में पाला है। उसका विवाह किसी सुयोग्य वर के साथ धूम-धाम से करूंगा उनकी सेना का ही एक सरदार कृष्ण राव था, जो अत्यन्त सुन्दर, वीर और साहसी था। प्रत्येक पहलू पर विचार करने के पश्चात् वीरमती से सहमति भी प्राप्त कर कर ली गई थी। वीरमती से साक्षातकार करा दिया गया। वीरमती की सगाई कृष्णराव के साथ कर दी गई। 'मैं वीरमती के पिता का ऋण चुका कर ही रहूंगा। तभी मुझे प्रसन्नता होगी।' राजा के हृदय में वात्सल्य उमड़ पड़ा। अन्तर की हूक रोकी नहीं जा सकती। कर्त्तव्य ने विजय पाई। राजा ने धूम-धाम से विवाह की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी।

कृष्ण राव में एक दोष था। वे बहुत लोभी थे। परन्तु उन्होंने इस लोभी को अपनी चतुराई के अन्धेरे में ऐसी जगह छिपा रखा, जिससे उसे कोई जान नहीं सका। राजा यदि किसी प्रकार यह जान पाते तो वे वीरमती की सगाई कभी कृष्ण राव के साथ नहीं करते।

वीरमती को राजा पर पूर्ण विश्वास था। इसलिए वह मन ही मन मुग्ध हो रही थी। राजा ने यह जानकर कि वीरमती पूर्ण रूप से संतुष्ट है, अपना अहोभाग्य माना कि भविष्य में मेरा नाम संसार में उज्ज्वल होगा।

अब विवाह में एक मास ही शेष रह गया था। राजा वीरमती की वैवाहिक गतिविधियों में तल्लीन थे। उसी समय दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी का राजा के पास संदेश आया कि मेरी अधीनता स्वीकार कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। वीर साहसी राजा रामदेव अपनी स्वाधीनता को बेच कर दूसरों को सौंप दे, यह असम्भव था। राजा ने उत्तर दे दिया कि मुझे युद्ध की चुनौती स्वीकार है। एक यवन को अपना बादशाह स्वीकार करके अपने पूर्वजों के मुख पर कलंक की स्याही पोतना कदापि स्वीकार नहीं। आइये, आपका स्वागत युद्ध के मैदान में चमचमाती तलवारों से किया जायेगा। सन्देशवाहक को पत्र लिखकर भेज दिया गया। वह घोड़े पर स्वार होकर चला गया। सुलतान ने पत्र पढ़ा। पढ़ते ही उसके तन-बदन में आग लग गई। मारे क्रोध के तिलमिला उठा। तुरन्त उसने एक विशाल सेना तैयार की और देवगिरि की ओर कूच कर दिया।

इधर वीरमती के विवाह की तैयारी हो रही थी। राजा ने यह जान कर कि अलाउद्दीन दलबल के साथ युद्ध के लिए आ रहा है, विवाह को स्थगित कर दिया, क्योंकि अब मातृभूमि की रक्षा का प्रश्न है। विवाह की तैयारी युद्ध की तैयारी में बदल गई। युद्ध के बाजे बजने लगे। सेनायें युद्ध-स्थल की ओर कूच करने लगी। हाथी घोड़े और रथ धूल की आंधियां उड़ाते हुए आगे बढ़े। युद्ध प्रारम्भ हो गया। देवगिरि के योद्धाओं ने रण-कौशल दिखाया। सुलतान के सिपाही गाजर-मूली की भांति काट-काट कर युद्ध भूमि पर धराशायी कर दिए गए। अलाउद्दीन के छक्के छूट गए। सुलतान अलाउद्दीन युद्ध के मैदान से भाग खड़ा हुआ। एक सरदार ने सुलतान का पीछा किया। भागते-भागते सुलतान थक गया था। सरदार ने उसे घोड़े से गिरा दिया। घोड़े से गिरते ही सुलतान हाथ जोड़ कर प्राणों की भीख माँगने लगा। सरदार को दया आ गई। सरदार लोग प्राणों की भिक्षा मांगने वालों पर हथियार नहीं उठाते। अतः उसने सुलतान को प्राणदान दे दिया।

सुलतान थोड़ी देर चुप रहा, कुछ सोचा, फिर सरदार ने कहा, "मैं आपकी बहादुरी की तहे दिल से तारीफ करता हूं। मुझे अजहद खुशी है कि जनाब ने मेरी जान बख्शी है। मैं तुम्हारी कुछ इमदाद कर सकता हूं। 'सरदार, तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो? जब तुमने एक भिखारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बन कर मुझसे प्राणो की भीख माँगी । तुम मेरी सहायता करोगे ?

सुलतान—नहीं सरदार तुम नहीं जान सकते, मैं तुम्हारी बहुत बड़ी मदद कर सकता हूं । आज तुम एक सरदार हो, कल तुम एक राजा बन सकते हो ।

सरदार—कहाँ के राजा ?

सुलतान—देवगिरि के ।

सरदार—(क्रोध से) क्या कहते हो, मैं राजा के प्रति देशद्रोही बनकर विश्वासघात करूं ?

सुलतान— अभी समय है । अच्छी तरह सोच लो ।

सरदार—चुप रहो, मैं अपने स्वामी के साथ धोखा नहीं कर सकता । जिसका मैंने नमक खाया है, उसके साथ विश्वास घातकरूं । मुझसे ऐसा पाप कभी नहीं हो सकता । मैं राजपूत हूं । ऐसा राज्य प्राप्त करना मेरे लिए घोर पाप है । इस प्रकार स्वर्ग का राज्य भी मुझे स्वीकार नहीं । तुमने राज्य के लिए अपने चाचा का खून बहाया है । मैं ऐसा स्वप्न में भी नहीं कर सकता, अब आगे कुछ कहने का साहस किया तो परिणाम भयंकर होगा ।

सुलतान भय से कांपने लगा । फिर दबी आवाज से बोला, खैर जाने दो, मैंने तुम्हारी भलाई सोची थी । क्योंकि तुमने मेरी जान बख्शी थी । काश मैं भी तुम्हें इस भलाई का कुछ बदला देता तो मुझे कुछ करार मिलता ।' इतना सुनते ही सरदार ने तलवार म्यान से बाहर खींच ली, सुलतान थर-थर कांप रहा था । हाथ जोड़ कर क्षमा मांगने लगा । पैरों पर सिर रख दिया । सरदार का हाथ रूक गया । सुलतान कुछ देर तक सोचता रहा । 'मैंने तुम्हारी भलाई सोची थी ।' यह वाक्य सुलतान के हृदय पर चिंगारियां छोड़ गया । यद्यपि सरदार ने उन चिनगारियों पर अपनी सद्-भावना का शीतल जल उड़ेल दिया था पर एक दो चिनगारियां अवशिष्ठ रह गई थी, जो सरदार के मन में अशान्ति की ज्वाला धधकाने का काम कर रही थी । ये वही सरदार थे, जिनकी सगाई वीरमती के साथ हो चुकी थी । कृष्ण राव अलाउद्दीन से पराजित नहीं हुए, पर लोभ ने एक क्षण में उन्हें परास्त कर दिया था ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृष्ण राव बोले, 'क्या यह सच है कि मैं देवगिरि का राजा बन सकता हूँ ?

सुलतान—यह सुनकर गद्गद हो गया। चिड़िया जाल में फंस गई है। 'बेशक, यदि तुम मेरी सहायता करो।'

'मैं क्या सहायता करूं।'

'यही कि तुम मुझे किले में दाखिल होने का राज बता दो। ऐसा करने से आपके लिए देवगिरि के राजा होने का द्वार खुल जायेगा।

कृष्ण राव के मन में राजा होने का स्वप्न जाग उठा। कृष्ण राव ने किले में प्रवेश होने का राज तो बताया ही, साथ ही ऐसे गुप्त भेद भी बताये, जिनसे देवगिरि को अति शीघ्र परास्त किया जा सके। इसके प्रश्चात् प्रसन्न होकर वापिस आये। तीन दिवस के पश्चात् ही सुलतान ने देवगिरि पर पुनः धावा बोल दिया। देवगिरि में विजय का उत्सव मनाया जा रहा था। इस अप्रत्याशित आक्रमण ने राजा को भयभीत कर दिया। राजा घबरा गया। राजा ने धैर्यपूर्वक साहस संजोया। सेनाओं को जोश लिया। सरदारो और वीर जवानो, युद्ध से भागना कायरता है। अपनी मातृभूमि के लिए प्राण देना वीरगति पाना है। इस तरह स्वर्ग मिलेगा, आदि-आदि।

अब राजा का ध्यान कृष्ण राव की ओर गया। सरदार कृष्ण राव के तीर कुछ बदले-बदले दिखाई दिये। उनमें युद्ध के लिए कोई जोश-खरोश का भाव प्रदर्शित नहीं हो रहा था। वही कृष्ण राव राजा से कह रहे थे कि सुलतान की विशाल सेना के सामने विजय सम्भव नहीं। जिसने अपनी मातृ-भूमि की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करना पहला कर्त्तव्य समझा था। वही यह कहे! मन में सन्देह उत्पन्न हो गया। अवश्य कोई गुप्त समझौता हुआ है। राजा ने छानबीन प्रारम्भ कर दी। कृष्ण राव ने सुलतान का पीछा किया था। पीछा करने के पश्चात् सुलतान जीवित कैसे लौट गया?

वीरमती को भी संदेह हुआ। वीरमती ने एक बार सरदार से मिलना चाहा। उसने अपनी सेविका द्वारा कृष्ण राव को तुरन्त बुलवाया। उधर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजा ने कृष्ण राव को तुरन्त गिरफ्तार करने का देश दे दिया। इस समय कृष्ण राव वीरमती के महल में पहुंच चुके थे। वीरमती ने पूछा, 'मैंने आपको क्यों बुलाया?'

'ज्ञात नहीं।'

'ज्ञात नहीं? क्या तुम बता सकते हो कि सुलतान ने इतनी जल्दी आक्रमण क्यों किया। कृष्ण राव अपराधी की भांति खड़े थे, कोई उत्तर देते नहीं बना। कुछ देर ठहर कर बोले।

'मुझे इसका पता नहीं' कहते हुए चुप हो गए। वीरमती की आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं। कृष्ण राव वीरमती के सामने इस प्रकार खड़े थे, जैसे सिंहनी के सामने बकरा।

वीरमती ने जोर से कहा, 'बोलते क्यों नहीं?' देश के साथ गद्दारी करने वाले सरदार तुम्हें ऐसा करने में शर्म नहीं आई?'

कृष्ण राव भयभीत होकर बोले, "देवी, मेरा अपराध क्षमा करो।"

'तुम पुरुष होकर नारी से क्षमा मांगते हो, मेरी चूड़ियों को कलंकित करने वाले सरदार तुम्हें क्षमा? तुम्हारा अपराध कभी क्षमा के योग्य नहीं। तुम्हें तो पुरस्कार मिलना चाहिये।'

'मैं तुम्हारा ही...।'

'तुम मेरे कायर सरदार, वीरमती के भावी पति, तुम नहीं जान सके कि मैं उस सरदार की बेटी हूं, जिसने देश की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दी थी। एक तुम हो विश्वासघाती सरदार। जिस देश का नमक खाया, उसी को यवनों को सौंपने का सौदा कर बैठे। छि:-छि:। राजा ने तुम्हें कुछ और ही समझा था। तुम आस्तीन के सांप निकले। मुझे बहुत धोखा हुआ।

मैं ऐसे कलंकित कायर पति को वरण नहीं करूंगी। मैं आर्य कन्या हूं। अब मैं दूसरा पति भी वरण नहीं कर सकती। मैं अपना कर्त्तव्य पालन करूंगी, यह कहते हुए अपनी कटार कृष्ण राव के सीने में घोप दी, और वही कटार अपने गले पर फेर ली। दोनों वहीं धराशायी हो गए। उसी समय कृष्ण राव को बन्दी बनाने के लिए दो सिपाही महल में दाखिल हुए। लाशें देख कर सन्नाटे में आ गए। अब तो यहां सरदार कृष्ण राव और वीरमती की लाशें शेष हैं। सिपाही विस्मय से चुपचाप खड़े थे। उधर राजा रामदेव और अलाउद्दीन में घोर घमासान युद्ध हो रहा था। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी पाचनक्रिया ठीक रखिये

—एक डाक्टर की लेखनी से

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि मनुष्य की 80 प्रतिशत बीमारियों का कारण भोजन का ठीक न पचना है। इसलिए सभी मरीजों से मेरा पहला सवाल यही होता है कि उनका खाना कैसे पचता है और खाने-पीने की आदत कैसी है ?

हम सभी के लिए पाचनक्रिया को समझना जरूरी है। जब खाने-पीने की चीज मुंह में होती हैं तो उसमें थूक मिलता है। यह थूक मुंह के भीतर की दीवारों यानी मुंह के भीतरी हिस्से में स्थित ग्रन्थियों से निकलता है। थूक से भोजन गीला हो जाता है और इस तरह इसे निगलना आसान हो जाता है। इसके साथ ही थूक में पटयालीन नाम का एक एन्जाइम होता है। एन्जाइम ऐसा पदार्थ है जो रासायनिक क्रियाओं को तेज करने में मदद देता है लेकिन स्वयं इन क्रियाओं में भाग नहीं लेता।

पटयालीन का काम यह है कि कार्बोहाइड्रेटस का पाचन शुरू हो जाये। कार्बोहाइड्रेट्स कई तरह के होते हैं, लेकिन यह सिर्फ तीन तत्वों कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन के अणुओं से बने होते हैं। कार्बोहाइड्रेट्स के अणुओं में कार्बन परमाणु की एक लम्बी कड़ी होती है, जिसके साथ हाइड्रोजन और आक्सीजन के परमाणु जुड़े होते हैं। जो भोजन हम खाते हैं उसमें कार्बोहाइड्रेट होते हैं और इनके कई अणु इतने बड़े होते हैं कि छोटी आंतों की अन्दरूनी परतों से होकर गुजर नहीं सकते। शरीर के लिए जरूरी खाद्य पदार्थ छोटी आंतों में इन परतों के जरिये ही सोख लिया जाता है। इसलिए खाना पचाने की क्रिया मुंह में ही शुरू हो जाती है और पटयालीन के असर से कार्बोहाइड्रेट् के बड़े अणु टूट-टूटकर छोटे-छोटे अणुओं में बदल जाते हैं।

क्या हम जानते हैं कि खाने के बाद भोजन का क्या होता है ? भोजन निगलने के बाद यह तीन या चार घंटे तक पेट में रहता है। यहाँ गैस्ट्रिक रस इसमें मिल जाता है। इससे प्रोटीन का पाचन शुरू हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गैस्ट्रिक रस की कहानी बहुत दिलचस्प है। गैस्ट्रिक रस पेट की भीतरी परतों में स्थित छोटी-छोटी ग्रन्थियों से उत्पन्न होता है। ऐसी लगभग साढ़े तीन करोड़ ग्रन्थियां हैं। ये ग्रन्थियां एक तेजाब-हाइड्रोक्लोरिक एसिड तैयार करती हैं। यह तेजाब इतनी तेज क्रिया का होता है कि साधारण धातु को गलाकर नष्ट कर सकता है लेकिन पेट की आंतरिक सतह ऐसी होती है कि इस तेज अम्ल से उसे नुकसान नहीं होता।

तेजाब और अलसर

तेजाब का कितना बुरा असर शरीर के तन्तुओं पर पड़ सकता है, यह समझने के लिए हमें पेट के अलसर के बारे में ध्यान देना चाहिये। अगर पेट का अलसर हो तो पेट की भीतरी सतह का एक छोटा-सा हिस्सा तेजाब से बचाव की क्षमता खो देता है और सतह के भीतरी भाग के तन्तु दिखाई पड़ने लगते हैं, जिन पर तेजाब का असर होता है। इसी से अलसर होता है।

पेट की सतह की ग्रन्थियां इस तेजाब को तैयार करने के अलावा एक एन्जाइम पैपसीन भी तैयार करती हैं। यह पैपसीन तेजाब के साथ मिलकर भोजन के प्रोटीन को पचाने में मदद देती है।

प्रोटीन बहुत बड़े अणुओं की बनी होती है। इसमें कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन के परमाणु होते हैं—जिस तरह कार्बोहाइड्रेट्स के परमाणु होते हैं। लेकिन सभी प्रोटीन अणुओं में नाइट्रोजन के परमाणु भी होते हैं और कभी-कभी गन्धक जैसे अन्य परमाणु भी मिलते हैं। प्रोटीन के बड़े अणु वास्तव में छोटे अणुओं की कड़ियों से उसी तरह बने होते हैं जैसे एक मालगाड़ी में माल से भरे डिब्बे आपस में जड़े रहते हैं। ये छोटे अणु जिससे मिलकर बड़े प्रोटीन अणु बनते हैं, एमिनो एसिड अणु कहलाते हैं। ऐसे अणु 20 किस्म के होते हैं। एक तरह की प्रोटीन और दूसरी तरह की प्रोटीन में क्या अन्तर है यह इस पर निर्भर है कि उनमें किस तरह का एमिनो एसिड पाया जाता है।

भोजन के प्रोटीन का शरीर के तन्तुओं द्वारा सोखे जाने से पहले प्रोटीन के बड़े-बड़े अणुओं का टूटना जरूरी है जिससे एमिनो एसिड के छोटे-छोटे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अणु बन सकें। ये एमिनो एसिड अणु इतने छोटे होते हैं कि जब भोजन छोटी आंत से गुजरता है तो शरीर के तन्तु एमिनो एसिड को सोख लेते हैं। एमिनो एसिड से शरीर अपना प्रोटीन तैयार करता है और शरीर के लिए उचित एमिनो एसिड चुन लेता है और इनको मिलाकर बड़े-बड़े अणु बनाता है।

प्रोटीन का महत्व

जिस तरह कोई मकान ईंटों से बनता है, उसी तरह शरीर के लिए निर्माण सामग्री प्रोटीन है। प्रोटीन से ही शरीर के तन्तु बनते हैं। इस तरह प्रोटीन का पहला काम नये तन्तु बनाना या पुराने तन्तुओं को बदलना है। इसलिए बढ़ते हुए बच्चों के भोजन में प्रोटीन का होना बहुत जरुरी है। वयस्क लोगों के भोजन में भी प्रोटीन की मात्रा पर्याप्त होनी चाहिये क्योंकि उनके शरीर के तन्तु कमजोर पड़ जाते हैं। उनको बदलने के लिए नये तन्तु बनना जरूरी है।

कुछ किस्म के एमिनो एसिड ऐसे हैं जिनका निर्माण शरीर स्वयं नहीं कर सकता इसलिए यह एमिनो एसिड शरीर उस भोजन से लेता है, जो मनुष्य खाता है। इस कारण हर व्यक्ति को अपने भोजन में कई चीजें रखनी चाहिये जिससे शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक पदार्थ हों।

शरीर के पाचन क्रिया के अंग जिस तरह खाये गये भोजन को पचाते हैं और उसे शरीर का हिस्सा बनाते हैं, उसे ध्यान में रखते हुए हर समझदार व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि वह सही भोजन और सही मात्रा में भोजन करे जिससे वह स्वस्थ रह सके।

जनज्ञान का स्थान महत्वपूर्ण

महोदय,

जनज्ञान का मई अंक पढ़ने को मिला। हिन्दुत्व को जगाने में आपका अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। यों तो जनज्ञान की समस्त विषय सामग्री आपके उद्देश्य को भली प्रकार स्पष्ट करती है, किन्तु 'भारत देश महान्' कविता भारतीय संस्कृति तथा उसकी गौरव गरिमा को उजागर करने में विशेष रूप से सफल हुई है। आशा है भविष्य में भी जनज्ञान में ऐसी ही प्रेरणादायक कवितायें पढ़ने को मिलती रहेंगी, सधन्यवाद।

मुकेश गुप्त, चौक अमरोहा, मुरादाबाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीता का कर्मयोग

—रामनारायण महतो

इस संसार के सभी प्राणियों को जीने के लिये कार्य करना पड़ता है। मरने के बाद प्राणी में कार्य करने की शक्ति नहीं रहती। अतः कर्म ही जीवन है।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं—सात्त्विक, राजसिक और तामसिक।

शुद्ध चित्त से प्राणियों के हित की भावना या कर्त्तव्य बुद्धि से जो कार्य किये जाते हैं, उन्हें सात्त्विक कर्म कहते हैं।

अहंकारपूर्वक किसी कामना-विशेष से जो कर्म किये जाते हैं, उन्हें राजसिक कर्म कहते हैं।

और जो दूसरों का अनिष्ट तथा अपना पतन करने वाले कर्म हैं वे तामसिक कर्म होते हैं।

गीता इस विषय में स्पष्ट कहती है कि मनुष्य को कर्म के फल का त्याग करना चाहिये और तब कर्त्तव्य बुद्धि से ईश्वर की आज्ञा मानकर कर्म करना चाहिये। जब मनुष्य फल का त्याग कर देता है, तो स्वभावतः उसके राजसिक और तामसिक कर्म छूट जाते हैं—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्माते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थात् हे मानव! कर्म करना ही तेरा अधिकार है, उसका फल देने वाली कोई दूसरी ही शक्ति है। उसका फल वह दे या न दे, परन्तु तुम्हें उसका कार्य अपने हाथ में लेने की व्यर्थ अनधिकार चेष्टा नहीं करनी चाहिये। इसलिए न तो तुम कर्म के फल के लिए लालायित हो और न कर्म का परित्याग करो, किन्तु कर्त्तव्य बुद्धि से फल की इच्छा न करते हुए कर्म करते ही जाओ।

सब कर्मों के फल का त्याग ही संन्यास है। फल त्यागने पर काम्य कर्म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वतः नष्ट हो जाता है। कामना के मूल में फल ही काम करता है। काम्य कर्म न हो तो कामना का प्रश्न ही नहीं रहेगा। साथ ही काम करने वाले को "मैं यह काम करता हूँ" यह अभिमान भी छोड़ देना चाहिये।

त्रिगुणरूप प्रकृति अपनी इच्छानुसार सबसे कर्म करवाती है। तब करने वाले का यह अभिमान व्यर्थ है। अतः सम्पूर्ण कार्यों का भगवान को अर्पण कर देना चाहिये। कोई भी कर्म अपनी इन्द्रियों की तृप्ति के निमित्त न कर के भगवान के लिये करने पर मनुष्य फल-बंधन में नहीं फंसता। मूढ़ किसी भी कार्य को आसक्ति पूर्वक करता है और ज्ञानी उसी काम को कर्तव्य समझ कर निरीह भाव से करता है। यही गीता का कर्मयोग का सिद्धान्त है। सात्त्विक कर्म करने वाला ही सच्चा कर्मयोगी होता है। ☆

भारत की सारी भाषाओं के लिए एक लिपि का उपयोग हो जाये तो हर भाषा भली भाँति विकसित हो जाएगी। आजकल विभिन्न भाषाओं के बीच में आदान-प्रदान का कार्य हो रहा है। यदि प्रत्येक भारतीय भाषा के उत्कृष्ट साहित्य को एक ही लिपि के माध्यम से समझने का प्रयास करें तो भाषा और भाव को लेन-देन का सहज मार्ग प्राप्त हो जाएगा।

जिस प्रकार भारतीय एकता को बनाये रखने के लिए सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है, उसी प्रकार सह लिपि के रूप में देवनागरी का उपयोग हो जाये तो राष्ट्रीय एकता हो जाएगी। नागरी के माध्यम से दक्षिण की तमिल, मलयालम, तेलुगू और कन्नड़ भाषाओं को सीखने की सुविधा हिन्दी भाषियों को दी जाये तो वे भी आसानी से ये भाषाएं सीख सकेंगे। इस प्रकार आदान-प्रदान से भारत में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता प्राप्त हो सकेगी। वस्तुतः देश की राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के लिए भारत की विविध भाषाओं के बीच में सम्पर्क लिपि, जोड़ लिपि या सह-लिपि के रूप में नागरी लिपि बहुत सहायक हो सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्रोह को सांप्रदायिक दंगे कहना विनाशकारी होगा

—शिवकुमार गोयल

दिल्ली और मेरठ में मई में हुए साम्प्रदायिक दगों को साधारण दंगा नहीं कहा जा सकता। मेरठ में 1938 से लेकर अब तक एक दर्जन से ज्यादा दंगे हो चुके हैं। किन्तु इस बार का दगा सबसे ज्यादा बीभत्स, तथा राष्ट्र-द्रोही व विदेशी तत्वों द्वारा पूर्ण योजना के साथ किया गया विद्रोह का पूर्वाभ्यास था।

पिछले दिनों का यह भयावह दृश्य हृदय को दहला देने वाला तो था ही इसे देखकर यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यह विद्रोह प्रशिक्षित (ट्रेन्ड) दंगाइयों द्वारा महीनों तक तैयार की गई पूरी योजना का दुष्परिणाम था।

लाउडस्पीकर से जिहाद की घोषणा

मेरठ में एक माह पूर्व 14 अप्रैल को भी इसी लिसाड़ी गेट क्षेत्र में शब्बे रात के दिन दंगा हुआ था किन्तु उसमें एक दर्जन लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा था। इस बार के दंगों को हत्याओं, लूटमार, आगजनी में प्रवीण लोगों द्वारा ट्रेनिंग देने के बाद भड़काया गया था।

इन दंगों के लिए रमजान का महीना ही चुना गया। इसीलिए दिल्ली तथा मेरठ में एक साथ दंगा भड़काया गया।

जिस प्रकार दिल्ली में एक धर्मस्थल से भड़काने वाले भाषण देकर लूटमार व आगजनी शुरू हुई उसी प्रकार मेरठ में 19 मई को प्रातः मौहल्ला इमलियान, हाशिमपुरा व अन्य क्षेत्रों के धर्मस्थलों से लाउडस्पीकर पर इस्लाम की रक्षा के लिए सड़क पर आ जाने, काफिरों की हत्या कर डालने, उनकी सम्पत्ति जला डालने, की घोषणाएं कर जनूनी लोगों की भीड़ को आगजनी व हत्याओं के लिए उकसाया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

दंगों की शुरुआत

19 मई की प्रातः 5 बजे धर्मस्थलों के लाउडस्पीकरों से 'उत्तेजक आदेश' सुनते ही इस्लामाबाद, इमलियान, शाहपीर गेट आदि क्षेत्रों के लगभग तीन हजार जनूनी दंगाई हाथों में फरसे, बन्दूकें देसी कट्टे, जलती मशालें, पैट्रोल भरे कनस्तर, सीढ़िया लिये 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए हापुड़ बस स्टैंड के पीछे गोल कुआं पहुंचे कट्टे। उन्होंने वहां के सूत बाजार की 18 दुकानों के शटर तोड़े, माल लूटा तथा दुकानों को आग लगा दी।

दंगाइयों की भीड़ वहां से पिलोखड़ी रोड चल दी। वहां के श्यामनगर व लक्खीपुरा क्षेत्रों में स्थित कपड़ा बुनाई व छपाई के दो दर्जन से ज्यादा कारखानों को आग लगाई जाने लगी। कमला प्रिन्टर्स, लक्ष्मी टैक्सटाइल्स सिंघवाल टैक्सटाइल्स चन्द्रा टैक्सटाइल्स, आर. के. टैक्सटाइल्स, ढील्लन टैक्सटाइल्स आदि पर पहुंच कर दरवाजे तोड़े गए। अन्दर पहुंच कर सफेद रंग का पाउडर छिड़का गया, पैट्रोल डाला गया और आग लगा दी गई।

इन कारखानों के चौकीदारों व उनके परिवारों के स्त्री-पुरुषों व बच्चों को भी आततायियों ने आग में झोंक कर जिन्दा जला डाला।

हैण्डलूम वस्त्र व्यापारी संघ के प्रधान श्री ओमप्रकाश खन्ना तथा व्यापारी नेता श्री सतीश चन्द्र सिंघल हमें बताते हैं—'चौधरी नेपाल सिंह एडवोकेट के कृषि फार्म पर स्थित ढिल्लन टैक्सटाइल्स में ही उसके मैनेजर व चौकिदार सहित आठ लोगों को उन्मादियो ने जलाकर राख कर दिया। चौकीदार ओमी, उसकी पत्नी शांति तथा एक नन्हे-मुन्ने बच्चे को आग में धकेल दिया। प्रायः हर कारखाने के साथ-साथ उनके चौकीदारों व परिवार जनों की आततायियों ने नृशस हत्या कर डाली।

अरबों की क्षति

हैण्डलूम वस्त्र व्यापारी संघ ने पहले दिन की इस क्षति को ही लगभग 50 करोड़ रुपये आंका है। मेरठ का हैण्डलूम व उद्योग सारे देश में प्रसिद्ध है। यहां लाखों लोग इस उद्योग से आजीविका चलाते हैं। मेरठ की बनी खादी पावर लूम खेस, लोई, चादरें, छींट विदेशों तक को निर्यात की जाती हैं। आततायी

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दंगाइयों ने पूरा गणित लगाकर हिन्दुओं को इस उद्योग से अलग करने की शाजिश के अन्तर्गत यह आगजनी की। वे आवेश में यह भूल गये कि इसका दुष्परिणाम हजारों मुस्लिम बुनकरों व अन्य मजदूरों को भी बेकारी के रूप में भोगना पड़ेगा।

इन दंगों के पीछे विदेशी तत्त्व सक्रिय थे। यह तथ्य तब सामने आया जब आगजनी और हत्याओं की घटना के दौरान चार पाकिस्तानी नागरिक पुलिस ने रंगे हाथों पकड़े। पकड़े गये पाकिस्तानियों ने स्वीकार किया कि उन्हें पाकिस्तान में ट्रेनिंग दी गई थी कि भारत में जाकर किस प्रकार शान्ति भंग करनी है, किस प्रकार दंगे भड़काने हैं और किस प्रकार प्रशासन को पंगु बना डालना है।

पहले ही दिन पचासों लोगों की हत्या कर दिये जाने तथा करोड़ों रुपये की सम्पत्ति जला डालने से जब स्थिति प्रशासन व पुलिस नियंत्रण में नहीं रही तो अगले दिन पी.ए.सी. व सेना को बुलना पड़ा। दंगाइयों ने फैक्टिरियां व दुकानें जलाने के बाद धर्म स्थलों व मकानों की छतों पर मोर्चे लगाकर पुलिस, पी.ए.सी. व अन्य नागरिकों पर गोलियों व बमों की बौछार शुरू कर दी। तेजाब की बोतलें फैंकी जाने लगीं।

साम्प्रदायिकता विरोधी कमेटी के नेता तथा नानकचन्द कालेज के राजनीति विभाग के अध्यक्ष डा. हरपालसिंह के एकमात्र युवा पुत्र डा. प्रभात किसी मुस्लिम मरीज की जान बचाने कार से हापुड़ जा रहे थे। हापुड़ रोड पर दंगाइयों ने उनकी कार रोककर जला डाली। डा. प्रभात को छुरों से घायल कर जलती कार पर डालकर जला दिया गया। इस प्रकार हत्याओं, आगजनी व गोलीबारी का खुला तांडव चलता रहा। शास्त्रीनगर के एल ब्लाक पर भी हमला कर कोठियों में आग लगाई गई।

राज्य के मुख्यमंत्री श्री वीरबहादुरसिंह भागे-भागे अगले ही दिन मेरठ पहुंचे। उन्होंने स्वयं देखा कि दंगाई पुलिस व पी.ए.सी. पर मोर्चे लगाकर गोलियां बरसा रहे हैं, बम फेंक रहे हैं। अंत में सेना को बुलाना पड़ा।

सेना के जवान तलाशी लेने हाशिमपुरा, इमलियान, गुदड़ी बाजार,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस्लामाबाद आदि क्षेत्रों में पहुंचे तो उन पर भी हमले किए गए।

मलियाना की वास्तविकता

इन दिनों विपक्षी राजनैतिक दलों के संसद् सदस्य मलियाना कांड के नाम पर पी.ए.सी. के अत्याचारों का प्रचार कर रहे हैं। मलियाना गोली कांड में कुछ लोग मारे गए—यह बात सत्य है किन्तु यह कांड क्यों हुआ, इस की पृष्ठभूमि में जाने का किसी ने भी कष्ट नहीं किया। इन विपक्षी सांसदों, जामा मस्जिद के इमाम मौलाना बुखारी तथा मियां शहाबुद्दीन ने मलियाना कांड को तूल देकर पी.ए.सी. को दोषी ठहराना शुरू कर दिया। उस पर नर संहार करने के आरोप लगाए जाने लगे।

मैं मलियाना कांड की सही जानकारी लेने मलियाना गया। वहाँ के अनेक हरिजन नेताओं तथा संभ्रान्त नागरिकों ने अनेक प्रमाण देकर बताया कि 23 मई को यदि पी.ए.सी. दंगाइयों की गोलियों से बचाव के लिए गोली नहीं चलाती तो पी.ए.सी. के तमाम जवान तथा गांव के सैंकड़ो लोग वहीं ढेर कर दिए जाते।

इंका के हरिजन विधायक श्री नानकचन्द आजाद ने बताया कि "मैं तथा मेरठ जनपद के अन्य विधायक सांसद श्री शान्ति त्यागी के नेतृत्व में मलियाना आकर पूरी घटना की जांच कर चुके हैं। पी.ए.सी. अवैध शस्त्रों की तलाशी लेने यहाँ आई थी। उस पर धर्म स्थल व मकानों की छतों से अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाई गईं। जवान घिर गए। तब खबर मिलने पर और टुकड़ी आई। उसने आत्मरक्षा में गोलियाँ चलाईं तो हमलावर दंगाई मारे गए।

गांव के हरिजन बताते हैं कि मुरादनगर बम फैक्टरी के कर्मचारी सत्तार ने घर मे बम इकट्ठे किए हुए थे। उसने गोलियाँ चलाई तो घर में रखे बमों से विस्फोट हो गया। इन विस्फोटों से उसके परिवार के कई लोग मारे गए तथा मकान में आग लग गई।

गांव वाले बताते हैं कि यदि पी.ए.सी. न आती तो दंगाई पूरे गांव में नर संहार कर डालते। किन्तु उनमें आक्रोश था कि पी.ए.सी. व नागरिकों पर गोलियाँ चलाने वाले एक भी व्यक्ति को गिरफ्तार नहीं किया गया, जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि निर्दोष 103 लोगों को पकड़ कर जेल में डाल दिया गया।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जब 30 मई को मेरठ के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने आए तो मलियाना की अनेक हरिजन महिलाओं ने उनसे कहा कि क्या वे गांव छोड़ जाएं ? मजहब के जनून में भरे लोग अभी भी उन्हें जान से मार डालने की धमकियां दे रहे हैं।

यह ओछी राजनीति

कुछ राजनैतिक दलों के नेता हर दंगे की आग में राजनैतिक रोटियां सेकने का प्रयास करते हैं। वे एक वर्ग विशेष का पक्ष लेकर, पी.ए.सी. को दोषी करार देकर अपने वोट बैंक भरने को उत्सुक रहते हैं। जब 19 व 20 मई को मेरठ जल रहा था, तब इन नेताओं ने दंगा शुरू करने वालों की निन्दा क्यों नहीं की ? उस समय मेरठ आने का कष्ट क्यों नहीं उठाया ?

विदेशी एजेन्ट सक्रिय

मेरठ व दिल्ली के दंगों के पीछे निश्चय ही अलगाववादी व राष्ट्रद्रोही तत्त्वों का हाथ है। विपक्षी दलों में केवल भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि केवल मलियाना कांड की नहीं, पूरे मेरठ के दंगों की एक साथ जांच की जाए। एक वर्ग विशेष के वोटों के भूखे विपक्षी नेता यह जानते हैं कि यदि पूरे कांड की जांच हो गई तो यह रहस्योद्घाटन होगा कि पाकिस्तान समर्थक तत्त्वों ने ही आगजनी व हत्याएं शुरू की थीं। ये राजनैतिक नेता पी.ए.सी. के खिलाफ बवंडर केवल मुस्लिम वोटों को प्रभावित करने के लिए रच रहे हैं।

तलाशी के दौरान मेरठ के अनेक मोहल्लों में घरों से भारी मात्रा में पाकिस्तान में बनी राइफलें, बम तथा पिस्तौलें पकड़ी गई हैं। नादिरअली नामक उद्योगपति के घर से पाकिस्तानी राइफलें बरामद हुई हैं। पाकिस्तान में छपा उत्तेजक साहित्य भी बरामद हुआ है। इससे भी यह साफ हो जाता है कि कुछ बाहरी तत्त्व यहां तक विदेशी शस्त्र पहुँचा रहे हैं।

समय की चेतावनी

दंगों के विश्लेषण से साफ जाहिर है कि विदेशी मदद से राष्ट्रद्रोही तत्त्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में गृहयुद्ध छेड़ने पर उतारू हैं। इन राष्ट्रद्रोही तत्त्वों के इरादे अब पूरी तरह बेनकाब हो चुके हैं। वोटों की राजनीति के कारण ऐसे राष्ट्रद्रोही तत्त्वों का अब और अधिक तुष्टीकरण करना घातक होगा। सत्ताधारी और विपक्षी दलों के नेताओं को चाहिए कि वे उन शहीदों का स्मरण करें जिन्होंने अपना सर्वस्व होम कर देश को स्वाधीनता दिलाई है और उनकी स्मृति के आलोक में निश्चय करें कि सत्ता, स्वार्थ और दलीय हित राष्ट्र हितों की सीमा न लांघ जायें। यदि देश के राजनीतिज्ञों ने अब भी राष्ट्रहितों को महत्त्व देकर राष्ट्रद्रोही तत्वों के विरुद्ध मुखर आवाज न उठाई तो देश की अखंडता खतरे में पड़ जाएगी और आने वाली पीढ़ी इन राजनीतिज्ञों को कभी क्षमा न करेगी।

★

नींद छोड़ो

नींद छोड़ो, खड़े हो जाओ, युग को चुनौती दो।
नई धारा बहाने के लिऐ उठो, तैयार हो जाओ।
जो तुम्हारा मार्ग है, वह सर्वनाश की ओर जाता है।
उस पर चलना क्या जरूरी है ? मरने के लिए क्यों सामान जोड़ रहे हो।
रोटी कपड़ा और मकान जरूरी है।
पर केवल इन्हीं में डूब जाना, मनुष्य का काम नहीं है।
क्योंकि मनुष्य-पशु में कोई अन्तर है भेद इस को समझने का यतन करो।
जीवन का लक्ष्य जानो—समझो
रास्ता बदलो, जल्दी-बहुत जल्दी, क्योंकि जीवन का समय निश्चित है।
एक-एक पल मूल्यवान है। जो जा रहा है वह कभी लौटकर नहीं आएगा।
इसलिए तुम काम लो ऐसा धन जो तुम्हारा हो, केवल तुम्हारा।
तुम्हारे मन के मीठे-मीठे सपने पूरे हों, तुम जीवन भर हंसते हुए रह सको,
दुःख तुम्हारे पास भी न आए, इसके लिए तुम्हें जो प्रकाश चाहिए, वह ढूंढ़ो।
प्यार एकता और सभी को अपना समझना,
जीवन की लहरों पर मुस्काना सीख लो, जान लो, मेरे भाई
काम तुम्हारे आएगी बस तुम्हारी यही कमाई। —महात्मा वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब भाषायें देवनागरी लिपि में लिखी जायें

—डॉ. इन्द्रसेन जेतली

लेखक उच्च शिक्षा-प्राप्त विद्वान् है। भाषा समस्या के समाधान के लिए इनके विचार मौलिक हैं—चिन्तनीय हैं। — सम्पादक

जब पंजाब का विभाजन हो गया तो हमने सोचा कि अब पंजाबी को नागरी लिपि में भी पढ़ाया जाएगा। हमारे बच्चे पंजाबी की परीक्षायें नागरी लिपि में भी दे सकेंगे। पर हुआ क्या ? भाई जोधसिंह और श्री भीमसेन सच्चर मिले। उन्होंने मिलकर फैसला किया कि पंजाबी की सब परीक्षायें केवल गुरुमुखी लिपि में ही हों और हिन्दी की सब परीक्षायें (प्रभाकर प्रभृति) केवल नागरी में ही हों। क्या यह ठीक था ?

आज पंजाब की समस्या क्या है ? यही तो है। सिक्ख गुरुमुखी के अखबार पढ़ते हैं। भाई जोधसिंह और सिक्खों के नेता तो चाहते ही यह हैं कि हिन्दी और पंजाबी एक-दूसरे से अलग-अलग हों, चूंकि छोटी भाषा को बड़ी भाषा हमेशा खा जाती है। छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है। उन्होंने यह फैसला किया कि पंजाबी की सब परीक्षायें केवल गुरुमुखी में ही हों। आज भीमसेन सच्चर हमारे बीच नहीं पर उसी दिन से आज की पंजाब की समस्या की नींव इस एक छोटे-से कदम से खूब गहरी पड़ गई। देखने को तो यह कदम ऐसा लगता था कि श्रेयस्कर होगा, पर समझने वाला ही समझ सकता था कि यह कितने भयंकर परिणाम निकाल सकता है। यह कदम पंजाब से संस्कृत का नामोनिशान मिटा सकता है। हिन्दुओं और सिक्खों के बीच की खाई को समुद्र बना सकता है।

मैं पिछले विश्व युद्ध में मलाया में था। वहाँ जापानियों की विजय हो गई। हम सबके लिए यह आवश्यक हो गया कि यदि हम जापानियों से कोई फायदा उठाना चाहते हैं तो थोड़ी-बहुत जापानी जरूर सीख लें। मैंने भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जापानी सीखी। जब मैंने उनकी पुस्तकें उठाकर देखीं तो मैं दंग रह गया। मैंने उनमें देखा कि जापानी भाषा तीन लिपियों में लिखी जाती है। उनके नाम हैं—काताकाना, हीरागाना और कांजी। इनमें सबसे आसान लिपि काताकाना है। इसलिए स्कूल की प्रथम श्रेणी में जापानी विद्यार्थी काताकाना सीखता है। दूसरी श्रेणी में वह हीरागाना भी सीख लेता है। इसके बाद तीसरी श्रेणी से उसे कांजी सिखाई जाती है। कांजी जापान ने चीन से ली है। कांजी सिखाने के लिए पुस्तकों में कांजी के नीचे कांजी के अक्षरों का या शब्दों का उच्चारण हीरागाना में लिखा होता है। इससे वह विद्यार्थी हीरागाना की सहायता से कांजी आसानी से सीख लेता है। मैंने यह देखकर सोचा कि इस विधि से हम सारे भारत की भाषायें एक सूत्र में पिरो सकेंगे। मैं जब बाद में भारत आया तो यह बात मैंने पंडित भीमसेन विद्यालंकार से भी कही। वे हिन्दी का प्रेस चलाते थे। लाहौर में लाला जगतनारायण जी का प्रेस भी था—उनसे भी कही। पर किसी को अपील नहीं की। अगर हमारी मुद्रण विधि द्व्यक्षरी हो जाये तो मैंने कहा कि पंजाबी की पुस्तकें सारी की सारी द्व्यक्षरी हो जायेंगी। उनकी बिक्री इतनी अधिक होगी कि फिर केवल गुरुमुखी वाली पुस्तकें मुद्रित ही नहीं हो सकेंगी। व्यापारिकता उन्हें परास्त कर देगी। जो उपयोगी वस्तु होती है वह कम उपयोगी वस्तु को बिकने नहीं देती। द्व्यक्षरता से पंजाबी गुरुमुखी की मदद से नागरी लिपि को आप से आप सीख जायेंगे।

पर यह कौन करे? पंजाबी या गुरुमुखी वह क्यों पढ़ेगा? वह पंजाबी और गुरुमुखी तभी पढ़ेगा, जब उसके पेट पर चोट लगेगी। जब सब नौकरियाँ जो हिन्दी पढ़ाने वालों और संस्कृत पढ़ाने वालों को मिलती हैं केवल उन्हीं को मिलें कि जो दोनों लिपियों और दोनों भाषाओं को जानते हों।

मैंने यह भी सुझाव दिया कि गुरुमुखी के सब अक्षर (केवल पाँच-छह अक्षरों को छोड़कर) नागरी के अक्षरों में विलीन किये जा सकते हैं। जैसे पंजाबी का 'क' है, यह हमारे र की तरह है। पर इसे हम ऐसा बना सकते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं कि वह पजाबी का 'क' भी रहे और हमारी हिन्दी का 'क' भी बन जाये। जो पांच-छह अक्षर किसी भी तरह विलीन नहीं हो सकते अर्थात् जो हिन्दी अक्षरों जैसे नहीं बन सकते उन्हें दोहरे फोटो (टाइपों) में ढाल लिया जाये।

इसी तरह अनेकों सुझाव हैं जो अलगाव की सब कोशिशें नकारा कर सकते हैं। पर ऐसा तभी हो सकता है, जब हम व्यावहारिक हों।

यदि हम कहें कि हमारी भाषा एक होनी चाहिये तो यह काम की बात है। पर इसके लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए। कैसे हों? जितनी भी भाषा को अलहदा रखने वाली बातें हैं, उन्हें तोड़ो।

क्या हिन्दी केवल नागरी लिपि से पढ़ी जा सकती है? उद्देश्य तो हिन्दी पढ़ना है। इसे किसी भी लिपि मे पढ़ा जा सकता है। क्या हमारी सरकार इस उद्देश्य को और इसे कार्यान्वित करने के तरीके को समझती है? बिल्कुल नहीं समझती।

पंजाब के हर स्कूल में, जो पंजाब के किसी भी गाँव में है, संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती। क्यों? इसका कारण सीधा-सादा है। वह यह कि हमने संस्कृत को नागरी लिपि के बक्से में बंद किया हुआ है। इसे गुरुमुखी से भी पढ़ाओ। संस्कृत की परीक्षायें गुरुमुखी लिपि में भी लो।

जब पंजाब का विभाजन नहीं हुआ था तब सारे पंजाब में पंजाबी दो लिपियों द्वारा पढ़ाई जाती थी—एक गुरुमुखी लिपि में और दूसरे उर्दू लिपि में।

★

वस्तुतः सृष्टि चक्र का यह अटल सत्य है कि जीवन ही जीवन देता है। अग्नि से अग्नि प्रज्वलित होती है। प्राणों की शान्ति ही प्राण भरने में समर्थ होती है।

अपने मन में जिस बात की इच्छा जागे उसके लिए श्रम साधना की जाए तो इच्छा पूर्ण होती है। सत्य की सफलता भी साधना चाहती है, तभी कामनाएं फलती और फुलती हैं।

—महात्मा वेद भिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाभारत ऐतिहासिक ग्रंथ है

—योगेन्द्र

जब एक असत्य कहा जाता है तो उसके पश्चात् अनेक असत्य कहने की बाध्यता हो जाती है। पाश्चात्य विद्वानों ने अपनी द्वेष बुद्धि से आर्यों को भारतवर्ष में लगभग 2500 वर्ष पूर्व बाहर से आया माना। उनके इस कथन की असत्यता सिद्धि में महाभारत अनेक प्रमाण प्रस्तुत करता है। इन प्रमाणों से भयभीत पाश्चात्य विद्वानों ने जहाँ महाभारत रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्याश के अस्तित्व में ही संदेह का अपराध किया, वहीं महायुद्ध को एक काल्पनिक घटना बताया। वर्तमान में कुछ एतद्देशीय लोग भी भारत युद्ध को आध्यात्मिक दृष्टि से देखते हैं तथा इसे मनुष्य के अन्तःकरण में होने वाले दैवी तथा आसुरी प्रवृत्तियों का संग्राम मात्र मानते हैं।

वस्तुतः महाभारत युद्ध एक ऐतिहासिक घटना है, जिसने सारे भूगोल पर चक्रवर्ती राज्य करने वाले भारत का ऐसा विनाश किया कि वह उस विनाश-स्थिति से उबर न सका। उस युद्ध से आर्यों का ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैभव, कला, विज्ञान आदि रसातल को चला गया। आर्यावर्त वीरों से लगभग रिक्त हो गया। वेद-शास्त्रों के मर्मज्ञ न रहे। नाना मत-मतान्तर फैल गये। लगभग एक हजार वर्ष तक यवनों तथा अंग्रेजों की पराधीनता का नारकीय दुःख भारतीय प्रजा को भोगना पड़ा, जिसका अन्त सन् 1947 में परमात्मा की कृपा तथा भारत के भाग्योदय से स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ही हुआ। ऐसे महाभारत की ऐतिहासिकता में हम कुछ प्रमाण देते हैं।

भारतीय परम्परा के अनुसार इतिहास की निम्नलिखित परिभाषा भी है—

धर्मार्थकाम मोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्।
पूर्ववृत्तकथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते॥

जिसमें पूर्ववृत्त प्राचीन काल में घटित घटनाओं का वर्णन धर्म अर्थ, काम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और मोक्ष के उपदेश सहित किया गया हो, उसे इतिहास कहते हैं। इस दृष्टि से महाभारत ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह सच है कि वर्तमान महाभारत पुस्तक में अश्लील, भारतीय इतिहास को कलंकित करने वाली, असत्य और असम्भव कथायें भी हैं। परन्तु इन अनर्गल प्रक्षिप्त कथाओं की, जिन्हें छोड़ा जा सकता है, विद्यमानता मात्र से सारा महाभारत अनैतिहासिक नहीं कहा जा सकता।

पाणिनि के सूत्रों में महाभारत, वासुदेव, अर्जुन, युधिष्ठिर, कुन्ती, द्रोण और अश्वत्थामा आदि के नाम उपलब्ध हैं। इससे यह सिद्ध है कि उस समय भी महाभारत, पांडवों, यादवों आदि का इतिहास था।

पाणिनि अष्टाध्यायी से पूर्वकालिक छान्दोग्य उपनिषद् में देवकी पुत्र कृष्ण का वर्णन है। यह देवकी पुत्र कृष्ण महाभारत कालीन यादव कृष्ण ही था। इसी प्रकार प्राचीन आर्य साहित्य में श्रीकृष्ण का अनेक स्थलों पर उल्लेख होने से उनकी ऐतिहासिकता सिद्ध है।

भोजकृत 'संजीवनी' नामक ग्रन्थ का संकेत करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखते हैं कि "व्यास जी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच सहस्र छः सौ श्लोक युक्त अर्थात् सब दस सहस्र श्लोकों के प्रमाण भारत बनाया था। वह महाराज विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराज भोज कहते हैं कि मेरे पिता के समय में पच्चीस सहस्र और अब मेरी आधी उम्र में तीस सहस्र श्लोकयुक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक ऊंट का बोझा हो जायेगा।" इस ऐतिहासिक लेख से भी कृष्णद्वैपायन व्यास तथा उनके द्वारा रचित महाभारत की ऐतिहासिकता सिद्ध है।

यह सर्वमान्य सत्य है कि संवत् उसी का चलता है, जिसकी सत्ता रही हो, जैसे यह सृष्टि उत्पन्न हुई तो इसका संवत् चला जिसे सृष्टि संवत् कहते हैं। इसी प्रकार युधिष्ठिर संवत्, विक्रम संवत्, ईसवी संवत् आदि हैं। युधिष्ठिर संवत् का कालमान 5087 वर्ष है।

महाभारत नामक ग्रंथ में जो कथा वर्णित है वह आज तक ज्यों की त्यों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के सभी प्रांतों में जनश्रुतियों के रूप में विद्यमान है। यदि महाभारत युद्ध का अस्तित्व नहीं होता तो यह जनश्रुति सर्वत्र क्यों मिलती ?

महाभारत में नकुल की पश्चिम दिग्विजय में रोहीतक, शैरिशक और महेत्थम् का वर्णन है, जो इन्द्रप्रस्थ के पश्चिम में आज भी विद्यमान है। महाभारत का युद्धस्थल कुरुक्षेत्र तो आज तक उसी नाम से प्रसिद्ध है। युद्ध के अन्तिम दिन जब दुर्योधन तालाब में छिपा था और उसे ढूंढ़ने के लिए युधिष्ठिर कृष्ण आदि गये थे वह स्थान ढूंढू जोहड़ और ईकश आज तक हैं। संस्कृत के 'ईश दर्शने' धातु से विकृत होकर यह 'ईकश' शब्द बना है। पाण्डु के नाम से पाण्डु पिण्डारा और पाण्डुरख भी विद्यमान हैं, जो पाण्डवों की सत्ता के द्योतक हैं। महाभारत के इन्द्रप्रस्थ से जो वर्तमान में दिल्ली कही जा रही है, तो सभी परिचित हैं। द्रौपदी की जन्मभूमि अहिच्छत्र (पांचाल प्रदेश) आज भी खंडहर रूप में विद्यमान है।

कृष्णद्वैपायन व्यास के ऐतिहासिक अस्तित्व का प्रमाण महाभारत के अतिरिक्त व्यास रचित उत्तर मीमांसा (वेदान्त दर्शन) तथा योगदर्शन पर उनका भाष्य वैसे ही प्रस्तुत कर रहे हैं, जैसे सृष्टि की विद्यमानता ईश्वर की सत्ता को।

आइये, हम अपने अतीत गौरवमय इतिहास का सिंहावलोकन करें। परकीयों को उसे लीजेन्ड तथा मिथ कहने दो। किन्तु कृपा करके तुम तो अपने पूर्वजों को काल्पनिक पुरुष (Mythical Personalities) मत कहो न ही उनके उद्योगों और व्यवहारों को अनैतिहासिक। हो सके तो वाल्मीकि रामायण, व्यासकृत महाभारत, उपनिषद्, वायु, मत्स्यादि पुराण, चाणक्यकृत अर्थशास्त्र, सत्यार्थ प्रकाश, पं. भगवद्दत्तकृत भारतवर्ष का बृहद् इतिहास पढ़ें। हमें सृष्टि उत्पत्ति तक भारतवर्ष का इतिहास साक्षात् हो जायेगा। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उग्रवाद के आतंकों से खालिस्तान नहीं बन सकता

राष्ट्र एकता को खंडित कर पृथक् वितान नहीं तन सकता।
उग्रवाद के आतंकों से खालिस्तान नहीं बन सकता।
अपनी बुद्धि गंवाकर जिसने नासमझी का काम किया है।
उसके ही नापाक इरादों को हमने नाकाम किया है।
कायरता से इस दुनिया में कहो वीरता कब हारी है?
धन्य पंचनद भूमि जहाँ से भगतसिंह की फिर बारी है।
धीर-वीर पंजाब हमारा भारत की रक्षा का साधक।
राष्ट्र एकता अखंडता में बने हुए हो क्योंकर बाधक?
माता तुल्य मही पाकर के भारत मां के लाल कहाओ।
भाई की ही हत्या करके मत माता का दूध लजाओ।
खानपान है अलग-अलग पर देश मान है एक तुम्हारा।
सिंह और सरदार बने तुम देश-धर्म है सबसे प्यारा।
पावन परम राष्ट्र की धारा से तुम अपना नाता जोड़ो।
बदला लेने वाले दुश्मन का बहकावा-चक्कर छोड़ो।
है अजेय यह धरा तुम्हारी राष्ट्र एकता बुला रही है।
प्रबल संघटन की क्षमता से पृथक्वाद को सुला रही है।
कसम तुम्हें है दस गुरुओं की मानबिन्दु मत मिटने पाये।
दोस्त बने दुश्मन के छल से कहीं न भारत पिटने पाये।

— डॉ जगदीश नारायण सिंह 'निर्भीक'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नोबेल का अद्भुत दान

—सुकुमार राय

सन् 1013 में जिस दिन यूरोप से खबर आई कि बंगाली कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार दिया गया है, तब देश भर में उत्साह की एक तरंग उठी। सब पूछताछ करने लगे, 'नोबेल प्राइज है क्या चीज ?'

अल्फरेड बेनहार्ड नोबेल स्वीडन देश के एक रासायनिक विशेषज्ञ थे। मरते समय लगभग सवा अरब सम्पत्ति दान कर गये। उन सबके सम्मान के लिए जो विज्ञान जगत् में नई खोज करते हैं, श्रेष्ठ साहित्य की रचना करते हैं, और विश्व में शान्ति के लिए काम करते हैं। दरअसल ऐसे विद्वानों और वैज्ञानिकों के सम्मान के लिए इस सम्पत्ति की आय का कई लाख रुपया सम्मान और श्रद्धा सहित नोबेल पुरस्कार के नाम से दिया जाता है। कोई भी व्यक्ति यह सम्मान पा सकता है। मगर विज्ञान, साहित्य या शान्ति के क्षेत्र में कोई ऐसा काम किया जाना जरूरी है जिसे साल का श्रेष्ठ काम समझा जा सके।

इस नोबेल नाम के आदमी की जीवन कहानी बड़ी अद्भुत है। दुर्बल और बीमारी से घिरा जर्जर शरीर। मगर शौक अद्भुत। एक तरफ तो वे बेहद डरपोक, निरीह और भले व्यक्ति थे, मामूली से दुःख-कष्ट से उत्तेजित और विचलित हो जाते थे लेकिन दूसरी तरफ उनके मन में इतनी असाधारण शक्ति थी कि विपत्ति और बीमारी में भी वे शान्त भाव से काम करते रहते। जीवन भर बम और बारूद के मसालों से तरह-तरह के परीक्षण करते रहे। इन परीक्षणों में सारा समय जान हथेली पर रखकर चलना पड़ता है, यह भी जानते थे और यही नहीं बल्कि उन्हें उन तमाम लोगों के बारे में भी मालूम था जिनकी जानें इन परीक्षणों ने ले ली थीं। लेकिन यह चिन्ता उन्हें निराश नहीं कर सकी।

अल्फरेड बेनहार्ड नोबेल के पिता रूस में गोलाबारूद के कारखाने में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारीगर थे। बालक नोबेल उनकी सहायता किया करता। बारूद युद्ध में ही इस्तेमाल होता ऐसा नहीं था बल्कि बारूद का एक बड़ा काम पहाड़ तोड़ना था। रेलवे लाइनें बिछाने और रास्ते बनाने, सुरंग खोदने के लिए कई बार पहाड़ तोड़ने पड़ते हैं। कुल्हाड़ी से खुदाई करने में बहुत समय और मेहनत लगती है। साधारण बारूद से यह काम सरलता से हो जाता है लेकिन कभी-कभी बारूद से ज्यादा ताकतवर चीज के इस्तेमाल की जरूरत होती है। नोबेल के जमाने में भी कुछ लोगों को ऐसी चीजों की जानकारी थी, जिनका असर बारूद से भी ज्यादा भयानक होता था। लेकिन ये सारी चीजें इतनी आसानी से फट जाती थीं कि इनका इस्तेमाल करने का साहस किसी को न होता। जरा-सी गरमी पाकर या जरा-सी आँच लगने पर या धक्का लगने पर घर मकान सब ढेर हो सकते थे। नोबेल ने डाइनामाइट की खोज करके ऐसी सारी असुविधायें दूर कर दीं। डाइनामाइट की शक्ति साधारण बारूद से आठ गुना ज्यादा थी। इसलिए साधारण तोड़फाड़ के लिए उसका इस्तेमाल करने में कोई डर नहीं था।

डाइनामाइट के अलावा भी उन्होंने कई तरह के बारूद क मसालों का आविष्कार किया। आजकल तोपों में बारूद भरा जाता है। उसकी भी खोज नोबेल ने ही की थी। इतनी भयानक चीजों का व्यापार करने के लिए तमाम देशों में बड़े-बड़े कारखाने लगाये और लाखों रुपये कमाये। एक बार एक कारीगर की असावधानी से उनका पूरा कारखाना जल गया। बहुत-से लोग मर गये तथा लाखों का नुकसान हुआ। लेकिन इस पर भी नोबेल का उत्साह कम नहीं हुआ। उन्होंने फिर से कारखाना लगाया और सावधानी बरती कि ऐसी दुर्घटनायें फिर न हों। वह कारखाना आज भी चल रहा है।

अगर कारखाने के भीतर घुस कर देखोगे तो समझ सकोगे कि 'सावधान होना' किसे कहते है। जहाँ-जहां विपत्ति की संभावना है, वहां चारों तरफ मिट्टी के पहाड़ जैसी दीवारें उठा दी गई हैं। कमरे के भीतर की दीवारें इकहरी फर्श पर मोटे-मोटे बोरे बिछाये गये हैं। काम करने वालों के पैरों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में कपड़े के जूते। भीतर भी किसी तरह की आवाज करने की मनाही है। वहाँ आग जलाना तो दूर, भीतर दियासलाई ले जाना तक मना है। कोई भी लोहे की चीज ले जाना मना है। इस तरह कई नियमों को ध्यान में रखकर कारखाना खोला गया। इन सब के साथ ही नोबेल की सबसे बड़ी चिंता थी कि विश्व में शांति कैसे कायम की जाए। ज्ञान और आनन्द के विस्तार के लिए क्या किया जाए। और इसी चिंता का नतीजा है यह नोबेल पुरस्कार।

लेकिन केवल यही दान ही नोबेल का सर्वश्रेष्ठ दान नहीं है। विश्व को उन्होंने डाइनामाइट जैसे जो रासायनिक अस्त्र दिए हैं उनका भी कम महत्त्व नहीं हैं। अगर युद्ध की बात न की जाये तो बड़े-बड़े काम हो रहे हैं। उनमें से बहुत-से नोबेल के इसी अस्त्र के कारण सहज और सरल हैं। पत्थर हटाकर रास्ते बने हैं, पुल बने हैं, नहरें काटकर, नदी के किनारे तोड़कर जल-स्रोत को कई तरफ ले जाना और समुद्र के साथ समुद्र जोड़कर नए-नए जलमार्ग बनाए गए हैं। खानें खोदने का काम आसान हो सकता है।

नैपोलियन जब इटली की विजय पर निकले तब उनकी फौज ने कहा 'असंभव काम।' इतनी भयंकर सर्दी में सेना सहित एल्प्स पहाड़ कैसे पार करेंगे। नैपोलियन का जवाब था। 'एल्प्स पहाड़ नहीं रहेगा यानी एल्प्स पहाड़ हमें रोक नहीं सकेगा।' नैपोलियन एलप्स पार कर निकल गए। उसके लगभग सौ साल बाद जब एल्प्स पहाड़ तोड़कर फ्रांस, इटली और स्विट्जरलैंड के बीच रेल मार्ग बनाया तब नोबेल भी कह सकते थे 'एल्प्स पहाड़ नहीं रहेगा लाखों युगों से बने पहाड़ एक जर्जर तथा दुर्बल शरीरवाले आदमी की बुद्धि के सामने टूट-टूटकर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी की जगह हिन्दी को प्रतिष्ठापित किया जाये

—नवीन खन्ना

हिन्दी दिवस के अवसर पर पिछले वर्ष जो समाचार विशेष रूप से उभर कर आया वह था तामिलनाडु में हिन्दी का विरोध। गृह मंत्री को बार-बार कहना पड़ा कि हिन्दी लादी नहीं जाएगी।

दूरदर्शन पर हिन्दी दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में एक विद्वान् ने बहुत सटीक बात कही। हिन्दी की पदयात्रा बहुत सफल हो रही है, लेकिन हिन्दी को रथ पर कोई सवार नहीं होने दे रहा है। उस विद्वान् का स्पष्ट संकेत था कि आम बोलचाल की भाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति अत्यन्त संतोषजनक है लेकिन सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में हिन्दी की वर्तमान स्थिति संतोषप्रद नहीं है। हिन्दी को आम बोलचाल की भाषा बनाने का श्रेय मुख्य रूप से सिनेमा और दूरदर्शन को जाता है। लेकिन हिन्दी को सरकारी सिंहासन से ठेलने के लिए मुख्य रूप से अंग्रेजी टाइपराइटर जिम्मेदार हैं। जब तक सरकारी दफ्तरों में अंग्रेजी टाइपराइटर मौजूद रहेगा, हिन्दी कभी भी सरकारी भाषा का रूप नहीं ले पाएगी।

हम तमिलनाडु में हिन्दी नहीं लादना चाहते, लेकिन तमिल जनता चाहती है कि वहां की सरकारी कामकाज की भाषा तमिल हो। वहां की सरकार ने सभी अधिकारियों को तमिल में ही हस्ताक्षर करने की हिदायत दी है, लेकिन वहां के अंग्रेजी प्रेमी इसका विरोध करने लगे। यह भी अच्छा आचार है। तमिलभाषियों और तमिल प्रेमियों को पता चल रहा है कि तमिल को खतरा हिन्दी से नहीं बल्कि अंग्रेजी से है।

इसी बीच सितम्बर के समाचारपत्रों में मध्यप्रदेश का सरकारी टेंडर विज्ञापन प्रकाशित हुआ है और उसमें स्पष्ट रूप से लिखा है कि सभी प्रकार का पत्रव्यवहार केवल अंग्रेजी में होना चाहिए। मुरैना के सिंचाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभाग का यह विज्ञापन सिंचाई योजना के लिए कितना लाभप्रद होगा, यह कहना कठिन है, लेकिन इसने कई लोगों को अवश्य डुबो दिया है। कइयों को शर्म से डुबो दिया और कइयों को दुःख से भिगो दिया है। कहां है हिन्दी अधिकारी मध्य प्रदेश के ? खैर छोड़िये उन्हें, सरकारी नौकर जो ठहरे। लेकिन हमने सुना है सेठ गोविन्द दास मध्यप्रदेश में ही कहीं रहते हैं। अरे साहब, क्यों मजाक करते हो ? सेठ गोविन्ददास जो तो कब के स्वर्ग सिधार गये। जो हो तभी तो यह हाल हुआ है। तो क्या मध्यप्रदेश में हिन्दी का कोई सेवी नहीं बचा, कोई प्रेमी नहीं बचा। खलबली की आवाजें मुझे स्पष्ट सुनाई दे रही हैं। हजारों-लाखों नौजवान गुस्से से भर कर मुझे देख रहे हैं। कोई-कोई तो मेरी तरफ बढ़ भी रहा है। आपने कैसे कह दिया ? आपने कैसे लिख दिया ?

उठिए और बदला लीजिए। मध्यप्रदेश में ही नहीं, उत्तर प्रदेश, हरयाणा, बिहार, दिल्ली और राजस्थान का नवयुवक शोर मचा रहा, चिल्ला रहा है, हम हिन्दी को उसका स्थान दिला कर रहेंगे। आइये, अभी से तैयारी करें। आगामी छब्बीस जनवरी यानी 1988 का गणतन्त्र दिवस, इस तारीख को हम निश्चित कर लें। यह हिन्दी को उसका स्थान दिलवाने की आखिरी लड़ाई होगी। हर दफ्तर से कितने अंग्रेजी के टाइपराइटर हम हटवा सकते हैं—इस बात पर हमारी विजय निर्भर करेगी।

लेकिन यह सब कैसे ? कहाँ से हम सेठ गोविन्द दास लायेंगे ? डाक्टर राममनोहर लोहिया का रोल कौन अदा करेगा जो अमेरिका में जाकर भी हिन्दी में बोले ? डाक्टर बी. वी. केसकर कौन बनेगा जो सत्ता में रह कर बिना किसी की परवाह किए हिन्दी की सेवा करते रहे। आचार्य रघुवीर कहां से लाएं जो हिन्दी सेवा के लिए सत्ता से अलग हो गए।

लेकिन यह क्या ! हजारों हाथ उठ खड़े हुए हैं, रायपुर से और जबलपुर से, इलाहाबाद से और बनारस से, मेरठ से और झांसी से, अजमेर से और बीकानेर से, हिसार से और चंडीगढ़ से ! लगता है कि कल का नेता यानी आज का युवक यह ठान बैठा है कि हम हिन्दी बोल कर ही आगे बढ़ेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंत्रियों को अंग्रेजी में बोलते देख कर इन प्रदेशों के युवकों के हृदय में एक ग्रन्थि-सी उत्पन्न हो जाती है—हमें अंग्रेजी इतनी नहीं आती। क्या हम कभी उच्चपदासीन नहीं बन पायेंगे ? क्यों नहीं बन पायेंगे ? भारत के लोकतंत्र को करीब से देखने वाले और इसका विशलेषण करने वाले एक बात से सहमत हैं कि कांग्रेस की विकल्प सदा नई पार्टी ही बनी है। जनता पार्टी, तेलगुदेशम् और असम गण परिषद् इसके उदाहरण हैं। हिन्दी भाषी प्रदेशों की जनता रोष से भरी पड़ी है लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि अभी तक भाषा के सवाल को प्रमुख रूप से सामने रख कर कोई पार्टी सामने नहीं आई।

चाहे कानपुर हो अथवा लखनऊ, चाहे पटना हो या हजारीबाग, चाहे जयपुर अथवा भोपाल, यहां का युवक जाग उठा है। वह अब सहेगा नहीं कि दो प्रणालियों की पढ़ाई चले। अमीरों के बच्चे अंग्रेजी में शिक्षा पाए और मध्यम वर्ग के बच्चे हिन्दी में शिक्षा लें। सभी बच्चे एक ही प्रकार की शिक्षा लें, एक ही प्रकार के स्कूलों में शिक्षा पाएंगे।

नहीं तो क्या होगा ? एक पत्रकार ने मध्यमवर्गीय मित्र को सलाह दी कि तुम्हारा बच्चा अंग्रेजी स्कूल में तो पढ़ा नहीं ! इसे साइंस लेकर दोगे तो मजदूर (छोटा-मोटा इंजीनियर) बनेगा। आर्ट लेकर दोगे तो क्लर्क बनेगा। इसे ऊंचे वर्ग में सम्मिलित करना था तो इसे कान्वेंटस्कूल में पढ़ाते, अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा दिलाते।

लेकिन नहीं, अब हम नहीं पछताएंगे। दो प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले अपनी इच्छा हम पर अब और अधिक नहीं लाद पाएंगे। हा-हा-हा हंस रहे हैं। बन्द कमरों में गिलास टकराये जा रहे हैं। बाहर किसान हल चला रहे हैं, मजदूर मेहनत कर रहा है, इंजीनियर धूप में खड़ा सर्वेक्षण कर रहा है। इनके बच्चे अब बाहर नहीं खड़े रहेंगे। सत्ता के बीच आयेंगे। अपनी भाषा के सहारे वे भी ऊंचे पदों पर पहुंचेंगे। हर शहर में ज्योति प्रज्वलित हो उठी है। समिधा को ढूंढ़िये और हिन्दी को उसके स्थान पर बैठाने का यज्ञ प्रारम्भ करिए। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विषम समस्यायें सुलझाने के लिए अविलम्ब कार्रवाई करें

श्री विशनचन्द्र सेठ का प्रधान मंत्री के नाम खुला पत्र

वृन्दावन(जिला मथुरा)। हिन्दूमहासभा के वयोवृद्ध नेता और भूतपूर्व संसद् सदस्य श्री विशनचन्द्र सेठ ने प्रधान मंत्री श्री राजीव को भेजे गये अपने खुले पत्र में उनका ध्यान देश की अनेक ज्वलन्त समस्याओं की ओर खींचा है।

पत्र में प्रधान मंत्री से अनुरोध किया गया है कि वे इन मामलों पर अविलम्ब कार्रवाई करने की कृपा करें।

सेठ जी ने लिखा है कि मैं कुछ महत्वपूर्ण बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने हेतु यह खुला पत्र भेज रहा हूं। विश्वास है कि इस महत्त्वपूर्ण पत्र पर आप विचार करेंगे—

1. आपकी नवीन शिक्षा नीति में धार्मिक, नैतिक शिक्षा, भारतीय संस्कृति, सदाचार आदि की प्रतिष्ठा करने वाली संस्कृत भाषा को हटाया जा रहा है।

देववाणी संस्कृत और उसकी सहोदर भाषाओं में मानव सुख के जो भी शब्द, स्वर निकलना संभव है, उन्हें ज्यों का त्यों लिखने की शक्ति है। अन्य भाषाओं में यह बात नहीं।

एक से नौ तक के अंक, जिन्होंने मानव मात्र के सभी कार्य-कलापों को अपने में बांध रखा है, भारत की देन हैं। सारे संसार की भाषाओं में आवश्यकता पर नये शब्द गढ़े जाते हैं। संस्कृत में नये शब्दों को पूर्णतया भावानुकूल बनाने का अद्भुत विधान है। कम्प्यूटर विशेषज्ञों ने सिद्ध कर दिया है कि कम्प्यूटर अन्य भाषाओं की अपेक्षा संस्कृत को अधिक शीघ्रता ग्रहण करते हैं व कम्प्यूटर के लिए संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है। सारे संसार के मनीषी मानते हैं कि संस्कृत जैसी परिपूर्ण एवं परिष्कृत भाषा और कोई नहीं। अन्य सभी भाषायें उसके सामने बौनी हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप यह स्पष्ट करने की कृपा करेंगे कि कौन से अधिकार से आप संस्कृत को नवीन शिक्षा नीति से हटाने का प्रयास कर रहे हैं, जब कि उर्दू जिसका सम्बन्ध और क्षेत्र एक छोटे-से समुदाय तक सीमित है और वह भारतीय जन-जीवन के लिए आवश्यक भी नहीं है, आपके शासन-तन्त्र ने मान्यता दी है।

विभिन्न प्रकार के भारतीय साहित्य को मुसलमानी शासनकाल में बड़ी मात्रा में जलाया गया था। फिर भी हमारी जो धरोहर बची है, उसें मानव मात्र अपने जीवन काल में पढ़ नहीं सकता। संसार के जितने भी शिक्षा-सम्बन्धी विषय हैं, सभी पर विशाल साहित्य आज भी उपलब्ध है। वेद-पुराण, दर्शन, स्मृति, गीता, महाभारत, रामायण आदि असंख्य ग्रन्थ जिन पर हिन्दू मात्र का जीवन अवलम्बित है, सभी संस्कृत में हैं। पर ऐसा दीखता है कि हिंदू धर्म, जाति, संस्कृति को हमारे प्रधान मंत्री महोदय जी नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।

सारे देश में ईसाइयों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में बाइबिल पढ़ाना और ईसाई धर्म का प्रचार करना अनिवार्य है। क्या आप उसे हटाने की कल्पना करने में समर्थ हैं? कृपया जनता के समक्ष यह स्पष्ट करने की कृपा करें कि आप यह दुःखद अनीति अपनाने जा रहे हैं जब कि संस्कृत अथवा भारतीय शिक्षा में आदर्श नागरिक बनाने, धर्म एवं चरित्र के निर्माण का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

2. भारतीय न्यायपालिका में कल्पनातीत विलम्ब एवं यथोचित दण्ड के अभाव से भारतीय जन-जीवन बुरी तरह से नीचे गिरा एवं गिर रहा है।

आज भारतीय शासन की यह दयनीय स्थिति बन गई है कि सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्टों एवं नगरों के न्यायालयों में अनेक वर्षों से मुकद्दमे पड़े हैं। कुछ तो 100-50 वर्ष पुराने भी हैं; जिनमें वादी, प्रतिवादी, वकील, न्यायाधीश सभी स्वर्गवासी हो गये हैं।

सामान्य जनता भयहीन बन चुकी है। सभी जानते हैं कि थोड़ा-सा धन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देने मात्र से ही केस की सुनवाई वर्षों तक रोकी जा सकती है, निर्णय तो दूर की बात है। उसी के फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की असंख्य अनर्थकारी घटनायें सारे देश में हो रही हैं।

सबसे बड़ी घटना जिसने सारे देश एवं संसार को प्रभावित किया, यह है कि आप की पूज्या माता श्रीमती इन्दिरा गांधी के हत्यारों को फांसी नहीं दी जा सकी। इतने महत्त्वपूर्ण केस की यह स्थिति है तो सामान्य जनता के केसों की स्थिति को सहज ही समझा जा सकता है। राष्ट्रव्यापी विभिन्न अनर्थकारी घटनाओं को रोकने एवं देश की नैतिकता व चरित्र को सुरक्षित रखने हेतु हमें नवीन दण्ड विधान बनाने की आवश्यकता है। उसी के भय से हम देश को सुरक्षित बना सकेंगे।

3. देश का नैतिक पतन इस सीमा तक पहुंच गया है कि अब भारत में छोटे, नये नोट, सिक्के, रैवेन्यू स्टैम्प छोड़ साधारण पोस्टेज तक अधिक मात्रा में चाहने पर बिना ब्लैक के मिलना सम्भव नहीं।

पूरे भारत में सिक्कों का लम्बे समय से अभाव चल रहा है। हमारा विशाल शासन साधारण सिक्के बनाने में भी समर्थ नहीं। विदेशों को उनके बनाने का आर्डर दिया गया है। इन घटनाओं ने हमारे देश की अयोग्यता को उजागर किया है और यह सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि क्या भविष्य में हमारे करैन्सी नोट और स्टैम्प भी विदेशों में छपेंगे?

4. ईश्वर, धर्म, समाज से डरने वाले माननीय सज्जनों को छोड़ बहुधा शासकीय एवं समाज के घटक कार्य की गरिमा के अनुपात से खुलकर नित्य बिक रहे हैं। उससे राष्ट्रीय चरित्र एवं अर्थ की अनहोनी दैनिक हानि हो रही है। इस दुखःद वातावरण में केन्द्रीय या राज्य सरकारें कितना भी प्रत्यक्ष-परोक्ष ड्यूटी टैक्स, सैल्स-टैक्स बढ़ाते जायें पर जब हमारे सामूहिक चरित्र में इतने छिद्र हो गये हैं तो शासकीय घाटों के बजट पूरे होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

5. मैं तीन प्राइम मिनिस्टरों के साथ संसद् में रहा हूँ। मैं अनुभव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करता हूँ कि भारतीय शासन की प्रतिभा, शोभा एवं प्रभाव शनैः-शनैः क्षीण होते जा रहे हैं।

आज संसद् और विधानमंडलों में जिस प्रकार शोभा और प्रतिष्ठाहीन वातावरण बनता जा रहा है, संसार के अन्य किसी सभ्य देश में सुनने में नहीं आता। राष्ट्रपतिजी एवं राज्यपालों की अवहेलना सामान्य घटना बन गई है।

विरोधी पक्ष सदन-त्याग, धरना, अशोभनीय व्यवहार कर भारत की गरिमा को नष्ट करते हैं। जिस देश के विधान निर्माता, माननीय सांसद तथा विधायक सामान्य शिष्टाचार का निर्वाह नहीं करते, फिर उनके बनाये विधान को देशवासी कितना आदर देंगे, सहज समझा जा सकता है।

सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि जिन राज्यों में कांग्रेस विरोधी पक्ष में बैठती है वहाँ उसके कृत्य भी उसी प्रकार से दोषपूर्ण हैं। फिर किस नैतिक आधार पर अन्य दलों से कुछ कहा जाये ?

6. नेहरूजी के समय में राज्य-सभा की उपाध्यक्षा श्रीमती मारगरेट अल्वा एक मात्र ईसाई थीं पर आपके शासन में महत्त्वपूर्ण पदों पर ईसाई सज्जनों को बिठाकर एक नई समस्या भारत के सामने खड़ी की जा रही है। अभी तक सारा देश कांग्रेस की मुस्लिमपरस्त नीति से ही अपमानित एवं त्रस्त था। अब वही स्थिति ईसाई वर्ग की होने जा रही है।

सर्वविदित है कि भारत मे ईसाइयों द्वारा संचालित अनेकों शिक्षा संस्थाओं, अस्पतालों आदि हेतु अपरिमित मात्रा मे धन व सामग्री विभिन्न देशों से भारत मे आती है। उनका मौलिक उद्देश्य मानव सेवा के स्थान पर हमारे देश की अशिक्षित एवं निर्धन जनता को ईसाई बनाने का अन्तर्राष्ट्रीय कुचक्र है। धर्म परिवर्तन का कार्य पूरे भारत में बढ़ रहा है। इस स्थिति की भयंकरता देख बुद्धिजीवी स्पष्ट कह रहा है कि यदि इस कुचक्र को न रोका गया तो हिन्दू-प्रधान भारत एक ऐसे संकट में फंस जायेगा जिससे निस्तार सम्भव न होगा।

जनसंख्या निरोध के सारे विधान हिन्दूमात्र पर ही तो लगे हैं। मुसल-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मान व ईसाई इसका समूहगत खुला विरोध कर रहे हैं पर हमारे शासन के कर्णधारों को सैक्युलर भावना की दुःखद दुहाई के अतिरिक्त कुछ भी करते नहीं बनता। चीन में भारत से अधिक जनसंख्या है। उनके देश में भी जन-संख्या निरोध चल रहा है। वहाँ ईसाई और मुसलमान भी पर्याप्त मात्रा में रहते हैं। पर कोई भी नागरिक विधान का अपमान करने का साहस नहीं कर सकता। हमारे देश की विषम स्थिति शासन द्वारा स्वयं बनाई गई है।

7. भारत 70-75 करोड़ जनसंख्या का विशाल देश है पर हम 8-9 करोड़ के जापान के समक्ष उद्योग में बहुत पीछे हैं। अमेरिका के बाद जापान दूसरे नम्बर पर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण कर रहा है। वहाँ की जनता अपने राष्ट्रीय व निजी कर्तव्य को पूरा करती है। साथ ही शासन उद्योग बढ़ाने में सहायक है।

इसके विपरीत भारतीय शासकों ने उद्योगों व उनके संचालकों को पंगु बना दिया है। इस सन्दर्भ में हमें राष्ट्रीय स्तर पर विचार करना पड़ेगा, ताकि हमारा देश जनसंख्या के आधार पर औद्योगिक क्षेत्र में संसार के समक्ष अग्रणी बन सके।

8. उत्तरप्रदेश में नगरपालिकाओं के चुनाव नहीं कराये जा सके। साथ ही कांग्रेस के निजी चुनाव भी कराने का साहस नहीं हो पाता। कारण सर्व-विदित है कि जो सदस्य संख्या घोषित की गई है उसमें 80 प्रतिशत से अधिक बोगस हैं। चुनाव होने पर विभिन्न झगड़े होने के साथ काफी कुछ बदल जायेगा।

हमारे माननीय प्रधानमन्त्रीजी को विदेशों के जन-जीवन व शासन पद्धतियों का काफी परिचय है। क्या आप बताने की कृपा करेंगे कि इस प्रकार की धांधली किसी अन्य सम्माननीय देश में होना सम्भव है? जब हमारा शासन अनिवार्य कार्यक्रमों को टालने में संकोच नहीं करता तो फिर क्या उसके द्वारा देश की विभिन्न समस्यायें सुलझ पायेंगी? यह प्रश्न आज देश के समक्ष उपस्थित है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

9. हमारे राष्ट्र का सर्वे-सर्वा अपने बच्चों की सुरक्षा करने में सक्षम नहीं तो उन्हें मास्को पढ़ने भेजा गया है। क्या वे भारत जैसे विशाल देश की सुरक्षा करने में सफल होंगे?

यह भी कहा जाता है कि मास्को में उनकी जातीयता ईसाई लिखाई गई है। कभी स्वप्न में भी देश में किसी को कल्पना न थी कि हिन्दू धर्म-प्रधान भारत का सर्वे-सर्वा ईसाई धर्मावलम्बी बनेगा।

10. मैं आपका ध्यान इस ओर भी दिलाना अपना कर्तव्य मानता हूं कि आपके कार्यकाल में अनेको बार मन्त्रियों एव महत्त्वपूर्ण पदों के अधिकारियों को सहसा हटाना अथवा उनकी पदोन्नति करना सामान्य हो गया है। आपकी माताजी के समय तक इस प्रकार की दूरदर्शिताहीन जल्दबाजी का कोई उदाहरण देखने को नहीं मिला। पर आपकी नवीन परम्परा के अन्तर्गत विश्वनाथ प्रतापसिंहजी को, जो अत्यन्त सफल वित्त मन्त्री थे, हटा कर रक्षामन्त्री बनाया गया और ऐसा वातावरण बनाया गया कि उन्हें पद-त्याग करना पड़ा।

उन्होंने अपने शासन के विरुद्ध कोई वक्तव्य न देकर एक उज्ज्वल आदर्श समाज के समक्ष उपस्थित किया। इसके सम्बन्ध में मुझे केवल इतना ही निवेदन करना है कि इस कृत्य आपकी राष्ट्रीय छवि को ने निश्चित ही धूमिल किया है।

मैंने अपने पत्र में जिन बातों की ओर आपका ध्यान खींचा है, उन पर आवश्यक कार्रवाई अविलम्ब करने की कृपा करें।

संस्कृत की अवहेलना :
श्री नरसिंहराव का शिष्ट मडल को आश्वासन

13 जून नई दिल्ली मानव संसाधन मंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव ने संस्कृत कि सस्कृत की अवहेलना न हुई है, न की जएगी और न ही संस्कृत के किसी अध्यापक को हटाया जाएगा। सन् 1986 से जो शिक्षा नीति व्यवहार में है और उसमें संस्कृत को जो स्थान मिला हुआ है उसमें सरकार ने कोई परिवर्तन नहीं किया। नई शिक्षा नीति में संस्कृत को उचित स्थान देने के हम सारे देश के विद्वानों से विचार विनियम करके रचनात्मक पग उठाने के लिए कृत-संकल्प हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साम्प्रदायिक दंगे और बुखारी का विषवमन

—अशोक गौड़

हाल ही में दिल्ली और मेरठ में जो साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं, उनके पीछे दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम बुखारी का हाथ है। यह स्पष्ट होता जा रहा है कि दोनों स्थानों में दंगे पूर्वनियोजित थे। इसमें अब कोई शक नहीं रहा। मेरठ और दिल्ली के दंगों का एक कारण शाही इमाम द्वारा दिये गये भड़कीले भाषण भी हैं।

दिल्ली के एक साइकल सवार और एक स्कूटर सवार की मामूली कहा-सुनी ने अफवाहों के माध्यम से उग्र रूप धारण कर लिया और देखते ही देखते वहाँ मुसलमानों की एक भारी भीड़ इकट्ठी हो गई और शुरू हो गया हिंसा का तांडव नृत्य। इन छोटी घटनाओं से इतना कहर बरपा न होता अगर शाही इमाम बुखारी ऐसे भड़कीले भाषण देकर मुस्लिम जनता में साम्प्रदायिकता का जहर न भरता।

तभी तो इमाम बुखारी का जरा-सा भी संकेत मिलते ही सब मस्जिदों से ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के माध्यम से खुदा के बन्दों को घर से निकलने को कहा गया और देखते ही देखते लगभग तीन हजार आदमी बन्दूक, भाले, फरसे, बर्छियाँ और पेट्रोल के कनस्तर व हाथ में मशालें लिये निकल पड़े। ये सब तैयारियाँ एक दिन में नहीं हो सकतीं। मेरठ और दिल्ली के दंगे एक खुली बगावत हैं, देशद्रोह हैं और यह सब शाही इमाम बुखारी के नेतृत्व में हो रहा है। दिल्ली और मेरठ के दंगों का दोषी इमाम बुखारी को ठहराया जाना उचित है।

मेरठ और दिल्ली के दंगों से ऐसा लगता है कि यह किसी बड़ी घटना का रिहर्सल है। पिछले 20 मार्च को इमाम बुखारी ने मुसलमानों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विशाल रैली का दिल्ली के बोट क्लब पर आयोजन किया था। उस रैली में जिस प्रकार के भाषण दिये गये वे स्पष्ट रूप से देश में अराजकता फैलाने के गहरे षड्यंत्र थे। इस रैली से पहले भी इमाम बुखारी अखबारों को यह वक्तव्य दे चुके थे कि मुसलमानों के मन में हिन्दू राज्य आने का डर है, इसलिए एक दिन मुसलमान अपनी हिफाजत के लिए अलग होमलैंड की मांग करेंगे। खुदा न करे कि वह दिन आये पर हालात वह दिन जरूर ला देंगे।

इमाम बुखारी ने मुसलमानों की रैली को सम्बोधित करते हुए कहा था कि खुदा न खास्ता अगर मैं अभी यह ऐलान कर दूं कि जाओ और मन्त्रियों की कोठियां फूंक दो, तो दुनिया की कोई ताकत इसे नहीं रोक सकती। बुखारी साहब ने यह भी फरमाया कि हम सरकार को स्वीकार नहीं करते। हम इस आजादी को आजादी नहीं मानते और हिन्दुस्तान की अदालतों पर हमारा कोई विश्वास नहीं। अब तक हमने बहुत सब्र रखा परन्तु अब हम गुलामी की इन जंजीरों को तोड़कर रहेंगे। सरकार का शुक्रिया है कि उसने सोये हुए शेर को जगा दिया।

मौलाना कछोछवी ने कहा कि सरकार अपनी पुलिस और सुरक्षा बल हटा ले और हिन्दुओं व मुसलमानों को आपस में निपटने दे।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि इमाम बुखारी जैसे राष्ट्रद्रोही तत्त्व भारत में गृह युद्ध छेड़ने और देश के टुकड़े करने पर आमादा हैं।

हमारी सरकार ने समय रहते इमाम बुखारी जैसे राष्ट्रद्रोही तत्त्वों को भारत से नहीं निकाला तो देश में उन्माद और तांडव का वह भीषण नृत्य होगा जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। ★

दिल्ली प्रान्तय आर्य महिला सभा का चुनाव

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की श्रीमती सरला महता प्रधाना, श्रीमती सुशीला आनन्द, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती शान्ति भाटिया, श्रीमती प्रेमशील, श्रीमती रामचमेली उप प्रधाना, श्रीमती प्रकाश आर्या मुख्य मन्त्रिणी, कृष्ण चड्ढा मंत्रिणी, चन्द्रकला सह मंत्रिणी, कृष्ण रसवन्त प्रचार मंत्रिणी, शकुन्तला दिक्षित वेद प्रचार मंत्रिणी, तारा वैद कोषाध्यक्षा और सत्यावेद सहकोषाध्यक्षा चुनी गईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाकिस्तान अमरीका का हरावल दस्ता बन चुका है

—जमनादास अखतर

अमरीका ने भारत के तीव्र विरोध के बावजूद पाकिस्तान के अवाक्स देने की घोषणा कर दी है। भारत लाख विरोध करे, अमेरिका पाकिस्तान को सैनिक सहायता देना जारी रखेगा। पाकिस्तान के समाचारपत्र लिख रहे हैं कि पाकिस्तान अमरीका की समरनीति के लिए अग्रिम पक्ति का राज्य बन चुका है। पाकिस्तान ने दक्षिण-पश्चिमी एशिया में अमेरिका के हितों के लिए उससे सहयोग करना स्वीकार कर लिया है। साउदी अरब सहित 22 दूसरे देशों में पाकिस्तान की सेना मौजूद है। साउदी अरब में पाकिस्तानी वायु सेना के दो स्कवैड्रन मौजूद हैं। अरब देशों के शासक अपनी ही प्रजा से डरते हैं। उन्हें अपनी सेना पर विश्वास नहीं। इसलिए उन्होंने पाकिस्तानी सेना की सेवाएं प्राप्त कर रखी हैं। अरब देशों की सरकारें पाकिस्तानी सेना को उसकी अपनी सरकार के मुकाबले में तीन-तीन, चार-चार गुना अधिक वेतन देती हैं। इसलिए पाकिस्तानी सेना के अफसरों में अरब देशों में जाने लिए होड़ मची रहती है। अमेरिका (जहां तक सम्भव हो) लड़ाई में अपनी सेना का इस्तेमाल करने की बजाय दूसरों की सेना का इस्तेमाल करना पसन्द करता हैं। उसने केंद्रीय कमान के अधीन जो नई सेना बनाई है, उसे आवश्यकता पड़ने पर अमेरिका से खाड़ी के देशों में लाने के लिए नये प्रबन्ध किये गये हैं। अफ्रीका के उत्तर-पश्चिम के देश मरक्को में अमेरिका ने अड्डे हासिल किये हैं। इसके लिए मिस्र, तुर्की, इस्राइल, यर्दन और कुवैत में अमरीका ने अपने लिए अड्खे रखे हैं।

पाकिस्तान में कराची के निकट मोरीपुर के अड्डे को अमेरिका की वायु सेना पहले ही इस्तेमाल कर रही हैं। बलूचिस्तान के गदादर का समुद्री अड्डा उसके नियंत्रण में है और बलूचिस्तान में ही 22 और अड्डे अमेरिकन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकारियों के नियंत्रण में बन रहे हैं। सिंध के कई वर्ग मील के क्षेत्रफल में एक बहुत बड़ी छावनी बन रही है। पेशावर के अड्डे को बहुत चौड़ा कर दिया गया है। अफगानिस्तान में लड़ने वाले "मुजाहिदीन" के लिए इसी हवाई अड्डे पर हथियार और गोला बारूद उतारा जाता है। अफगानिस्तान की सीमा को जाने के लिए कई नई पक्की सड़कों का निर्माण किया गया है। ये सड़कें कबाइली इलाके से गुजरती हैं। विरोध करन वाले कबाइलियों के खिलाफ पाकिस्तानी सेना ने लगभग 1 महीना पहले अभियान शुरू किया। पाकिस्तान सिपाही भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे हैं और वहां अमेरिकन रिडगर प्रक्षेपास्त्र इस्तेमाल कर रहे हैं। इस हालत में जब कि पाकिस्तान अमेरिका से पूरी तरह सहयोग कर रहा है, भारत को यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि अमेरिका पाकिस्तान को आधुनिक हथियार नहीं देगा। इसमें संदेह नहीं कि अमेरिकन संसद में कुछ सदस्य पाकिस्तान का विरोध कर रहे हैं। परन्तु विरोध करने वाले सदस्य बहुत कम हैं और हिमायत करने वाले अधिक हैं। कुछ विरोध पाकिस्तान से और भी सुविधाएं हासिल करने और उस पर अपना शिकंजा मजबूत करने के लिए भी किया जा रहा है।

ईरान में खुमैनी के सर्वेसर्वा बन जाने के बाद अमेरिका महसूस करता है कि पाकिस्तान को ही ठीक तरह से अपने हितों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इस्लामी देशों में पाकिस्तान के पास सब से मजबूत सेना है और अमेरिका जानता है कि इन्हें मजहबी जनूनी बनाकर किसी देश में लड़ाई के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे यह भी मालूम है कि साउदी अरब देश उसे वाह-वाह हासिल करने औद इस्लाम के रक्षक कहलाये जाने के लिए अपनी तेल की आमदनी इस काम के लिए इस्तेमाल करने के लिए तैयार हैं। इस समय अफगानिस्तान में लड़ने वाले विद्रोहियों को अमेरिका के साथ ही साउदी अरब भी सहायता दे रहा है। साउदी अरब यह समझता है कि यदि अफगानिस्तान में सफलता मिल जाये तो यह देश एक तरह से उसकी कालोनी बन जायेगा। उधर पाकिस्तान और अनेरिका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह चाहते हैं कि अफगानिस्तान से सोवियत संघ के इस्लाममी प्रान्तों में घुसपैठ की जा सकेगी। हाल ही मे समाचार मिले हैं कि अफगानिस्तान की सीमा से रूसी इलाकों में घुसपैठ की गई और बमों के कुछ विस्फोट हुए। सोवियत संघ ने इस पर नजर रखी और जवाबी कार्रवाई की।

अफगानिस्तान में लड़ाई बन्द होने की फिलहाल कोई संभावना नहीं, क्योंकि अमेरिका यह जानता है कि सोवियत संघ की सरकार दबाव डालने के लिए पाकिस्तान के सीमावर्ती इलाकों पर बमवर्षा करा रही है। अफगान सरकार सीमा प्रान्त और बलूचिस्तान में अपने एजेंटों द्वारा विध्वंसक कार्रवाइयाँ करा रही है। पुलों, रेल गाड़ियों और सैनिक ठिकानों पर हमले हो रहे हैं। सीमा प्रान्त में आये दिन सरकारी अधिकारियों और सरकार से सहयोग करने वालों के अपहरण कीं घटनायें हो रही हैं। पाकिस्तान की सरकार एक ऐसे जाल में फंस चुकी है कि इसमें से इसका निकलना आसान नहीं। यदि जनरल जिया इस जाल से निकलना चाहें तो अमेरिका उनका सत्ता उलट कर किसी और जनरल को राष्ट्रपति बना देगा। जनरल जिया यह जानते हैं और उन्हें इससे फायदा है क्योंकि अमेरिका उनको पीठ ठोंक रहा है। जनरल जिया को जनता आसानी से हटा नही सकती, क्योंकि उनकी पीठ पर अमेरिका ही नहीं बल्कि उनकी अपनी सेना भी है।

इस बात से इन्कार नही किया जाता कि अमेरिका से भी अधिक पाकिस्तान पंजाब में आतंकवादियों की मदद कर रहा है! अमेरिका और पाकिस्तान दोनों चाहते हैं कि पंजाब भारत का अंग न रहे। दो वर्ष पहले अमेरिका के सांसद सेनेटर हेल्मज ने कहा था कि मैं और मेरे साथी लन्दन स्थित डाक्टर जगजीत सिंह चौहान की मदद करते हैं। क्योंकि चौहान ने हमें आश्वासन दिया है कि जब खालिस्तान स्थापित होगा तो वह सोवियत संघ के मुकाबले में अमेरिका का साथ देगा। इस सम्बन्ध में आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पढ़ने से मालूम हो जाता है कि इस प्रस्ताव को तैयार करने वाले एक तो पंजाब को धीरे-धीरे अलग करना चाहते हैं और दूसरे देश की विदेश नीति का झुकाव अमेरिका की ओर करना चाहते हैं। चौहान और उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वापी ब्रिटेन और दूसरे देशों में अपने सम्मेलनों में पाकिस्तानियों और गोरों को आमन्त्रित करते रहते हैं ।

यह ठीक है कि इस समय अमेरिका का ध्यान अफगानिस्तान की ओर है परन्तु दो और बातें भी स्पष्ट हैं । पहली यह कि अमेरिका नहीं चाहता कि दक्षिण एशिया में पाकिस्तान के मुकाबले में भारत अधिक मजबूत बने और भारत को एशिया के इस हिस्से में सबसे मजबूत ताकत बनने का अवसर मिल जाए । दूसरी बात यह है कि पाकिस्तान सोवियत संघ से लड़ना नहीं चाहता । वह तो वास्तव में भारत से ही दो-दो हाथ करना चाहता है । एक ओर उसकी निगाह पंजाब पर है तो दूसरी ओर कश्मीर पर । आज नहीं तो कल पाकिस्तान हमला करेगा । इसी के लिए वह अधिक से अधिक आधुनिक हथियार हासिल कर रहा है । उसकी एक चाल यह भी है कि हमारे देश में साम्प्रदायिक दंगे कराये । इस हालत में हमें बाहर और अन्दर से खतरा है । दुर्भाग्यवश सरकार को खतरों का मुकाबला करने के लिए जो कुछ करना चाहिए वह नहीं कर रही । हमारी सरकार अपने राजनैतिक विरोधियों पर निराधार आरोप लगाकर गलत रास्ते पर चल रही है । किसी के "नानी याद करा देने" की धमकी देकर खतरे दूर नहीं किए जा सकते । खतरों का मुकाबला करने के लिए दूरदर्शिता से काम लेने की आवश्यकता है ।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ का गठन

आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानव के सर्वांगीण विकास को स्थायी रूप देने धर्म और संस्कृति की वृद्धि करने, वैदिक साहित्य में अनुसंधान और अध्ययन करने वाले विद्वानों को प्रोत्साहित करने, अनुसंधान पत्रों को प्रकाशित करने और इसे कार्य की पूर्ति के लिए मिशनरी विद्वानों को तैयार करवाने के उद्देश्य से स्वामी सत्यप्रकाश जी के संरक्षण में 'अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ' का पंजीकृत सोसायटी के रूप में गठन किया गया है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या-क्या गुल खिलाये रायल्टी ने

—दुर्गाशंकर त्रिवेदी

तत्त्व चिन्तक और साहित्य साधक श्री खलील जिब्रान और उनकी कृति 'देवदूत' ने धन को चाहे कितना ही कम महत्त्व दिया हो लेकिन धन ने खलील जिब्रान और 'देवदूत' दोनों के ही महत्त्व चित्र में रंग भरा है। उनकी रायल्टी ने वो-वो गुल खिलाये कि क्या कहा जाए ? लेबनानियों की ही नहीं, न मालूम कितने लोगों की नींद हराम की होगी उनकी सात पुस्तकों की भारी-भरकम रायल्टी ने।

रायल्टी का हादसा शुरू होता है सन् 1933 से। न्यूयार्क के सेण्ट विन्सेण्ट अस्पताल में काल के क्रूर पजों में फंसे जिब्रान जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहे थे। अचानक ही उन्हें लगा कि अब जीवन हारने वाला है। उन्हें एकाएक अपनी जन्म भूमि की याद हो आती है। जिब्रान ने मृत्यु शैया पर पड़े-पड़े ही एक कागज का टुकड़ा उठाकर अपनी सातों पुस्तकों समस्त रायल्टी अपने शहर के निवासियों के नाम कर दी। कुछ ही पलों के पश्चात् मृत्यु की विजय होगई और जिब्रान का शरीर पंच तत्त्वों में विलीन हो गया।

अब उनकी पुस्तकों की रायल्टी का हकदार हो गया बशारी। प्राकृतिक सौन्दर्य के वैभव भार से लदा लेबनान का एक छोटा-सा कस्बा! इस खूबसूरत कस्बे के ऊपर जिन कुछ कुनबों का वर्चस्व था उनका एक-एक सदस्य लेकर एक समिति बन गई। चूंकि जिब्रान उन दिनों लोकप्रिय नहीं थे, अतः रायल्टी कुछेक हजार डालर ही होती थी। समिति के सदस्य वसीयत की सारी की सारी प्राप्य रायल्टी को किसी न किसी लोकोपयोगी कार्य में खर्च कर दिया करते थे। सारी रकम तत्काल ही खर्च हो जाया करती थी। अतः झगड़े टंटे की कोई बात ही नहीं खड़ी हुई।

पर जिब्रान की विचार धारा ने देखते ही देखते अपनी विशिष्ट छाप तरुण पीढ़ी पर छोड़ना शुरू किया। उनका साहित्यिक सितारा पूरी तेजी से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साहित्याकाश पर दमकने लगा। बस देखते ही देखते खलील जिब्रान युवा वर्ग का मसीहा बन गया। उनकी पुस्तकों की बिक्री में काफी तेजी से वृद्धि हुई। सन् 1950 के आस-पास उनकी रायल्टी लगभग 3 लाख डालर हो चुकी थी। बशारी की राजनीति में जो अब तक कस्बाई भाईचारे में जुड़ी थी, तूफान-सा आ गया। इतनी बड़ी रकम की ट्रस्टीशिप के रुतबों को देख-देख कर पैसा और प्रतिष्ठा अच्छे-अच्छे सिद्धान्तवादियों को अपनी खनक और छवि से बहला लेता है यही बशारी में भी हुआ।

समिति पर अपना कब्जा जमाने के लिए लोगों मे संघर्ष शुरू हो गया। राजनीति के चक्कर में फंस गई अब क्रांतिकारी जिब्रान की रायल्टी। लोगों के पुराने खानदानी झगड़े और परम्परागत वैर-भाव हरे होने लगे। इसी प्रसंग में दो हत्याएं भी हो गयीं। देखते ही देखते दो कुनबों में अलग-अलग समितियाँ खड़ी हो गयीं। सदस्य इससे अपनी-अपनी राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा पूरी करना चाह रहे थे और उस रकम का जनहित के नाम पर अपनी इच्छा से प्रयोग करवाने में पूरी ताकत लगाने लगे।

तभी जिब्रान की बहन ने एक मुकद्दमा दायर कर दिया। उसका कहना था कि जिब्रान की उत्तराधिकारी तो वास्तव में मैं ही हूं। बशारी निवासियों ने न्यूयार्क के प्रसिद्ध वकील जार्ज शिया को अपना वकील बनाया। शिया ने पर्याप्त मेहनत करके इस मुकद्दमे का फंसला बशारी वालों के हक में करवाने में सफलता पाई। पर उन्होंने अपने पारिश्रमिक स्वरूप 25 प्रतिशत रकम की मांग की। 'आसमान से टपका और खजूर में अटका' वाली हालत हो गई थी। इधर रायल्टी भी अब 10 लाख डालर के लगभग हो चुकी थी। अतः बशारी के लोग मुकद्दमे की फीस के नाम पर शिया को काफी मोटी रकम नहीं देना चाहते थे। बात फिर अदालत की सीढ़ियाँ चढ़ी और फैलती गई। कई अफवाहों को जन्म देता मामला उच्चतम न्यायालय तक गया और जीत शिया की ही हुई। पर फिर वही प्रतिद्वन्द्वी समितियों के चक्कर में रायल्टी उलझ गई और कस्बे की राजनीति में तूफान लाने लगी। आपसी मारपीट,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गाली-गलौज और एक-दूसरे को नीचा दिखलाने की पुनरावृत्ति अब आम बात हो गई थी।

लेबनान सरकार आये दिन के इन झगड़ों से परेशान हो उठी थी। क्योंकि दोनों ही प्रतिद्वन्द्वी समितियों के सदस्यों के लिए इस समिति का सदस्य बना रहना प्रतिष्ठा का सवाल बन चुका था। उसके कारण जिब्रान की भावना (जनहित) का तो कचूमर ही निकल गया था। आखिर सन् 1967 में सरकार ने एक विशेष कानून बनाकर इन दोनों ही प्रतिस्पर्धी समितियों को भंग करके "जिब्रान निधि" का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया। रायल्टी की इस मोटी राशि ने अब एक नया ही गुल खिलाया। अब राशि जन-कल्याण प्रवृत्तियों में तो खर्च होने लगी, पर नाम मात्र को। पर प्रशासक अपनी डिक्टेटरी प्रवृत्ति और नौकरशाही मनोवृत्ति कब तक दबाता? भारी भरकम नौकरशाही की गिरफ्त में काफी बड़ी राशि दफ्तर के खर्च, वेतन और भत्तों में ही खर्च होती रही।

खैर, जिब्रान प्रेमियों को एक बार फिर अक्ल आई। सन् 1971 में लेबनान सरकार की सहमति से फिर एक सर्वसम्मत समिति बनाई गई। इसमें बशारी के मुख्य-मुख्य परिवारों को प्रतिनिधित्व दिया गया। अब खलील जिब्रान की रायल्टी से कई मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिल रही है। नये-नये स्कूल, औषधालय, पुस्तकालय, संगीत विद्यालय आदि खोले जा रहे हैं। विविध संस्थानों के माध्यम से विकास और जनता जनार्दन की जरूरतों को पूरा करने का कार्य गति पा चुका है।

इस तरह साहित्य साधक खलील जिब्रान की रायल्टी ने न जाने कितने गुल खिलाए। खैर, अब जिब्रान की पुस्तकें बशारी को सकून दे रही हैं। वहाँ जन कल्याण प्रवृत्तियों और विकास की गति की काया का प्रसारण कर रही हैं। क्या पता कल क्या-क्या गुल खिलाए? कहा भी कैसे जा सकता है? खैर अभी तो जिब्रान की रायल्टी बशारी के जन जीवनीय कैनवास पर समृद्धि का रंग ही भर रही है। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूरदर्शन की अदूरदर्शिता

—यशपाल जैन

दूरदर्शन के अधिकारी कह रहे हैं कि देश की 70 फीसदी जनता उसके कार्यक्रमों को देखती है। किन कार्यक्रगों को ? यदि हम गहराई से देखें तो पता चलेगा कि अधिमतर कार्यक्रम ऐसे हैं जो देश के कोटि-कोटि नर-नारियों युवकों-युवतियों के आचार-विचार को चरित्र को और मानसिकता को विकृत कर रहे हैं। उदाहरण के लिए हम 'मुबह' धारावाहिक को लें। उसमें महाविद्यालय के लड़के-लड़कियों के मुक्त जीवन औद उनकी उच्छृं-खलता के गाथ-साथ यह भी दिखाया गया है कि वे स्मैक (नशीली वस्तु) किस प्रकार प्राप्त करते हैं और किस प्रकार उसका सेवन करते हैं। संभवत: इस कार्यक्रम के प्रायोजक यह दिखाना चाहते होंगे कि स्मैक का कितना घातक प्रभाव जीवन पर पड़ता है किन्तु स्मैक का सेवब इतने आकर्षक ढंग से दिखाया गया है कि नई पीढ़ी उससे विमुख होने की बजाय उसका प्रयोग करने के लिए लालायित होगी। फिर उस व्याधि से ग्रस्त युवकों-युवतियों की संख्या कितनी होगी हम नहीं जानते, किन्तु हम उिसाब लगा कर सहज हीं देख सकते हैं कि दूरदर्शन ने करोड़ों दर्शकों को स्मैक का परिचय करा दिया। आश्चर्य नहीं कि उन करोड़ों में से बहुत-से उसका व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के लिए भी प्रेरित हों। वे यह भी जान गए हैं कि स्मैक के सेवन का तात्कालिक लाभ क्या है और वह नशीला पदार्थ कहां से मिल सकता है, उसका इस्तेमाल कहां और कैसे किया जा सकता है। उस धारावाहिक का आरम्भ ही नशा करते और नशे में झूमते लड़के-लड़कियों को दिखा कर किया गया है। 'अंधी गलियां' भी वैसा ही कार्यक्रम है।

धारावाहिक बुनियाद को लीजिये। उस पर कितना समय खर्च किया गया, लेकिन उसने देशवासियों को दिया क्या हैं ? मास्टर जी की नैतिकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने कितने दर्शकों को चरित्र निर्माण की सीख दी होगी कहना कठिन है, किन्तु रोशनलाल और श्यामलाल की चालबाजियों और कुचक्रों से बहुतों को बहुत कुछ सिखा दिया होगा। कहावत है कि उँचाई का मार्ग कठिन होता हैं, उस पर कम ही लोग चल पाते हैं, जब कि निचाई का रास्ता आसान होता है, और उस पर लोग सरपट दौड़ जाते हैं।

और भी कई धारावाहिक हैं, जो स्पष्ट रूप से दिखाते है कि उनके पीछे न कोई स्वस्थ दृष्टि है, न दूरदर्शिता। समय भरना है तो ऊटपटांग धाराहिकों, दूसरे बेतुके कार्यक्रमों और विज्ञापनों से भर दिया जाता है। चित्रहार, चित्रमाला आदि कार्यक्रम दर्शकों को सस्ता मनोरंजन प्रदान करते हैं। उनके अधिकतर नाच, गाने आदि अभिनेताओं के हाव-भाव वासनोत्तेजक होता है। ।उन्होंने नई पीढ़ी को फैशनपरस्त और विलासिता-प्रेमी बना दिया है।

एक बार आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि यदि देश के शिक्षाशास्त्री देश-काल के अनुरूप कोई उपयुक्त शिक्षा प्रणाली नहीं निकाल सकते तो स्कूल कालेजों-को कुछ समय के लिए बन्द कर देना चाहिये। इसके बन्द कर देने से देश की उनती नहीं होगी, जितना गलत शिक्षा देने से होती है। यही बात हम दूरदर्शन के संदर्भ में कह सकते हैं।

पिछले दिनों तक सवेरे का समय बचा हुआ था। अब वह भी घिर गया हैं। सप्ताह में दो दिन रात काली करने के लिए एक हिन्दी की और एक अंग्रेजी की फिल्में चालु कर दी गई हैं। वे वयस्कों के लिए रखी गई हैं लेकिन सच यह है कि उन्हें जितने बड़े लोग देखते हैं, उससे अधिक बच्चे और युवा वर्ग देखते हैं। स्कूल-कालेज जाने के लिए छात्रों को जल्दी उठना पड़ता है। जो रात भर जागेंगे और वे सवेरे तड़के ही उठ जायेंगे, वे पढ़ाई क्या खाक करेंगे ? क्लासों में ऊँघेंगे।

हमारे देश की 80-85 प्रतिशत आबादी गांवो में रहती है। शहरों में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुश्किल से 15-20 प्रतिशत लोग रहते हैं। सत्तर प्रतिशत आबादी को लाभ पहुंचाने का दावा करने वाले अधिकारी किस प्रकार बड़े घरानों और उद्योगपतियों के चंगुल में फंस गए हैं—यह दूरदर्शन के विज्ञापनों से देखा जा सकता हैं। बेचारे देहातियों को विज्ञापनों के माध्यम से जिन वस्तुओं से परिचित कराया आता है वे हैं साबुन, काफी, चाकलेट, दंतमंजन, पकवान बल्ब, मोटर साइकिल, आदि-आदि। आप किसी से भी पूछ सकते हैं कि इन चीजों से ग्रामवासियों का क्या दूर का भी कोई वास्ता है ?

देश के जोवन के साथ जो चीजें आज घनिष्ठता से जुडी हैं, उनमें दूरदर्शन का प्रमुख स्थान है। अब तक इस भूमिका को सिनेमा निभा रहा था। किन्तु अब सिनेमा का स्थान भी बहुत कुछ दूरदर्शन ने ले लिया है। अब सिनेमाघर जाने की जरूरत नहीं है। वी. सी. आर धड़ल्ले से किराये पर मिल जाते हैं। पास-पडोस के घरों से रात को देर गये तक फिल्मों की आवाज सुनी जा सकती है।

सत्ता का करीट धारण करते समय राजीव गांधी ने कहा था कि मैं देश को स्वस्थ, स्वच्छ और गतिशील शासन दूंगा। कहाँ गई उनकी वह घोषणा और अब वही कह रहे हैं कि यदि आपको रात के 11-30 बजे आरम्भ होने वाली फिल्म नहीं देखनी है तो शौक से अपना टेलीविजन बंद कर दीजिये। उनका यह वक्तव्य पढ़ कर हमारे रोंगटे खड़े हो गये। क्या अब वे यह नहीं देख पा रहे हैं कि विलासिता के साथ भ्रष्टाचार जुड़ा हुआ है ?

आज देश की सबसे बड़ी आवश्यकता भ्रष्टाचारी नहीं, चरित्रवान् लोग हैं। जब तक दूरदर्शन अपने कार्यक्रमों को सोउद्देश्य बनाकर ऐसी चीजें नहीं देगा, जो देशवासियों को नीतिनिष्ठा और कर्तव्य-परायण नागरिक बना सकें, स्तब तक आप विश्वास रख सकते हैं कि आगे चल कर हमें और भी दुर्दिन देखने होंगे। आज भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, ईर्ष्या-द्वेष, वैमनस्य, आपसी झगड़े, पदलोलुपता आदि-आदि व्याधियां अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई हैं।

एक बार आचार्य विनोवा ने वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की चर्चा करते हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़े पते की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि यदि देश के शिक्षा-शास्त्री देश-काल के अनुरूप कोई उपयुक्त शिक्षा प्रणाली नहीं निकाल सकते तो स्कूल-कालेजों को कुछ समय के लिए बंद कर देना चाहिए। उसके बन्द कर देने से देश की उतनी हानि नहीं होगी, जितनी गलत शिक्षा से होती है इसी प्रकार यदि दूरदर्शन के कार्यक्रमों से हानि होती है तो दूरदर्शन को कुछ समय के लिए बंद कर देना ही राष्ट्र के एिल हितकर होगा।

हम सब जानते हैं कि देश की सब से मूल्यवान् सम्पदा उसकी वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्वियाँ या बड़े-बड़े कारखाने अथवा भीमकाय परि-योजनाएं नहीं हैं। उनका मानव की सुविधा की दृष्टि से महत्त्व है किन्तु उनसे भी अधिक मूल्यवान् तो चरित्रवान् मनुष्य है। उन्हीं का गौरव था कि किसी जमाने में भारतीय संस्कृति का सारे विश्न में बोलबाला था। पर आज तो उस संस्कृति का भवन ढह गया है। देश वही है, किन्तु इन्सान बदल गया है। हमारे सामने अब पश्चिमी देशों की चकाचौंद है, हमारी आंखों में उन्हीं देशों की सपने हैं। यही कारण है कि आज हमारी सस्कृति पर उन देशों की संस्कृति के मुलम्मा चढ़ाया जा रहा है। अधिकतर देशों में दूरदर्शन पर चौबीसों घण्टे कार्यक्रम चलते हैं। हमारे यहां भी धीरे-धीरे वही व्यवस्था लाई आ रहीं हैं। विदेशों में दूरदर्शग विज्ञापनों की आमदनी से मालामाल हो रहे हैं। वही दृश्टि अब हमारे यहां प्रमुख हो रही है। वहां के दूरदर्शन ने आपसी प्रेम और भाईचारेको तिलांजलि दिलवा दी है। वही हालत अब हमारे यहां हो रही है। वहां की नई पीढ़ी किस रास्ते पर जा रही है, इसके लिए एक दृष्टांत पर्याप्त होगा। एक दिन एक लड़का अपने साथ में बन्दूक लेकर अपने पिता के सोने के कमरे में जाता है और सोते पिता पर निशाना लगाने को होता है। अचानक पिता की आँख खुल जाती है। वे लड़के से पूछते हैं, "यह तुम क्या कर रहे हो?" लड़का फौरन जवाब देता है, "आपको गोली मारने जा रहा हूं।" पिता फिर पूछने हैं, "इसकी प्रेरणा तुम्हें कहाँ से मिली?" लड़का कहता है, "दूरदर्शन से?"

हमारा दूरदर्शन भी अब उन्हीं मूल्यों से प्रभावित होता जान पड़ता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यज्ञ का व्यापक स्वरूप

—रामस्वरूप बेली सिद्धांतशास्त्री

यज्ञ शब्द संस्कृत भाषा की यज् धातु से बना है जिसका अर्थ है देव पूजा, संगतिकरण एवं दान। देव शब्द भगवान् की दिव्य शक्तियों के लिए प्रयोग में आता है। पूजा शब्द सत्कार अर्थ में प्रयुक्त होता है। इन दिव्य शक्तियों को परिपुष्ट करना ही इनका सत्कार करना है। दूसरा शब्द है संगतिकरण। एक तत्त्व को दूसरे तत्त्व से मिलाने का अथवा उनके संयोग का नाम संगतिकरण है एवं इस संगतिकरण का जो वियोगात्मक फल प्राप्त होता है, जिससे त्याग भावना जागृत होती है, उसे दान कहा जाता है।

योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने गीता मे उपदेश दिया है कि परमपिता परमात्मा ने यज्ञ के साथ सृष्टि की उत्पत्ति की। सम्पूर्ण प्राणियों का आधार अन्न है, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है एवं वर्षा यज्ञ से। अतः प्रत्येक मनुष्य को यज्ञ करना चाहिए। यह यज्ञ इच्छित कामनाओं का देने वाला है। कृष्ण-चन्द्र जी वेदों के ज्ञाता थे। ऋग्वेद के प्रथम मत्र में परमपिता परमात्मा ने उपदेश दिया है कि "हे मनुष्यो, तुम सब अग्नि की आराधना करो, यज्ञ के द्वारा देवताओं को बढ़ाओ। इस प्रकार वतने से तुम्हें रत्नों के भंडार प्राप्त होंगे। वेदों में इस प्रकार के यज्ञपरक मंत्र अनेक हैं। वेद ज्ञान का अथाह समुद्र है।

परमपिता परमात्मा द्वारा निरन्तर यज्ञ कार्य चल रहा है। सूर्य अपनी आकर्षण शान्ति द्वारा पृथ्वी से जल को आकाश से खींचता है। यही जल समय पाकर वायु के संयोग से मेघ बनकर धरती पर बरसता है, जिससे अन्न एवं अनेक प्रकार की वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार प्राणिमात्र का जीवन चल रहा है। परमात्मा की ओर से इस प्रकार का चक्र चलता आ रहा है।

निरुक्तकार ने यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म बतलाया है। इस प्रकार परोपकार के जितने भी कर्म हैं वे सब यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। तालाब, कुआं, बावड़ी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि बनवाना, धर्मशाला बनवाना, भूखों को अन्न देना, प्यासों को पानी पिलाना नि:स्वार्थ भाव से रोगियों की सेवा, विद्या दान करना आदि अनेक कार्य-जिससे दूसरों का उपकार हो, वे सब कार्य यज्ञ की श्रेणी में आते हैं।

अब आप इस दैनिक अग्निहोत्र को लीजिए। इसे भी यज्ञ कहते हैं। इस के अतिरिक्त बड़े यज्ञ भी होते हैं। अश्वमेध, राजसूय यज्ञ, वाजपेय यज्ञ इत्यादि। परन्तु ये यज्ञ व्ययसाध्य होते हैं। ऋषि-महर्षियों ने इस दैनिक अग्निहोत्र की गणना महायज्ञों में की है। वे महायज्ञ 5 हैं—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ। इस प्रकार ये महायज्ञ प्रत्येक गृहस्थ को नित्यप्रति करने चाहिए। इन महायज्ञों से जो फल प्राप्त होता है वह अश्वमेधादि यज्ञों के करने वालों को भी प्राप्त नहीं हो सकता। हम इन पंच महायज्ञों में से यहाँ केवल देवयज्ञ की ही चर्चा कर रहे हैं।

आर्यों के लिए प्रतिदिन पंचमहायज्ञों का विधान है। विद्वान् लेखक ने हवन-यज्ञ का व्यापक स्वरूप बताते हुए अग्निहोत्र के लाभों पर प्रकाश डालते हैं।

इस दैनिक अग्निहोत्र में तीन वस्तुओं की आवश्यकता है। समिधा, घृत एवं हवि—इन तीनों वस्तुओं को वेद मंत्रों द्वारा सूर्य लोक तक पहुंचाया जाता है। ये सूर्य लोक एवं अतरिक्ष लोक में पहुंचकर वायुमंडल को शुद्ध करती हैं। वर्षा जल को पवित्र करती है, जिससे प्राणिमात्र का भला होता है। यज्ञकर्ता का तो इससे प्रत्यक्ष हित होता है। इस अग्निहोत्र में प्रक्षिप्त घृत एवं औषधियों के प्रभाव से शरीर नीरोग और स्वस्थ रहता है। जीवनी शक्ति बढ़ती है। बच्चों के संस्कार अच्छे बनते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा कई प्रकार के रोगों का भी निराकरण किया जा सकता है। विज्ञान का विद्यार्थी इस बात को भली प्रकार जानता है कि अग्नि में समर्पित हुई वस्तु नष्ट नहीं होती वरन् उसकी शक्ति शतगुणा एवं सहस्रगुणा बढ़ जाती है।

हम इस धरती पर मल-मूत्र विसर्जित करते हैं, जिससे वायु में दुर्गंध फैलती है। वह भी कई प्रकार के रोगों का कारण बनती है। उसे दूर करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का एकमात्र उपाय अग्निहोत्र ही है। अतः हम सबको परिवार सहित अग्निहोत्र करना चाहिए, जिससे परिवार सुखी और समृद्ध बनेगा। यह नीरोग रहने का सस्ता नुस्खा है।

दैनिक अग्निहोत्र में प्रयोग आने वाली समिधाओं में पलाश आदि ही उपयुक्त मानी गई हैं, जो सुलभ भी हैं। हवन-सामग्री ऋत्वनुकूल प्रयोग में लानी चाहिए। घृत गाय का ही सर्वोत्तम है, अमृत है, महौषधि एवं इच्छित फलप्रदाता है। दैनिक अग्निहोत्र के लिए सुसंस्कारित एवं उत्तम सामग्री प्रयोग में लानी चाहिए।

महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में लिखा है कि महाराज रघु के राज्य में कोई ऐसा घर न था जिसकी छत अग्निहोत्र के धुएं से काली न हो। अर्थात् प्रत्येक घर में दैनिक अग्निहोत्र चलता था। इसी कारण उन दिनों अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि का भय न था। 3 दिसम्बर, 1984 को भोपाल गैस कांड हुआ, जिसमें सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2500 लोग काल के गाल में समा गए। लाखों अपाहिज हो गए। विषैली गैस रिसने के कारण वायु में प्रदूषण बढ़ गया, जिसका यह भयंकर प्रतिफल हुआ। इस प्रकार का वायु प्रदूषण रोकने का एक मात्र उपाय अग्निहोत्र ही है। जिन महानगरों में बड़-बड़े कल-कारखाने हैं, वहाँ वायु प्रदूषण अधिक होता है। सरकार करोड़ों रुपये वायु प्रदूषण दूर करने में खर्च करती है परन्तु वैज्ञानिक वैदिक विद्वानों के साथ इस यज्ञ पर अनुसंधान कार्य करें तो करोड़ों रुपयों का काम सहस्रों रुपयों में हो सकता है। अतः इस पर शोध कार्य होना चाहिए।

यज्ञ महाविज्ञान

पं० वीरसेन जी वेदश्रमी ने "यज्ञ महाविज्ञान" पुस्तक लिखकर इस विषय पर विस्तृत और गम्भीर विचार दिए हैं। परमात्मा की ओर से जो यज्ञ चक्र चलता आ रहा है, उसकी दिव्य शक्तियों को परिपुष्ट करने के लिए हमें यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व को समझकर नित्यप्रति अग्निहोत्र करना चाहिए।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्म दिन पर 23 जुलाई के अवसर पर विशेष लेख

लोकमान्य तिलक : एक कालजयी राष्ट्रपुरुष

—डा. मृत्युंजय उपाध्याय

पृथ्वी कहलाती है वीरप्रसू। उसकी कोख से भारतवर्ष में भी अनेक ऐसे लाल हुए हैं, जो केवल देश को आजादी दिलाने में ही सफल नहीं हुए, वरन् सम्पूर्ण भारत की अखंडता और एकता के लिए भी आजीवन प्राणपन से जूझते रहे। ऐसे ही महापुरुष का जन्म महाराष्ट्र के पुणे में 23 जुलाई, 1856 को हुआ। नाम था बालगंगाधर तिलक। आजादी की नींव में जिन लाल-सुर्ख ईंटों ने अपना अनाम उत्सर्ग किया है, उनमें तिलक का स्थान प्रमुख है। तिलक प्रारम्भ से मानते थे—'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।" उन्होंने गांधी जी की सत्याग्रह नीति का विरोध तो नहीं किया लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के लिए क्रांति की अनिवार्यता पर बल अवश्य दिया। उनका विश्वास था कि भीख मांगने से आजादी नहीं मिल सकती। वे कांग्रेस के इन कर्मठ और क्रांतिकारी सदस्यों में एक थे, जो सशस्त्र क्रांति के बल पर आजादी हासिल करने के पक्षपाती ही नहीं थे, उसे अमली जामा पहनाने के लिए भी जूझते रहे। नतीजा अनुकूल ही निकला।

उन्होंने एक ऐसे मंत्र की स्थापना की, जिसके द्वारा एकता, भाईचारा और संगठन का मंत्र फूंका जा सका, जो कालान्तर में स्वाधीनता आन्दोलन में महती भूमिका निबाह सका। तिलक सदा भारत के कल्याण के बारे में सोचते थे। उनमें कभी स्थानीयता और प्रांतीयता की संकीर्ण भावना नहीं आई। उनका कहना था—"हिन्दुस्तान के हित में मेरे महाराष्ट्र का भी हित है, इसीलिए पुणे का हित है, पुणे में रहने वाले मेरे परिवार का हित है और परिवार में रहने वाले मेरा भी हित है।" जब बंगाल में आन्दोलन शुरू हुआ तो उन्होंने दौड़कर उसकी मदद की। बंगाल की सहायता के लिए महाराष्ट्र को खड़ा किया, स्वदेशी का डंका बजवाया और अपने उद्गार इन शब्दों में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्त किए—"जब बंगाल लड़ाई के मैदान में खड़ा है तो हमें भी जाना ही चाहिए। जो बंगाल का दुःख है वह महाराष्ट्र का भी दुःख है।" इसी व्यापकता और सार्वराष्ट्रीयता की बलवती भावना ने तिलक को प्रेरित और संचालित किया।

उन्होंने गणेश चतुर्थी जैसे वार्षिक त्यौहार के द्वारा न केवल गणेश की वंदना का विधान किया, वरन् इसके द्वारा क्रांति का शखनाद भी किया। अंग्रेजों को सशस्त्र क्रांति से सात समुद्र पार करने की योजना का श्रीगणेश भी किया। इस महान् कार्य में "केसरी" की भूमिका चिरस्मरणीय रहेगी। यह उनकी पत्रकारिता और साहित्यानुरागिता का दस्तावेज भर नहीं था, वरन् क्रांति का संदेश घर-घर पहुंचाने का सशक्त माध्यम भी था। इससे अंग्रेजी सिंहासन हिलने लगा। सरकार विरोधी एक लेख लिखने के अभियोग में उन्हें कारावास की सजा भी मिली। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में राष्ट्रीय आंदोलन में एक नई प्रवृत्ति उभरी, जिसमें कांग्रेस की तत्कालीन नीति की खुले आम आलोचना की गई। इसका अभीष्ट क्रांति द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना था। इस गरम दल के अगुआ हुए तिलक। इसमें तीन महापुरुष बहुत सक्रिय हुए, जिन्हें भारत का इतिहास कभी नहीं भुला सकता। वे थे बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय।

एक ओर तिलक "बहा दो दरिया खून का, आजादी ले लो जी" और "जो सर से कफन को बांध चुके, वे आँख चुराना क्या जानें" के गीत जन-जन के दिल में उतार रहे थे और दूसरी ओर हड़ताल, असहयोग आंदोलन और विदेशी चीजों के बहिष्कार में भी लगे थे। कांग्रेस ने शासकीय व्यवस्था में सुधार के लिए जिस अस्त्र (आवेदन पत्र, धरना, सत्याग्रह और असहयोग) का उपयोग करना शुरू किया उसका नेतृत्व भी जिन नये नेताओं के हाथ आया, उनमें तिलक सर्वप्रमुख थे। सच पूछिए तो देश की दो विचारधाराओं को (गांधी जी से पूर्व 1917 तक और उनके द्वारा नेतृत्व ग्रहण करने के बाद) मिलाने का कार्य तिलक ने किया। भारत के राजनैतिक और सांस्कृतिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विकास क्रम में तिलक एक आवश्यक कड़ी हैं। उन्हें भारतीय लोकतंत्र का पिता भी कहा जाता है।

तिलक की साहित्य सेवा

जिन परिस्थितियों और प्रयत्नों को हिन्दी के उन्नयन का श्रेय दिया जाता है, उनके निर्माण में लोकमान्य तिलक का बहुत बड़ा हाथ है। वे पहले साहित्यकार थे, बाद में राजनीतिज्ञ और नेता। उनका विशेष व्यसन था अध्ययन, अध्यापन और लेखन। परिणाम है "गीता रहस्य" (गीता की मौलिक और अप्रतिम टीका), "ओरायन" (मृगशीर्ष) "आर्कटिक होम इन वेदाज" (आर्यों का मूल निवासस्थान)। देवकी ने कारागार के गर्भ में कृष्ण को जन्म दिया और तिलक ने कृष्ण द्वारा गाई गीता का मर्म समझाया।

तिलक जैसे देशभक्त के लिए यह सोचना स्वाभाविक था कि राष्ट्र-व्यापी आन्दोलन का आयोजन बिना राष्ट्रभाषा (हिन्दी) का उपयोग किए सम्भव नहीं है। उनके हिन्दी प्रेम का आधार राष्ट्र की एकता की आकांक्षा और स्वराज्य प्राप्ति की कल्पना थी। राष्ट्रभाषा के बारे में उनके विचार स्पष्ट एवं दृढ़ हैं। "राष्ट्रीय भाषा हिन्दी ही बन सकती है। राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिए जरूरी होनी चाहिए। मनुष्य हृदय एक-दूसरे से विचार परिवर्तन करना चाहता है, इसलिए राष्ट्रभाषा की बहुत जरूरत है। विद्यालयों में हिन्दी की पुस्तकों का प्रचार होना चाहिए। इस प्रकार यह कुछ ही वर्षों में राष्ट्रभाषा बन सकती है।" उनका स्वप्न सचमुच साकार हुआ। सन् 1926 में उन्होंने लखनऊ की "एक भाषा, एक लिपि प्रचार परिषद्" में देवनागरी लिपि और हिन्दी की राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाए जाने का प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया था।

आचार्य विनोबा भावे ने उनके बारे में लिखा है—"तिलक अत्यन्त बुद्धिमान्, विद्वान् और नाना शास्त्रों के पंडित थे, इसलिए उनकी सेवा बहुमुखी है।" उनके व्यक्तित्व में देश-सेवा और साहित्य-सेवा का मधुर मंजुल समन्वय देखा जा सकता है। एक ओर वे स्वाधीनता आंदोलन के अग्रदूत हैं तो दूसरी ओर व्यापक राष्ट्रीयता के मूर्तरूप, तो तीसरी ओर साहित्य साधना की अलख जगाने वाले। ऐसे कालजयी व्यक्तित्व को काल प्रवाह कभी विस्मृति के गर्भ में नहीं डाल सकता। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियाँ

आर्य समाज काकड़वाड़ी, बम्बई 150/- सर्व श्री आर. एस. डी. चोपड़ा, अमृतसर 100/- राधाकृष्ण राठी, नागौर 100/- हरवंश सिंह, मेरठ 100/- लक्ष्मीनारायण सिंह, लक्ष्मीपुर 81/- राजमाता भदावर, आगरा 80/- हरिभाई कोरिया, पोरबन्दर 60/- योग सिंह चौहान, हैदराबाद 42/- झुलाजी शर्मा, बम्बई 51/- कु. अरुणा, पौड़ी गढ़वाल 51/- रामस्वरूप शर्मा, महेन्द्रगढ़ 30/- राज बहादुर, नैनीताल 30/-

50 रुपये दान देने वाले

श्रीमती सत्यवती शर्मा, बरेली सर्व श्री सुरेश चौहान हैदराबाद विजय प्रसाद हैदराबाद।

25 रुपये दान देने वाले

सर्व श्री राजेश्वर शर्मा हजारी बाग, सिपाही राजवीर सिंह अम्बाला राजर्षि रणंजय सिंह जी, वासुदेव शर्मा, किन्नौर

20 रुपये दान देने वाले

सर्वश्री कमलानी कलन रंगीन, नलगोण्डा, रघुनाथ सिंह, टिहरी गढ़वाल, वीरेन्द्र कुमार, आजमगढ़

15 रुपये दान देने वाले

सर्व श्री राजवीर सिंह, बठिंडा, मेघनाथ आर्य, फर्रुखाबाद निवृत्तिराव दादा, हिंगोली कौशल्या देवी, देहरादून, राजवीर सिंह, अम्बाला।

11 रुपये दान देने वाले

सर्व श्री दशरथ सिंह शक्तावत, भीलवाड़ा, कृष्ण दत्त ब्रह्मपुरी, चौ. हरपाल सिंह आर्य, मेरठ

10 रुपये दान देने वाले

सर्वश्री अशोक उपाध्याय, हैदराबाद, नन्दूसार हैदराबा, आर. वी. शर्मा, रायगढ़, लज्जावती रोहतक

5 रुपये दान देने वाले

सर्व श्री रतनराम आर्य, हजारीबाग, गुलाब चन्द लाल कोटा, किशोरी आर्य, सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

राकेश रानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साम्प्रदायिकता : कारण और निवारण

—सूर्यकान्त बाली, सहायक सम्पादक
नवभारत टाईम्स, नई दिल्ली

चालीस वर्ष से लोकतंत्र की आड़ में अल्पसंख्यकवाद को शह मिल रही है और धर्मनिरपेक्षता की गलत और वोटपरस्त राजनैतिक व्याख्याओं की आड़ में धर्मांधता को प्रश्रय मिला है। इससे हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे।

मेरठ और दिल्ली में हाल ही में हुए भयानक दंगों ने पूरे देश को यह बात सोचने पर मजबूर कर दिया है, जिसकी ओर अभी तक चंद लोगों का ही ध्यान जाता था। 1947 में पाकिस्तान क्यों बना था? इस के आज जितने भी लाग-लपेट वाले जवाब दे दीजिये पर इतिहास का सत्य यह है कि जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग के साम्प्रदायिक दबाव के कारण पाकिस्तान बना था। जिन्ना ने यह स्पष्ट कह दिया था कि मुसलमानों का धर्म अलग है, उनकी संस्कृति अलग है इसलिए वे एक अलग राष्ट्र हैं और इस आधार पर उन्हें हिन्दुओं से पृथक् पाकिस्तान मिलना ही चाहिए। देश के कुछ बुद्धिजीवीनुमा लोगों और पक्षपाती इतिहासकारों ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि हिन्दू ही साम्प्रदायिक और संकीर्ण हैं और उनकी साम्प्रदायिकता से तंग आकर मुसलमान अलग होने पर मजबूर हुए। इससे ज्यादा विकृत, मतलबपरस्त और थोथी व्याख्या उन परिस्थितियों की हा ही नहीं सकती। खुद जिन्ना ने कहा था—"कांग्रेस हिन्दुओं की (प्रतिनिधि) संस्था है।" कांग्रेस के नेताओं ने देश को न तोड़ने के लिए जिन्ना की कितनी मिन्नतें की थीं। कितने अपमान सहे थे? कितनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रिआयतें दी थीं ? पर चूंकि जिन्ना ने कोई बात न मानना तय कर रखा था इसलिए उसने नहीं मानी और पाकिस्तान बनवा कर ही दम लिया।

देश ने अब धीरे-धीरे उन चन्द बुद्धिजीवीनुमा लोगों और पक्षपाती इतिहासकारों की थोथी व्याख्याओं के धुंधलके से बाहर निकल कर सोचना शुरू किया हैं। सवाल उठने लगे हैं कि जब उस समय के मुस्लिम नेताओं ने साम्प्रदायिकता को आधार बना कर देश तुड़वा ही दिया तो वे स्वयं अपने सम्प्रदाय को क्यों एक जुट नहीं कर सके ? वे कौन-सी स्थितियां थीं जिनके कारण कांग्रेस और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेता इस बात पर जोर देते रहे कि भारत के मुसलमानों को भारत में ही रहना चाहिए ? सच तो यह है कि अंग्रेजों की फूटपरस्त नीति का लाभ उठा कर कुछ मुस्लिम नेताओं ने यह नारा दिया कि वे हिन्दू समाज के साथ नहीं रह सकते।

सवाल इस लिए उठाए जा रहे हैं, क्योंकि भारत का आम आदमी देख रहा है कि आजादी मिलने के बाद से लगातार देश में रह-रह कर यहां-वहां साप्रदायिक दंगे हो जाते हैं। दसियों लोग हर दंगे में मारे जाते हैं और सैकड़ों घायल हो जाते हैं। हजारों गिरफ्तारियां होती हैं।

लाखों-करोड़ों रुपये की सम्पत्ति जला दी जाती है। यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा ? देश के वही चंद बुद्धिजीवीनुमा लोग और पक्षपाती इतिहासकार सिर्फ हिन्दू को ही साम्प्रदायिक मानते हैं। पर अब सच इतना अधिक उघड़ चुका है और सवाल इतने ज्यादा उठ खड़े हुए हैं कि उनकी बात लोग सुनने के लिए तयार नहीं हैं।

आखिर समस्या क्या है ?

पहला सवाल यह है कि भारत में मुसलमानों की ऐसी कौनसी समस्या है जिसकी बेचैनी की वजह से वे दंगे-फसाद की ओर आकृष्ट होते हैं ? जब हम यह कह रहे हैं तो उसमें यह बात अन्तर्निहित है कि साम्प्रदायिक दंगे प्रायः मुसलमानों की ओर से ही शुरू होते हैं। इस पर हम आगे खुलासा करेंगे। पर यह बात सत्य है और यह भी सत्य है कि उन्हें इस देश में रह जाने के बावजूद कोई समस्या नहीं है। सरकार की ओर से या समाज की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओर से उन्हें अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता बनाए रखने में कोई प्रत्यक्ष या परोक्ष रोक नहीं है। आर्थिक उन्नति के अवसर जैसे बाकी लोगों के लिए हैं वैसे ही मुसलमानों के लिए भी हैं। जहाँ तक शैक्षिक अवसरों की बात है, भारत का संविधान उन्हें देश के बहुसंख्यक हिन्दू समाज से भी अधिक अवसर देता है। सरकारी नौकरी में अल्पसंख्यक कहकर उन्हें विशेष सुविधाएं दी जाती हैं। उन्नति के अवसर ऐसे हैं कि बहुमत की उपेक्षा कर उन्हें प्रमोशन दिया जाता है। उनका अपना नागरिक कानून है, यहाँ तक कि विवाह-व्यवस्था में भी सरकार ने उच्चतम न्यायालय के निर्णय को संसद में बदल दिया।

इसके विपरीत पाकिस्तान की स्थिति क्या है? क्या वहाँ हिन्दू सुरक्षित हैं? क्या उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त हैं? भारत में लोकसभा हो या राज्य सभा, विधानसभा हो या कोई भी निचले सदन, केन्द्रीय मंत्रिमंडल हो या राज्यों के मंत्रिमंडल, या फिर सेवाओं और दूसरी नौकरियों का मामला हो, मुसलमान सब जगह हैं। दो विद्वान् राष्ट्रसेवी मुसलमान भारत के राष्ट्रपति तक रह चुके हैं। पाकिस्तान में हिन्दुओं को ऐसा कोई भी अवसर कभी नहीं मिल सकता।

दूसरे मुस्लिम देशों की बात करें। यूरोप और अमेरिका में हिन्दू एक सामान्य जीवन जी सकते हैं, लेकिन मुस्लिम देशों में उन्हें वैसे अवसर नहीं हैं। वे वहाँ ईद की तरह दीवाली या होली खुलकर नहीं मनाते। मुहर्रम के जुलूस की तरह उन्हें गुरु नानक जयंती या रथयात्रा उत्सव पर जुलूस निकालने की अनुमति शायद ही मिले। वे कीर्तन करते हुए सड़कों पर कभी नहीं निकलते। कहा जाता है कि रमजान के दिनों में उनका भी बाहर खाना निषिद्ध हो जाता है। जब कभी उन देशों की ओर से नौकरियों के विज्ञापन भारत के अखबारों में दिए जाते हैं तो उनमें प्रायः मुस्लिम प्रत्याशियों को वरीयता दी जाती है। कुल मिलाकर बात यह है कि किसी भी मुस्लिम देश में हिन्दू के लिए अपना सामान्य जीवन-यापन करना उतना सहज नहीं है।

इसके विपरीत भारत में न केवल मुसलमान आराम से रह रहे हैं बल्कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके नेता कई ऐसे भी काम कर रहे हैं जिन पर किसी भी न्यायप्रिय सरकार को सख्त एतराज होना चाहिए। यह केवल भारत में ही सम्भव है कि एक विशाल रैली में मुस्लिम नेता अपनी मांगों के न माने जाने पर टांगें तोड़ देने और आग लगा देने की धमकी दे और कोई सरकारी कार्रवाई न हो। यह केवल भारत में ही सम्भव है कि एक इमाम ईद के दिन से जामा मस्जिद के दरवाजे बंद कर लोगों की धार्मिक भावनाओं को योजना पूर्वक भड़काना शुरू कर दे और साथ ही यह धमकी देकर खुलेआम घूमता रहे कि अगर हमारी मांगें न मानी गयीं तो दरवाजा नहीं खुलेगा और बलवा हो जाएगा।

दबाव व धमकियां

प्रश्न उठता है कि धर्मनिरपेक्ष संविधान के अनुसार चलने की शपथ उठाने वाली सरकार क्यों ऐसे काम करती है जिनकी आड़ में साम्प्रदायिक मुस्लिम नेता अपने दंगाई काम कर जाते हैं ? धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म से विमुखता नहीं है। जैसा साम्यवादी देशों में है। हमारे जैसे धर्मबहुल और धर्मपरायण देश में इसकी सही राजनैतिक व्याख्या यही है कि सभी धर्मों को समान अवसर दिए जाएं। लेकिन वास्तविकता क्या है ? मुसलमानों के सामाजिक कानून उनके अपने हैं, बाकी देश के अलग हैं। विवाहोत्तर अधिकार मुस्लिम महिलाओं के अलग हैं, बाकी महिलाओं के अलग हैं। बहुसंख्यकों के लिए शैक्षिक अवसर अलग हैं, अल्पसंख्यकों के लिए अलग हैं। सरकार दबाव और धमकियों के आगे झुककर उन मस्जिदों तक को नमाज के लिए खोल देती है जो पुरातात्विक महत्त्व की हैं। इस तरह के कितने ही और काम गिनवाए जा सकते हैं।

इस सारी पृष्ठभूमि में एक अहम सवाल यह उठता है कि आखिर ऐसा क्यों है ? क्या चालीस वर्षों की आजादी का परिणाम यह है कि साम्प्रदायिकता के मसले पर आज हम फिर वहीं पहुंच गए हैं जहां 1947 में थे ? क्या फिर से धर्म के नाम पर देश के विभाजन की मांग उठेगी ? क्या अब देश इस मांग को सहन कर पाएगा ? क्या फिर से देश साम्प्रदायिक दंगों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महत्व के कगार पर है ? इस मसले पर विचार के लिए हमें थोड़ा गहरे जाना होगा। हमें हिन्दुत्व और इस्लाम का एक तुलनात्मक अध्ययन करना होगा ताकि निष्कर्ष तलाशा जा सके।

दंगे किनके बीच होते हैं ?

साम्प्रदायिक दंगों की शर्म ढोते हुए भी अगर कोई दावा करना चाहते हैं कि यह भारत नामक चमन विभिन्न धर्म पुष्पों का संगम है तो हमें इस दिवास्वप्न पर कुछ नहीं कहना। यथार्थ बस इतना भर है कि इस देश में विश्व के प्रायः सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। हिन्दुत्व को हम वैसा धर्म नहीं मानते क्योंकि साम्प्रदायिक मानदण्डों पर वह एक धर्म कतई साबित नहीं होता। पर विश्लेषण की सुविधा के लिए हम इस रूढ़ि को मान लें कि हिन्दुत्व एक धर्म है तो इस देश में हिन्दू रहते हैं, ईसाई रहते हैं, मुसलमान रहते हैं, पारसी रहते हैं। कुछ ऐसे समुदाय भी हैं, जिनका उद्गम-केन्द्र हिन्दुत्व रहा। इनमें हिन्दुत्व की असहमत धारा वाले और अब अपने आपको अलग धर्म मानने के लिए उतावले आम्बेडकर के अनुयायी बौद्ध रहते हैं, जैन रहते हैं, सिख रहते हैं। सवाल यह है कि इनमें से दंगे किनके मध्य होते हैं ?

हिन्दू इस देश का बहुसंख्यक है और यहाँ की सारी दर्शन परम्परा और जीवन दृष्टि हिन्दुओं के विभिन्न घटकों, जिनमें जैन, बौद्ध आदि भी शामिल हैं, ने विकसित की है। यहाँ की संस्कृति को वह अपनी संस्कृति मानता है, इसलिए सभी धर्मों के साम्प्रदायिक रिश्तों का आकलन हिन्दू को केन्द्र में रखकर ही करना होगा। हिन्दुओं और जैनों में दंगा आज तक नहीं हुआ। उनमें आपसी वैमनस्य नहीं। हिन्दुओं और बौद्धों में तमाम बौद्धिक असहमति के बावजूद कभी दंगा नहीं हुआ। ब्राह्मणों, जैनों और बौद्धों के बीच भारत के इतिहास के किसी कालखण्ड में न कभी धार्मिक युद्ध हुए और न मन्दिरों का विध्वंस किया गया। वैचारिक विभिन्नता दूसरी बात है। वह तो हिन्दुओं के विभिन्न खंडों में भी पाई जाती है। इस विभिन्नता का कारण बौद्धिकता है, धार्मिक अंधानुसरण नहीं।

हिन्दू और पारसी दो विभिन्न धाराओं के हैं। इसके बावजूद इनके बीच

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी दंगे नहीं हुए। ईसाइयों ने बहुत बड़ी तादाद में भारत में धर्मांतरण किया। ईसाई मिशनरी खुलेआम बाहरी धन का उपयोग इस धर्मनिरपेक्ष देश में आज भी कर रहे हैं। इसीलिए भारत में जब पोप का आगमन हुआ तो कुछ लोगों ने रोष व्यक्त किया। लोग अक्सर ईसाइयत के खिलाफ बोलते सुने जा सकते हैं, परन्तु इस देश के ज्ञात इतिहास में कभी कोई उल्लेखनीय हिन्दू-ईसाई दंगा नहीं हुआ। उग्रवादी और अलगाववादी सिख नौजवानों ने पंथ और कौम की रक्षा का नारा लगाकर पंजाब में अस्थिरता भले बना दी हो, परन्तु हिन्दुओं और सिखों के बीच कभी साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ। नवम्बर 1984 में दिल्ली और कुछ शहरों में सिखों की हत्याएं करने वालों की हर हिन्दू संगठन ने जी भर भर्त्सना की। इस समय जो हो रहा है, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिक है, साम्प्रदायिक नहीं।

निष्कर्ष यह निकलता है कि भारत में साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, खूब होते हैं, लेकिन वे केवल हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच ही होते हैं। सवाल उठता है कि इन दोनों के बीच ऐसा क्या है कि बार-बार दंगे हो जाते हैं? पहले हिन्दुत्व की परीक्षा कर लें। देश में सोचने वालों का एक वर्ग यह मानकर चलता है कि हिन्दुत्व एक नितांत साम्प्रदायिक दृष्टिकोण है और हिन्दू मूलतः एक साम्प्रदायिक प्राणी है। हम इस प्रतिबद्ध धारणा से सहमत नहीं हैं। इसके कुछ कारण हैं। पहला कारण यह है कि हिन्दुत्व के पास ऐसा कोई समान आधार नहीं है जिसके सहारे वह भारत और विश्व के तमाम हिन्दुओं को इकट्ठा कर ले। अगर ऐसा कोई आधार बता दिया जाये या भविष्य में पैदा हो जाये तो भारत और विश्व के तमाम हिन्दुओं को उसके आस-पास इकट्ठा होकर साम्प्रदायिक बनाने में कोई देर नहीं लगेगी। परन्तु आज तक ऐसा आधार बना नहीं है। इसके विपरीत हिन्दू धर्म में अत्यन्त उदारता है। इसीलिए सदियों की त्रासदी के बावजूद वह सबल है।

हिन्दुत्व : विचार व कर्म की स्वतन्त्रता

दूसरा कारण यह है कि हिन्दू और हिन्दुत्व की एक अविच्छिन्न परम्परा और पहचान इस देश में वैदिक काल से रही है। यदि आज भी हिन्दू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विशिष्ट (यद्यपि अपरिभाषित) समुदाय के रूप में जाना-पहचाना जाता है तो वह इसलिए कि विचार-स्वातंत्र्य और कर्म-स्वातंत्र्य के बिन्दुओं के आस-पास वह विकास करता रहा है। वह रूढ़िग्रस्त रहा है, पर प्रगति भी करता रहा है।

इस थीसिस की प्रगति तीन दिशाओं में अपने आप हो जाती है। एक दिशा यह है कि सहस्राब्दियों से हिन्दुत्व का आधार उसका विचार-स्वातंत्र्य और कर्म-स्वातंत्र्य रहा है। इसलिए उसमें साम्प्रदायिक चेतना का निर्माण करने का कोई आधार बनता ही नहीं। करोड़ों हिन्दुओं ने मुसलमानों की तरह साम्प्रदायिक धरातल बनाया ही नहीं।

दूसरी दिशा अधिक महत्त्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति हिन्दू है यह हम इसलिए नहीं मानते कि वह विचार-स्वातंत्र्य या कर्म-स्वातंत्र्य में निष्ठा रखता है बल्कि वह हिन्दू परिवार में पैदा हुआ है। परस्पर विरोधी दिखने वाली इस स्थिति मे वास्तव में कोई आंतरिक विरोध नहीं। कारण स्पष्ट है। कोई व्यक्ति हिन्दू है या मुसलमान या ईसाई, इसका फैसला करने की समझ जब तक उसमें पैदा होती है तब तक समाज और संविधान में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई के रूप में उसकी पहचान प्रतिष्ठित हो चुकी होती है। उसके पारिवारिक और सामाजिक संस्कार उसे वैसी ही पहचान अंगीकार करवा देते हैं। पर यहाँ से एक खास यात्रा आगे शुरू होती है। कोई मुसलमान या ईसाई अपने अन्दर वयस्क समझदारी पैदा होने के बाद अपने इस्लाम या ईसाइयत को नकार नहीं सकता। नकारने पर वह मुसलमान या ईसाई माना ही नहीं जाएगा। वैसे ईसाई धर्म में अब विराट् परिवर्तन हो रहे हैं। चर्च जाने की परम्परा विवशता नहीं है। हिन्दू जन्म से ही उदार है। अनेक हिन्दू ऐसे हैं जो पूजा-पाठ नहीं करते, मंदिर नहीं जाते, किन्तु वे हिन्दू हैं और अपनी इसी संज्ञा से पहचाने जाते हैं। जिस पहलू को वह नकार रहा होता है उसे जल्दी ही मालूम पड़ जाता है कि खुद हिन्दुत्व भी उस पहलू को नकार रहा है। आप किस तरह के हिन्दू बने रहना चाहते हैं, यह छूट आप को हिन्दुत्व पूरी तरह देता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में अत्यन्त गहरे मतभेद के कारण सन् 1947 में देश का विभाजन हो गया। दंगों में परिलक्षित हो रही साम्प्रदायिकता अब फिर से उसी स्वातंत्र्य को चुनौती देकर देश को चालीस साल पीछे धकेलने पर आमादा है।

इस्लाम की मानसिकता

अगर हिन्दुत्व को अपनी निहित विशेषताएं उसे साम्प्रदायिकता से अपरिचित बनाती हैं तो इस्लाम की अपनी निहित विशेषताएं उसे आपादमस्तक साम्प्रदायिक बनाती हैं। एक धर्म के रूप में इस्लाम एक साम्प्रदायिक अवधारणा है। इस्लाम में कई ऐसी बातें हैं जो उसके साम्प्रदायिक न रहने पर बेमानी हो जाती हैं। एक पैगम्बर और एक धर्म-ग्रंथ वाली बात हम उतना महत्त्व नहीं देते। जैन और बौद्ध धर्मों में व्यक्ति पूजा है पर इन दोनों को साम्प्रदायिक कह पाना कठिन है। धर्मग्रंथ वाली बात सिखों में भी है तथापि पिछले पांच-छह वर्षों के उग्रवाद को छोड़ कर इस धर्म ने कभी साम्प्रदायिकता को कोई समर्थन नहीं दिया। हिन्दुओं और सिखों के पर्व त्योहारों तथा देवी-देवताओं में अंतर नहीं है। इसके विपरीत इस्लाम धर्म को लीजिए। इस्लाम में कम-से-कम तीन बातें ऐसी हैं जो इस्लाम का सांम्प्रदायिक बनाती हैं। इस्लाम का मूल मंत्र है।

'जो इस्लाम को नहीं मानते वे काफिर हैं, इसलिए उन्हें इस धरती पर रहने का कोई हक नहीं है। यह एक ऐसी असहनशील अवधारणा है जिसके लिए भारत और भारत में पनपे धार्मिक, दार्शनिक सम्प्रदायों में कोई स्थान नहीं है। बौद्ध धर्म का सारा दर्शन और आचार शास्त्र 'मध्यमार्ग' पर टिका है जिसमें अतिवाद के लिए कोई स्थान नहीं जैन। धर्म और दर्शन अपने सिद्धान्त और स्वभाव से अनेकान्तवादी हैं जिसमें सत्य को कई रूपों में देखने का आग्रह है। सिखों का धर्मग्रंथ विचित्र मत-मतान्तरों को मानने वाले सन्तों और महापुरुषों की वाणियों का संग्रह है जो सिखों को सार्वधार्मिकता का सारतत्त्व प्रदान कर देता है। ईसाइयत ने कम-से-कम भारत में खुद को अकेले सत्य के रूप में प्रचारित या प्रतिष्ठित करने का साहस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं किया। इसलिए इस्लाम की साम्प्रदायिक असहनशीलता अलग ही नजर आती है।

इस्लाम के इस पहले मूल मंत्र से दूसरा मूल मंत्र जुड़ा है। कितना विरोधाभास है। कुरान में कहा गया है कि हिंसा पाप है परन्तु वास्तविकता कुछ और है। इस्लाम का प्रचार करना धर्म की सेवा है। इतिहास इस बात की गवाही देता है कि इस्लाम न मानने वालों को जबरन मुसलमान बनाना और दूसरों के धर्मस्थानों को तोड़ कर वहां मस्जिद बनाना इस्लामी शासकों का पहला और प्रमुख कर्तव्य रहा है। भारत में हिन्दुओं, जैनों, बौद्धों, सिखों और पारसियों ने कभी एक-दूसरे का धर्मांतरण नहीं किया और न ही एक दूसरे के धर्मस्थानों को तोड़ कर अपना धर्मस्थल बनाया। यहां तक कि झूठ, प्रलोभन आदि के सहारे धर्मांतरण कराने में विशेष रुचि लेने वाले ईसाइयों ने कभी तलवार या शासन के बल पर किसी को यहां ईसाई नहीं बनाया और न ही धर्म स्थानों को तोड़ कर वहां चर्च बनाने में नायकत्व की अनुभूति पाली। लेकिन इतिहास गवाह है कि इस्लाम ने ऐसा किया है।

इस्लाम की साम्प्रदायिकता को बढ़ाने वाला तीसरा कारण उसकी धार्मिक सामूहिकता और पंक्तिबद्धता है। बौद्धों ने संघ की कल्पना की, पर वे भी नमाज-ए-हक जैसी सामूहिक धर्मकृत्य की परिपाटी नहीं चला पाए।

आपसी संवाद का अभाव

इस संदर्भ में शोध करने पर कई सत्य सामने आते हैं। सबसे पहले इस सत्य का मर्म समझ में आ जाता है कि भारत में हिन्दुओं, बौद्धों, जैनों, सिखों, पारसियों या ईसाईयों के बीच साम्प्रदायिक दंगें क्यों नहीं होते और क्यों हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच ही दंगे होते हैं। जहां इस्लाम इतर बाकी धर्म हिन्दुत्व के आस-पास कहीं पहुंच जाते हैं और एक-दूसरे के साथ संवाद की स्थिति बनाये रखने में सक्षम रहते हैं, वहीं हिन्दुत्व और इस्लाम दो विपरीत ध्रुव हैं। आक्रामकता से उपजी इस्लामी साम्प्रदायिकता का विचार स्वातंत्र्य और कर्म-स्वातंत्र्य में निष्ठा रखने वाले हिन्दुत्व से कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संवाद ही स्थापित नहीं हो पाता, क्योंकि हिन्दुत्व को इस्लाम हमेशा तलवार लिये खड़ा नजर आता है।

साम्प्रदायिक न होने पर भी हिन्दुत्व के नाम पर जातपरस्त होने का एक कलंक लगा है। यह सच है कि हिन्दुत्व स्वयं इस जातपरस्ती के खिलाफ एक ईमानदार जंग छेड़े है, पर हिन्दुओं में जब भी आपसी कलह, लड़ाई या विघटन हुआ है तो जात के नाम पर। इसलिए ऊपर की शोध का दूसरा सत्य यह सामने आता है कि मजहबपरस्त न होने पर भी शुद्ध रूप से जातपरस्त होने के कारण जाति संघर्ष का कलंक ढोने वाला हिन्दू अब पिछले कुछ बरसे से साम्प्रदायिक होने में कोई हर्ज नहीं देखता।

दो विचारधाराओं में संघर्ष

इस्लाम की साम्प्रदायिक मजहबपरस्ती के साथ जुड़े तीसरे सत्य का विश्लेषण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसी से मालूम पड़ सकता है कि आखिर क्यों हम अपने आपको चालीस वर्षों की आजादी के बावजूद फिर से 1947 में खड़ा पाते हैं। उसके बीज आजादी के लिये किए गये आन्दोलन और उसके परिणामस्वरूप आजादी के बाद बने भारतीय संविधान के चरित्र में है। इस सदी के शुरू से ही प्रभावशाली ढंग से लड़ी जा रही आजादी की लड़ाई के दौरान दो विचारधाराओं में संघर्ष शुरू हो गया है। एक हिन्दू धारा थी जो जातपरस्त होने पर भी अपने स्वभाव से असाम्प्रदायिक और विचारप्रधान थी। दूसरी इस्लामी धारा थी जो स्वभाव से साम्प्रदायिक और आक्रामक थी। हिन्दू धारा की अभिव्यक्ति कांग्रेस के रूप में और इस्लामी धारा की अभिव्यक्ति मुस्लिम लीग के रूप में हुई। हिन्दू विचारशीलता सत्याग्रह और उपवास के रूप में प्रकट हुई, जबकि मुस्लिम आक्रामकता मध्ययुगीन फिसादबाजी के रूप में अभिव्यक्त हुई। पाकिस्तान के अलग इस्लामी देश की स्थापना के रूप में मुस्लिम आक्रामकता की विजय हुई जबकि हिन्दू विचारधारा की अभिव्यक्ति स्वतन्त्र भारत के गणतन्त्रात्मक और धर्मनिरपेक्ष संविधान की मान्यता के रूप में हुई। हिन्दू धर्म और दर्शन बौद्ध, जैन और सिख मान्यताओं के अनुसार सत्य को अनेक रूपों में देखता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो लोकतंत्र का मूलमंत्र है। धार्मिक साम्प्रदायिकता से वह दूरी रखता है जो धर्मनिरपेक्षता का मूल मंत्र है।

जब पाकिस्तान बना तो हिन्दू विचारधारा के साथ सहज निकटता होने के कारण तमाम जैनों, बौद्धों और सिखों ने भारत को अपना स्वाभाविक घर समझा। लेकिन उस समय इस विचारधारा के साथ निकटता न समझने वाले मुसलमानों को क्या करना था, अपने आप में स्पष्ट है। कुछ कांग्रेसी नेताओं की मेहनत के परिणामस्वरूप करोड़ों मुसलमान यहाँ रह गये। दुःख तो यह है कि यहाँ रहकर भी उनमें से अधिकतर 'परदेश' की ओर ही देखते रहे, जैसे शायद कोई कयामत आयेगी और जन्नत के दरवाजे खुल जायेंगे।

लोकतंत्र से बात शुरू करें। इस्लाम और लोकतंत्र एक दूसरे के दोस्त बन ही नहीं सकते। लोकतंत्र व्यक्ति की स्वतंत्रता का पोषक है, व्यक्ति स्वातंत्र्य लोकतंत्र का आधार है। इस संदर्भ में इस्लाम की स्थिति क्या है? इस्लाम में व्यक्ति का कोई मौलिक अधिकार नहीं है। हर मुसलमान अपने मजहब से जुड़ा है, इसलिए उसका सोच सामूहिक है। वह मुल्लाओं और मौलवियों के 'फतवे' से बंधा है। वह व्यक्तिवादी हो ही नहीं सकता। लोकतंत्र में असहमति को सम्मान का दर्जा मिला है। इस्लाम में असहमति के लिए कोई स्थान नहीं। इसलिए भारत का लोकतंत्र इस्लामी सोच में परिवर्तन का जरिया बन ही नहीं सकता। वोट पड़ने के हर मौके पर मुस्लिम नेता मुसलमानों को व्यक्ति के स्तर पर सोच-विचार कर वोट डालने ही नहीं देते। 'इस्लाम खतरे में है, बचे रहना है तो फलां पार्टी को वोट दो' की घुट्टी पिला कर ये नेता मुसलमानों को मजहब के दायरे में गोलबन्द किये रहते हैं। इसलिए चालीस वर्षों के लोकतंत्री अभ्यास के बावजूद भारत का मुसलमान न केवल वहीं खड़ा है, जहाँ 1947 में था—बल्कि थोड़ा और भी ज्यादा मजहबपरस्त बना दिया गया है। यह कटु मुस्लिम सत्य देश में साम्प्रदायिकता खत्म करने में भला कैसे सहायता कर सकता था? हम चालीस साल पिछड़ गये हैं।

अब धर्मनिरपेक्षता पर आयें। अगर यहस वान किया जाये कि क्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान धर्मनिरपेक्ष हो सकता है, तो इसका आज का उत्तर है—नहीं। इस्लाम धर्म से चिपकने की शिक्षा देता है। धर्म से हटने या उसके प्रति वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाने की नहीं, जो धर्मनिरपेक्षता की पहली पहचान है। इस्लाम दूसरे धर्मों के अनुयायियों को 'काफिर' मानता है। उन्हें सम्मान देने की बात नहीं सिखाता जो धर्मनिरपेक्षता की दूसरी पहचान है। इस्लाम अपनी राज्यशक्ति की ताकत पर धर्मांतरण की घुट्टी पिलाता है। धर्म को न मानने वाले राज्य के प्रति उसकी निष्ठा नहीं हो सकती। यह धर्मनिरपेक्षता की तीसरी कसौटी है। एक हिन्दू बुद्धिजीवी धार्मिकता का विरोधी हो सकता है और कई हैं। मुस्लिम बुद्धिजीवी के लिए यह कठिन है।

दो गलतियाँ इस देश के धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्रवादी संविधान में निष्ठा रखने वालों ने की हैं। हिन्दुत्व की धर्म के नाम पर आलोचना करने वाले उदार और प्रगतिशील हिन्दू बुद्धिजीवी भी कभी मुस्लिम मजहबपरस्ती और उससे पैदा होने वाली साम्प्रदायिकता का विरोध नहीं कर पाये। दूसरी गलती यह हुई कि यहाँ के राजनेता मुस्लिम बहुलता को इस देश की धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक मानते रहे। मसलन मेरठ, सम्भल, अलीगढ़, कश्मीर इत्यादि क्षेत्रों को धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक मानते रहे। यह उनकी भूल थी। गलत तो यह था ही। इस थोथेपन के सहारे हम धार्मिक जोश से हर समय भरे रहने वाले मुसलमानों को धर्मनिरपेक्षता के प्रति कायल कर ही नहीं सकते। इस मामले में मुस्लिम बुद्धिजीवियों को आगे आकर अपना कर्तव्य निबाहना था। ऐसा हुआ कम।

लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता—इस देश और यहाँ के संविधान के दो स्वाभाविक मूल मंत्रों से इस्लाम को सीधा खतरा देखने वाले मुस्लिम नेता अपने सम्प्रदाय के लोगों को जिस दुनिया के सब्जबाग दिखाते रहे वह इस देश से ताल्लुक ही नहीं रखती थी। इसलिए इस देश के मुसलमानों को 1947 के बाद अभी तक इस देश से जुड़ने का भाव नहीं सिखाया गया जिसकी सीधी परिणति पाकिस्तान और अरब देशों की ओर बढ़ती उन्मुखता में नजर आती है। इसके कई आयाम हैं। जब पाकिस्तान और भारत के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बीच क्रिकेट मैच होते हैं और पाकिस्तान जीतता है तो एक तबका है जो उसे इस्लाम की जीत मानता है। पाकिस्तान यदि परमाणु बम बनाता है तो वह उसे इस्लामी बम मानता है। एक और आश्चर्यजनक उदाहरण है जब मक्का की मस्जिद पर कुछ गुण्डों ने कब्जा कर लिया था तो भारत में हैदराबाद का मुसलमान शहर के हिन्दुओं पर हमला करने और उनकी सम्पत्ति को आग लगाने पर आमादा हो उठा था, जबकि मक्का की मस्जिद के मामले में हिन्दू कहीं नहीं था। इसका एक आयाम यह भी है कि हर मुस्लिम इलाके में बसा मुसलमान अपने यहाँ की मस्जिद को अपना सबसे बड़ा सुरक्षा-स्थल मानकर चलता है। यही कारण है कि जब कहीं दंगे होते हैं तो इलाके का मुसलमान वहां की मस्जिद में इमाम या काजी की तकरीर सुनकर आगे कदम बढ़ाता है।

इस बार दिल्ली के चांदनी चौक के कटरों में दुबारा हुए दंगों के पीछे यही कारण था। दंगों के दौरान मस्जिदों से बाकायदा लाउडस्पीकरों के माध्यम से हिंसा उकसाने वाले भाषण प्रसारित किये गये। मेरठ में दंगे होने का यही कारण है। हिन्दुओं के मंदिर कभी वैसे नहीं बन पाये क्योंकि मंदिरों के प्रति हिन्दुओं के मन में वैसा राजनैतिक या सामुदायिक लगाव ही नहीं। कि उसके माध्यम से धार्मिक भाषण या धार्मिक उकसाहट को प्रसारित किया जाये। किसी मंदिर से आज तक उस प्रकार विनाशक सामग्री नहीं मिली मस्जिदों से दंगों के दौरान अक्सर मिल जाती है। ये सब असुरक्षा बोध हैं जो मुसलमानों के धार्मिक आकाओं ने प्रयासपूर्वक अपने अनुयायियों के मन में पैदा कर रखे हैं।

भारत का संविधान हर व्यक्ति को अपने हिसाब से उपासना करने का मौलिक अधिकार देता है। भारत में रह कर इस्लाम मानने वाला हर व्यक्ति इस मौलिक अधिकार का अपने ढंग से उपयोग करता है। वह खुद आजादी चाहता है। लेकिन उसका धर्म वैसी आजादी दूसरों को नहीं देता।

एक बात और है। पाकिस्तान से आने वाले कुछ लोग जासूसी करने या फसाद भड़काने के इरादे से हमारे देश में आते हैं। वे अक्सर मुस्लिम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इलाकों में जाते हैं। वहां जाते ही उनका आकस्मिक लोप हो जाता है। इस तथ्य के प्रति दूसरे लोग चिल्ला-चिल्ला कर सरकार का ध्यान बराबर खींचते रहे हैं पर उनकी बात को अनसुना कर दिया जाता है और उन्हें साम्प्रदायिक कह कर बद-नाम किया जाता है। आज सारा भारत इस समस्या से दो-चार हो रहा है। खुफिया एजेंसियां सरकार का ध्यान इस ओर अक्सर खींचती रहती हैं। पर जब तक यहां के मुसलमानों के मन से इस्लामी देशों की ओर देखने की प्रवृत्ति में अन्तर नहीं आता तब तक इस समस्या का कोई हल हो ही नहीं सकता। तब साम्प्रदायिकता कैसे खत्म हो? साम्प्रदायिक दंगे कैसे रुकें? सरकार अपनी समझ से कुछ करती रहती है। जब हिन्दू-मुसलमान लड़ पड़ते हैं तो कहती है कि दो सम्प्रदायों में झगड़ा हो गया। एक सम्प्रदाय के लोगों ने दूसरे सम्प्रदाय के लोगों पर हमला कर दिया। उनकी सम्पत्ति को आग लगा दी। एक धर्म स्थान से कुछ भड़कीले भाषण प्रसारित किए गए। धर्मस्थान से विस्फोटक और उत्तेजक सामग्री मिली। हो सकता है कि लाग-लपेट का यह तरीका ठीक हो। हो सकता है कि इससे फिसाद का विस्तार न हो। पर इससे समस्या खत्म नहीं हो सकती। अब तक हुई भी नहीं है। अपराधी को सबके सामने लाना, उसे दण्डित करना, जब तक यह काम निर्मम कठोरता से नहीं होगा तब तक फिसादियों को शह मिलती रहेगी।

यह प्रशासनिक पहलू है। दूसरा पहलू वैचारिक है जो अधिक महत्त्वपूर्ण है। साम्प्रदायिकता यदि खत्म करनी है और साम्प्रदायिक दंगों को रोकना है तो भारत के मुसलमानों को इस्लाम की मजहबपरस्ती पर पुनर्विचार करना होगा और उसकी पंक्तिबद्धता पर आक्रमण करना होगा उसके भारतीय अनुयायियों में भारतीय संविधान के मूल्यों और मूलभूत सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा जगानी होगी। यह काम मुस्लिम बुद्धिजीवियों के अलावा और कोई नहीं कर सकता। काम बेशक कठिन है पर इसके सिवाय और कोई रास्ता भी नहीं। भारत में रह कर भी इस्लाम यदि खुद को लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के साथ समरस नहीं करता तो यहां रह कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भीं उसके मन में देश के प्रति प्रेम के भाव उभर नहीं सकते। ऐसी स्थिति में टकराव बना रहेगा। इस टकराव के अतत: प्रतिफल क्या होंगे, यह सत्ता की राजनीति पर निर्भर हैं। मुसलमानों को 'फतवा' की भाषा भारत में भुलानी पड़ेगी और व्यापक लोकतंत्र को समझना होगा। इस लोकतंत्र में उनकी भी पूरी भागीदारी है! भारत उनकी जन्मभूमि है और जन्मभूमि से विद्रोह करने वाला गद्दार कहलाता है, यह कुरान भी कहता है और हिन्दू ग्रन्थ भी कहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एक संवाद की स्थिति बने। चालीस वर्षों से लोकतंत्र की आड़ में अल्पसंख्यकवाद को शह मिल रही है और धर्मनिरपेक्षता की गलत और वोटपरस्त राजनैतिक व्याख्याओं की आड़ में धर्मांधता को प्रश्रय मिला है। इससे हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। 1947 में साम्प्रदायिक दंगे होते थे। आज भी हो रहे हैं। क्या इसे आगे बढ़ना मानेंगे? यह तो पीछे लौटने से भी बदतर है। जब तक भारत में लोकतंत्र मजबूत नहीं होगा और धर्मनिरपेक्षता को अपने जहन में नही उतारा जाएगा, तब तक हम सम्प्रदायिकता के मामले में 1947 से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा पायेंगे। बुद्धिजीवी कहां हैं? क्यों नहीं समाज को उनका नेतृत्व मिल रहा है? यह बात हमेशा हिन्दू बुद्धिजीवियों से कही जाती है, इस बार खासतौर से हम मुस्लिम बुद्धिजीवियों से यह पूछना चाहेंगे। ★

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय,

जनज्ञान का अप्रैल अंक पढ़ा। वास्तव में 'जनज्ञान एक ऐसी पत्रिका है जो हिन्दुओं में हिन्दुत्व की भावना जगाती है और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

भावना दिक्षित द्वारा लिखित शौर्यकथा 'धोला गूजरी की वीरता' और डा. योगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'साम्प्रदासिकता की राजनीति लेख पसन्द आये। के. कुमार, फर्रुखाबाद

जनज्ञान की भूमिका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बाँटिये

1.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
2.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षुः	60 पैसे
3.	हिन्दुओं को चेतावनी —वेदभिक्षुः	60 पैसे
4.	मोपला [उपन्यास]—वीर सावरकर	5 रु.
5.	हम सब हिन्दू हैं – वीर सावरकर	60 पैसे
6.	पोस्टर—दो प्रकार के	1.20 पैसे
7.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	60 पैसे
8.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां –जहीर नियाजी	60 पैसे
9.	हिन्दू जागो—देश बचाओ !	60 पैसे
10.	इस्लाम—एक परिचय	60 पैसे
11.	Bible in the Balance	1 रु.
12.	A Challenge to the Christian Faith	30 पैसे
13.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षुः	60 पैसे
14.	पादरियों को चुनौती	60 पैसे
15.	बाइबिल को चुनौती—ओमप्रकाश त्यागी	60 पैसे
16.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	60 पैसे
17.	·· और पादरी भाग गया	60 पैसे
18.	Christianity Unmasked	1 रु.
19.	The Clarion Call	60 पैसे
20.	जनज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	6 रु.
21.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पैसे
22.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	60 पैसे
24.	हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा	60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25% छूट;
प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां॥
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर ह्ति पूरन होवहिं काम॥
चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी होय।
एहि मार्ग संसार को नानक थिर नहिं कोय॥
जो उपजियो सो बिनस है मरो काल के गाल।
नानक पर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार।
झूठ बखान कहा करे जहूने जियुं जान।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहिये बखान॥
बिरथा को कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगायो धन की॥
संग सखा सब तज गये कोउ न निबाहियो साथ।
कहु नानक एहुं विपत में टेक एक रघुनाथ॥

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है, ते सब नरक कुंड महिं परि है॥

—दशमेश गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—158, बालकेश्वर मार्ग, तीन बत्ती, बम्बई-400006

1. जावेरी बाजार 2. ग्रांट रोड 3. कोलाबा 4. दादरा टी. टी. 5. वरली नाका 6. सर्कल 7. ठाकुर द्वार 8. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट 9. घाटकोपर (पश्चिम) 10. लिंकिंग रोड, बांदरा 11. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम)।

★कारखाना-'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड, बम्बई-400007

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पांच कैसेट केवल सौ रुपये में

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हम उत्कृष्ट कोटि के भजनों के पांच नये कैसेट बनाने जा रहे हैं, जिनका मूल्य 30 रुपये प्रति कैसेट रहेगा। किन्तु ये कैसेट हम आपको लागत से भी कम मूल्य पर देना चाहते हैं। हम केवल उन्हीं प्रथम 500 ग्राहकों को 60 रुपये (50+10 डाक व्यय) की यह छूट दे सकेंगे, जो हमें सौ रुपये अग्रिम 25 जुलाई 1987 तक भेज देंगे। इस स्वर्णिम अवसर को न गंवायें तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में हमें अपना सहयोग दें। हम इन कसेटों को दो बार में आपको देंगे। प्रथम दो कैसेट जन्माष्टमी तथा तीन दीपावली तक आपको मिलेंगे। पांचों कैसेट एक-एक घण्टे के होंगे। विशेष—दस कैसेट के पैसे भेजने वालों को एक कैसेट फ्री भेंट किया जायेगा।

प्रस्तुत कर्त्ता —

संसार साहित्य मण्डल

141, मुलुण्ड कालोनी,

बम्बई—400082

दूरभाष नम्बर : 5617137

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी उपलब्धियाँ और आपका कर्तव्य

1. वेद-भाष्य का प्रकाशन : अब तक देश-विदेश में लगभग 60 हजार ट चारों वेदों का हिन्दी भाष्य प्रसारित।

2. वैदिक साहित्य का प्रकाशन : अब तक 500 से अधिक हिन्दी ंग्रेजी, मराठी भाषाओं में ग्रन्थों व पुस्तकों का प्रकाशन जिनमें वैदिक म्पत्ति, वेदांजलि, वेदज्योति, लाइट ऑफ ट्रुथ, कॉन्सैप्ट ऑफ गॉड जैसी पुस्तकें सम्मिलित हैं।

3. जनज्ञान (मासिक) द्वारा निर्भीकता से वैदिक तथा हिन्दू संस्कृति की रक्षा का सतत संघर्ष, जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने पंडिता राकेश रानी पर 41 मुकद्दमे चला रखे हैं।

4. देश को विदेशी षड्यंत्रों से बचाने के लिए करोड़ों की संख्या में छोटे-छोटे ट्रैक्टों का प्रकाशन व लागत से आधी कीमत पर वितरण।

5. राजधानी में यमुना नदी के किनारे विशाल वेद मंदिर का निर्माण।

6. वेद मंदिर में निःशुल्क औषधालय का सचालन।

7. जनज्ञान मुद्रणालय वैदिक व हिन्दू रक्षक साहित्य प्रकाशन के लिए जन सहयोग से स्थापित "जनज्ञान मुद्रणालय" का संचालन।

8. संस्थान द्वारा इस्लाम और ईसाइयत तथा देशद्रोहियों के षडयंत्रों से हिन्दू समाज को सचेत करने के लिए प्रसारित तीस के लगभग ट्रैक्ट हैं, जो कराड़ों की संख्या मे छप चुके है। आप भी अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटिये (ट्रेक्टों की सूची प्रतिमास "जनज्ञान" के मासिक मे प्रकाशित होती हैं।) अपनी ओर से जनज्ञान (मासिक) (वार्षिक शुल्क 50) में अधिक से अधिक सदस्य बनाइये।

9. 501 रुपये भेजकर जनज्ञान (मासिक) के आजीवन सदस्य स्वयं बने तथा मित्रों को बनायें।

इन सब कार्यों की सफलता के लिए हमें आपका सहयोग चाहिए। आपका जितना सहयोग हमें प्राप्त होगा, हम उतना ही अधिक कार्य कर सकेंगे।

मुद्रक, प्रकाशक व सपादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-३६ से मुद्रित एवं प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. अलीपुर दिल्ली-३६	श्रावण संवत् २०४४ जुलाई १९८७	D-C-201 N.R. 10719/65

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य : 500 रु.
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 "
3.	वेद-ज्योति	15 "
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मन्त्रों की व्याख्या)	
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	30 "
6.	अथर्ववेद परिचय	20 "
7.	संस्कार विधि (सजिल्द)	6 "
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	20 "
9.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा. रामनाथ वेदालंकार)	30 "
10.	सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	25 "
	" " (आर्ट पेपर पर)	151 "
11.	ज्योति-स्तम्भ	201 "
12.	वैदिक सम्पत्ति	10 "
13.	योगासन	101 "
14.	योग और ब्रह्मचर्य	2 "
15.	Concept of God	3 "
16.	श्रीमद् दयानन्द प्रकाश	50 "
17.	LIGHT OF TRUTH	25 "
18.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	50 "
19.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	6 "
20.	संक्षिप्त महाभारत	50 "
21.	संक्षिप्त रामायण	50 "
22.	गायत्री मन्त्र (चार्ट) हिन्दी व्याख्या सहित—दोनों ओर पत्ती लगा। कम से कम दस प्रतियां मंगवायें।	10 "
		1.5"

आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें। सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

कार्यालय :
2286, आर्यसमाज रोड
करोलबाग, नई दिल्ली-110005

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi